जोर से उस सुफेद शक्ल के ऊपर फेंका जो अब लोप हो रही थी। बहुत सा धूआं सब तरफ फैल गया जिसने उठ कर उस सुफेद शक्ल को चारो तरफ से ढक लिया। लेकिन अगर शेरसिंह का यह खयाल रहा हो कि धूआं उस सुफेद शक्ल को भी बेहोश बना कर उनके कब्जे में दे देगा तो उनका यह खयाल गलत निकला। थोड़ी देर बाद वह धूआं थोड़ा थोड़ा करके खिड़की की राह कमरे के बाहर निकल गया और कमरे की सब चीजें दिखाई पड़ने लगीं मगर वहां वह सुफेद शक्ल कहीं नजर न पड़ी, हां एक पुर्जा उसी जगह जमीन पर अवश्य पड़ा हुआ नजर आया जिस पर कुछ लिखा हुआ था। शेरसिंह ने उसको उठा लिया और पढ़ा, यह लिखा हुआ था, "दुश्मन को कभी कमजोर या छोटा न समझना चाहिए। अगर तुमने उस नौजवान को कब्जे में कर ही लिया था तो तलवार उसके पास क्यों छोड़ दी !"

शेरसिंह ने पुर्जा पढ़ते ही कहा, "अफसोस, बेशक बहुत बड़ी गलती मैंने की और उसकी सजा भी ठीक पाई, मगर अब क्या करना चाहिए ?"

परेशानी की मुद्रा से शेरसिंह ने अपने चारो तरफ देखा और अब पहिले पहिल उनका ध्यान इस बात पर गया कि उस कमरे में वे अकेले ही हैं। न तो बूआजी वहां नजर आ रही थीं और न मैना का कहीं पता था। आश्चर्य के साथ उनके मुंह से निकल गया, "हैं, बूआजी और मैना कहां चली गईं ! मेरे गोले के असर से उन दोनों को भी बेहोश हो कर इसी जगह पड़े रहना चाहिए था। तब क्या मैं यह समझूं कि वही सुफेद शक्ल उन दोनों को भी उठा ले गई।"

जवाब में एक हलकी हंसी उस कमरे में गूंज उठी, तब यह आवाज आई— "बेशक ऐसा ही है।"

शेरसिंह गौर और ताज्जुब से अपने चारो तरफ देखने लगे, मगर वहां था ही कौन जो उनकी नजर में आता। वह बड़ा कमरा एक दम खाली था और बाहर भी जहां तक निगाह जाती थी कहीं किसी आदमी की सूरत नजर न आती थी।

शेरसिंह उठ खड़े हुए। एक बार उन्होंने गौर के साथ बाहर भीतर सब तरफ देखा, तब मन ही मन बोले, "जरूर मेरा कोई बड़ा भारी दुश्मन पैदा हो गया है जो कदम कदम पर मेरे काम में बाधा डाल रहा है। इससे निपटना जरूरी है !"

॥ चौथा भाग समाप्त ॥

१५ वां संस्करण] १९८६ ई० [२२०० प्रति

लहरी प्रेस, वाराणसी।

॥ श्रीः ॥

रोहतासमठ

पाँचवाँ भाग

पहिला बयान

बहुत गौर से अपने चारो तरफ देखते हुए शेरसिंह उस कमरे के बाहर निकले और तब मामूली रास्ते से चल कर उस मकान के भी बाहर हो नीचे वाले उस छोटे बाग में जा पहुँचे जिसके अन्दर यह मकान बना हुआ था। हम ऊपर यह भी लिख आए हैं कि इस बाग को चारो तरफ से और भी कितनी ही इमारतों ने घेरा हुआ था।

मगर शेरसिंह इस जगह भी नहीं रुके और कई गुप्त रास्तों से होते हुए वहां पहुँचे जहां संगमर्मर वाली वह बारहदरी थी जिसे सैकड़ों फुहारों ने घेरा हुआ था अथवा जहां से अभी कुछ ही देर पहिले के उस नौजवान को गिरफ्तार कर ले गए थे जो बाद में उन्हें इस प्रकार जक दे उनके कब्जे के बाहर हो गया था। इस समय इस बाग के फुहारों में से एक भी चलता हुआ नजर न आता था और न उस बारहदरी में ही कोई विशेषता दिखाई पड़ती थी, पर उसके पास वाली उस नहर में पानी बहुतायत से बहता चला जा रहा था। कुछ देर तक वे उस बारहदरी की सीढ़ियों के पास खड़े न जाने क्या क्या सोचते रहे, इसके बाद घूम कर उस बारहदरी के पीछे की तरफ पहुँचे और एक जगह जा कर रुके।

हम पहिले लिख आए हैं कि इस बारहदरी की जगत बहुत ऊंची और सब तरह से साफ तथा बहुत चिकनी बनी हुई थी। इस समय जहां शेरसिंह खड़े थे वहां भी उनके सामने करीब एक पुरसे की ऊँचाई तक साफ चिकनी संगमर्मर की दीवार थी और उसके ऊपर सफेद पत्थर का मोटा बन्द देकर तब बारहदरी के खम्भे उठाए गए थे। बहुत गौर के साथ कुछ देखते हुए शेरसिंह ने एक जगह

पर अपना हाथ रक्खा और अंगूठे से जोर से दबाया। पत्थर का एक छोटा सा टुकड़ा भीतर को धंस गया और एक छेद दिखाई देने लगा जिसके अन्दर हाथ डाल कर शेरसिंह ने कुछ किया। एक बड़ा सा पत्थर सामने से हट कर बगल को घूम गया और शेरसिंह के सामने एक छोटी कोठरी नजर आने लगी जो उस बारहदरी के निचले हिस्से में बनी हुई थी। शेरसिंह इस कोठरी के अन्दर चले गए और तुरन्त ही वह पत्थर अपनी जगह पर आकर इस तौर से बैठ गया कि कोई दरार भी यह बताने के लिए न रह गई कि यहां पर कोई रास्ता था।

लगभग दो घड़ी के बाद हम शेरसिंह को एक बहुत ही ऊंची इमारत के पास खड़े पाते हैं जो किसी तरह पर भी सात या आठ मँजिल से कम न होगी और जिसके सिरे पर एक गोल गुम्बद है जो अपनी ऊचाई के कारण यहांसे बहुत ही छोटा दिखरहाहै। इमारतका बहुत बड़ा और सुन्दर फाटक शेरसिंह के सामने है और उसके ऊपर की तरफ लिखा हुआ है 'वायु-मडप'। फाटक के चारो तरफ बल्कि इस इमारत में भी जगह जगह नीचे से ऊपर तक पत्थर की तरह तरह की खूबसूरत पुतलियां बनी हुई हैं,मगर शेरसिंहका ध्यान उनकी तरफ नहींहै बल्कि वे इस मकानकाफाटक खोलनेकी कोशिश कर रहेहैं और इसके लिए अभी इन्होंने अपने हाथ वाली सोने की चाभी उस फाटकमें बने एक छेदमें डाल कोई कार्रवाई की है जिसका नतीजा देखने के लिए वे दो कदम पीछे हट कर खड़े हो गये हैं।

मगर शेरसिंह की तरकीब का कोई फल न निकला और वह फाटक अपनी जगह से टस से मस न हुआ। ताज्जुब के साथ उनके मुंह से निकला—"यह क्या बात है कि आज यह फाटक खुल नहीं रहा है! इसकी ऊँची छत पर से मैं पूरे तिलिस्म की कैफियत देख और अपने दुश्मनों को सहज ही में खोज सकता था।"

कुछ देर तक खड़े सोचने के बाद शेरसिंह ने वह चाभी जेब में रख ली और आगे बढ़ कर पुनः फाटक के पास पहुँचे। इस बार उन्होंने अपने गले का बुताम खोला और कपड़ों के अन्दर से सुनहरी जंजीर से बंधी और तावीज की तरह लटकती कोई चीज निकाली जो वास्तव में पन्ने का एक टुकड़ा था जो काट तराश कर बहुत कुछ एक ताली की शक्ल का कर दिया गया था। यह वही तिलिस्मी ताली थी जिसमें तिलिस्म के सब दर्वाजे खोलने की सामर्थ्य थी और जिसे बहुत तारीफ के साथ देवीरानी ने शेरसिंह को दिया था*। शेरसिंह ने आगे बढ़ कर वह ताली फाटक से छुला दी और फिर जरा पीछे हट गए।

* देखिये रोहतासमठ, तीसरा भाग, तीसरा बयान।

तावीज का छूना था कि एक अजीब तरह की आवाज उस मकानके अन्दर से आई और वह फाटक जोर से हिला। एक क्षण के लिए मालूम हुआ कि वह खुल जायगा, मगर नहीं ऐसा न हुआ और वह फाटक बन्द का बन्द ही रह गया, फिर दुबारा उसने जुम्बिश न खाई, और धीरे धीरे वह आवाज भी जो मकान के अन्दर से आने लगी थी बन्द हो गई।शेरसिंह के ताज्जुब का कोई हद न रह गया और उनके मुंह से आप से आप निकल गया,"क्या इस तावीज की भी ताकत जाती रही और यह फाटक किसी तरह नहीं खुल सकता?"

यकायक कहीं से आती हुई एक हलकी हंसीकी आवाज ने शेरसिंह का ध्यान आकर्षित किया और वे ताज्जुब से सब तरफ देखते हुए बोल उठे, "यह कौन हंसा?" पास ही कहीं से आवाज आई, "तुम्हारी तावीज में तो ताकत मौजूद है मगर असल में तुम्हारी ताकत ने जवाब दे दिया है! अब तुम इस तिलिस्म में कुछ भी नहीं कर सकते और तुम्हारे लिए यही मुनासिब है कि चुपचाप इसके बाहर हो जाओ नहीं तो किसी न किसी मुसीबत में पड़ जाओगे,तुम्हारी तावीज अब सिर्फ उन्हीं रास्तों को खोल सकेगी जो तुम्हें तिलिस्म के बाहर पहुँचावेंगे।"

शेरसिंह ने ताज्जुब के साथ इस बात को सुना और तुरन्त ही पूछा, "मगर ऐसा क्यों?" पर कहीं से कोई जवाब न आया, थोड़ी देर बाद उन्होंने पुनः पूछा, "यह किसने मुझसे बातें कीं और वह कहाँ पर है?" पर इसका भी कोई जवाब न मिला,शेरसिंह कुछ देर तक गौर करते रहे इसके बाद धीरेधीरे बोले,"आवाज मेरी पहिचानी हुई सी जान पड़ती है मगर कुछ ख्याल नहीं आता कि कहाँ सुनी है, शायद बोलने वाला अपनी बोली बिगाड़ कर बोला है, मगर इसकी बातों का क्या मतलब? क्या अब मैं इस तिलिस्म से सिवाय बाहर निकल जाने के और कुछ नहीं कर सकता!"देर तक शेरसिंह तरह तरह की बातें सोचते रहे पर कुछ निश्चय नहीं कर सके और न फिर वह आवाज ही उनको सुनाई पड़ी, आखिर वे वहाँ से हटे और किसी दूसरी तरफ को रवाना हुए।

इसके थोड़ी देर बाद हम शेरसिंह को एक दूसरी ही जगह मौजूद पाते हैं। यह एक बहुत ही ऊँचा बुर्ज था और इसकी चोटी पर से भी बहुत दूर दूर तक का दृश्य देखा जा सकता था। शेरसिंह ने इसके अन्दर जाने वाला दर्वाजा खोलने की भी बहुत चेष्टा की मगर कामयाब न हो सके और आखिर लाचार होकर बोले, "क्या उस आवाज का कहना सही है और मैं अब यहां के किसी भी दरवाजे को खोल नहीं सकता!"

शेरसिंह इस जगह से भी हटे और लगभग घड़ी भरके बाद एक तीसरे बहुत बड़े फाटक के सामने खड़े नजर आए जो कहाँका था या जिसके दूसरी तरफ क्या था हम कुछ कह नहीं सकते, मगर और दर्वाजों की तरह यह फाटक भी उनकी किसी भी कोशिश से खुल न सका और अन्त में उनको यहाँ से भी बैरंग वापस लौटना पड़ा।

इसी तरह बार बार कोशिश करते हुए शेरसिंह ने काफी वक्त बिता दिया और अन्त में उन्हें निश्चय हो गया कि उस आवाज का कहना सही है और चाहे जिस कारण से भी हो अब यह तिलिस्म उनके लिए गैर हो गया है और उनकी कोई कलई यहाँ लग नहीं सकती। सब तरफ से घूमते फिरते वे पुनः उसी संग-मर्मर वाली बारहदरीके पास वापस लौटे और यहाँ खड़े होकर कुछ देरतक सोच विचार करते रहने के बाद उन्होंने अपने को उस नाले के पानी में डाल दिया जो इस बाग में बह रहा था।

संध्या होने में कुछ ही देर बाकी थी जब हम शेरसिंहको अजायबघरके पास वाले जंगल में उस नाले के किनारे बैठे हुए पाते हैं जो तिलिस्म में आने जाने के मुख्य रास्तों में से है और जिसे कई बार हमारे पाठक देख चुके हैं अथवा जिसमें कुंअर गोपालसिंह को कूदते हुए उन्होंने उस वक्त देखा था जब वे भैयाराजा से मिलने वहाँ गए थे*। उन्होंने अपने कपड़े सूखने के लिए पेड़ों की डालियों पर डाल दिये हैं और आप एक हल्की रौगनी चादर से अपना बदन ढाँके हुए पत्थर की चट्टान पर बैठे एक छोटी पुस्तक देख रहे हैं जिसमें तिलिस्म के बारे में बहुत सी बातें लिखी हुई हैं। उनके चारो तरफ का जंगल एक दम सन्नाटा है और कहीं से किसी तरह की आवाज नहीं आ रही है।

यकायक शेरसिंह चौंके और सिर उठा कर इधर उधर देखने लगे। उनके कानों में घोड़े के टापों की आवाज गई थी। शीघ्र ही उनकी निगाह एक सवार पर पड़ी जो उसी जंगल से होता हुआ जा रहा था और इन्हीं की तरह से शायद उसकी निगाह ने भी इनको देख लिया था क्योंकि वह अपने घोड़े को रोक बहुत गौर के साथ इन्हीं की तरफ देख रहा था। शेरसिंह को इस सवार को देख कुछ शक हुआ और वे उठ कर खड़े हो गए, उधर वह सवार भी इनकी तरफ बढ़ा और कुछ पास आने के बाद बोला, "क्या मैं शेरसिंह जी को देख रहा हूं!" शेरसिंह ने कहा, "इन्द्रदेव! वाह, बड़े मौके से आ गये! मैं बहुत ही बड़े तरद्दुद

* देखिए भूतनाथ आठवाँ भाग, दूसरा बयान।

में पड़ा हुआ यही सोच रहा था कि आपके पास चलूं और अपना तरद्दुद बयान करके पूछूं कि अब मुझको क्या करना मुनासिब है।"

घोड़े से उतर उसकी लगाम एक डाल से अटकाने के बाद इन्द्रदेव शेरसिंह की तरफ बढ़े और पास पहुँच कर बोले, "क्या आप किसी तरद्दुद में हैं?" शेर-सिंह ने जवाब दिया, "हाँ बहुत बड़े तरद्दुद में, यहाँ आजाइये और सुनियेकि वह क्याहै मगर पहिले यह बतादीजियेकि आप इसतरह बेवक्त किसतरफ जारहेहैं?"

इन्द्रदेव शेरसिंह के पास बैठते हुए बोले, "मैं जमानिया गया था और अब अपने घर वापस लौट रहा हूं, मगर आप कहाँ से आ रहे हैं! आपके गीले कपड़े और यह मोटी चादर देख कर मुझे शक होता है कि...." कहते हुए उन्होंने नाले की तरफ देखा। शेरसिंह ने जवाब दिया, "हाँ, मैं तिलिस्म में से ही आ रहा हूं, जहाँ के अजीबोगरीब तमाशों ने मेरी अक्ल चक्कर में डाल दी है।"

इन्द्रदेव ने हँसकर कहा, "तिलिस्म में अजीब चीजें न दिखेंगी तो फिर कहाँ दिखेंगी! मगर आप कुछ कहेंकि क्या मामला है तो मैं कुछ राय कायम कर सकूं।"

एक दफे तो शेरसिंह के मन में आया कि जो कुछ घटनाएँ इधर घट चुकी हैं, वे सभी इन्द्रदेवसे कह सुनावें पर फिर न जाने क्या सोच वे सिर्फ इतना ही बोले, "किसी काम से मैं तिलिस्म में घुसा था मगर वहाँ यह देख मेरे ताज्जुब का हद न रहा कि कई आदमी उसके अन्दर घुसे हुए हैं और तिलिस्म के तोड़ने की कार्र-वाई कर रहे हैं। मैंने उन पर काबू करके उन्हें तिलिस्म के बाहर निकाल देना चाहा, मगर मुझे जक उठानी पड़ी और उल्टे उन्होंने मुझको तिलिस्म से निकाल बाहर किया।"

इन्द्रदेव०। (ताज्जुब से) यह आप क्या कह रहे हैं! ऐसा भला किस तरह हो सकता है!

शेर०। मैं बहुत ठीक कह रहा हूं और आप भी अगर चाहें तो जाँच कर मेरी बात की ताईद कर सकते हैं।

इन्द्र०। और आपका यह भी ख्याल है कि यह तिलिस्म तोड़ा जा रहा है!

शेर०। बेशक! इसके सब रास्ते बन्द हो गये और कोई भी अब इसके अन्दर नहीं जा सकता यहाँ तक कि मैं भी नहीं।

इन्द्र०। (सिर हिला कर) मगर ऐसा तो होना नहीं चाहिए।

शेर०। बेशक नहीं होना चाहिए, मगर जो कुछ होता देख रहा हूं उस पर विश्वास न करूं तो करूं भी क्या?

इन्द्र०। आपने कुछ आदमियों को अन्दर देखा जो तिलिस्म तोड़ने की कार्रवाई कर रहे थे।

शेर०। हाँ, और मैंने उन्हें रोकना चाहा मगर उलटे उन्होंने मुझको निकाल बाहर किया जैसा कि मैंने अभी अभी आपसे कहा।

इन्द्र०। (कुछ रुक कर) आप कहते हैं तो मानना ही पड़ेगा मगर मेरे मन में यह बात बैठती नहीं है।

शेर०। आप खुद जाँच करके देख लीजिये।

इन्द्र०। जरूर देखूँगा, मगर इस वक्त नहीं क्योंकि एक आवश्यक काम से जल्दी ही घर पहुँच जाना मेरे लिए बहुत ही जरूरी है, फिर भी दो एक दिनों के अन्दर ही मैं इस बात की पूरी जाँच करूँगा और देखूँगा कि आपका कहना कहाँ तक ठीक है। यद्यपि इतना मैं जानता हूं कि इस तिलिस्म की उम्र समाप्त हो गई है और इसके कई टुकड़े बहुत जल्द टूटेंगे, लेकिन अभी तक मेरी निगाहों के सामने कोई ऐसा प्रतापी पुरुष नजर नहीं आता है जो इस काम को कर सके, फिर मुझे यह भी अच्छी तरहसे मालूम है कि तिलिस्म वही तोड़ सकता है जिसके नाम पर वह बंधा हुआ हो और किसी गैर को इन मामलों में हाथ डालने की हिम्मत न करनी चाहिये।

शेर०। बिलकुल ठीक है और इसीलिए मैं भी बहुत बड़े तरद्दुद में पड़ा हुआ बार बार यही सोच रहा हूं कि वे लोग कौन हो सकते हैं जिनको मैंने वहाँ देखा।

इन्द्र०। जब तक मैं अपनी आँखोंसे न देखूँ इस मसलेपर कुछ कह नहीं सकता।

शेर०। और आप इस वक्त बहुत जल्दी में हैं। खैर तो आप जाएँ क्योंकि रात सिर पर है और अभी एक लम्बा सफर आपके सामने है मगर इतनी प्रार्थना मेरी जरूर है कि मौका मिलते ही इसका पता लगाने की कोशिश करें।

इन्द्र०। दो चार रोज के अन्दर ही मैं इस बात को जाननेकी कोशिश करूँगा कि वे लोग कौन हैं जिनका आपने जिक्र किया, मगर आपकी बातें सुन अब एक शक मुझे भी होने लगा।

शेर०। वह क्या?

इन्द्र०। कि कहीं आपकी तरह मुझे भी बैरंग वापस न लौटना पड़े, जब कि आप उनके मामले में हाथ दे न सके और वापस लौटने पर मजबूर हुए तो मुमकिन है मेरी भी वही गति हो?

शेर०। (गम्भीरता से) बेशक ऐसा हो सकता है मगर फिर भी आपको

कोशिश कर देखना चाहिये।

इन्द्र०। जरूर देखूँगा, तो अब मैं इजाजत लूँ।

शेर०। हाँ जाइये, मगर इतना बताते जाइए कि मैं अब कब आपसे मिलूं।

इन्द्र०। एक सप्ताह का समय मुझको दीजिये, इस बीच में मुझसे जो कुछभी बन सकेगा मैं कर देखूँगा और तब स्वयम् आपसे मिलूँगा क्योंकिमुझे शीघ्रही एक जरूरी कामसे रोहतासगढ़ जाना है, मैं समझता हूं आप अब उधर ही जायेंगे भी?

शेर०। हाँ, मगर किले में मुझसे भेंट न होगी क्योंकि महाराज की खफगी की वजह से मैंने वहाँ आना जाना छोड़ दिया है।

इन्द्र०। मुझे यह बात मालूम है और आपके नए स्थान का भी पता है, मैं उसी स्थान पर आपसे मिलूंगा।

शेरसिंह और इन्द्रदेव में थोड़ी बातें और हुईं और तब इन्द्रदेव अपने घोड़े पर सवार हो वहाँ से रवाना होगए, शेरसिंह उसी जगह बैठे रह गए।

थोड़ी देर के लिए शेरसिंह का साथ छोड़कर हम इन्द्रदेवके साथ चलते हैं। अपने घोड़े पर सवार हो कुछ देर तक तो वे पूरब की तरफ ही बढ़ते रहे पर जब उस जगह से दूर होगए और शेरसिंह तथा उनके बीच काफी फासला पड़ गया तो उन्होंने घोड़े का मुंह घुमा दिया और दक्खिन की तरफ जाने लगे। यहाँ तक कि कुछ ही दूर जाने बाद उस नकाबपोश के पास जा पहुँचे जो पेड़ोंकी एक घनी झुरमुट के अन्दर छिपा हुआ शायद इन्हीं की राह देख रहा था क्योंकि दूर से इन्हें आता देख वह आड़के बाहर आगया और इनकी तरफ बढ़ा, बहुत जल्द दोनों पास पहुँच गए और तब नकाबपोशने पूछा, "कहोजी साधोराम, क्या खबर लाए?" दूसरे ने जवाब में कहा, "आपका शक बहुत ही ठीकथा और वास्तव में वह शेरसिंह ही था।" नकाबपोशने खुश होकर कहा, "था न? मुझे पूरा विश्वास था कि वही होगा! तो कुछ बातचीत भी हुई? क्या कहा उसने?"

कहते कहते उस नकाबपोश ने अपनी नकाब पीछे उलट दी और अब हमने पहिचाना कि यह मनोरमा है जो मर्दानी पौशाक पहिने हुए है। वह आदमी जिसे हम अब तक इन्द्रदेव समझते आए थे उसकी बात सुन घोड़े से उतर पड़ा और बोला, "जी हाँ बहुत सी बातें हुईं। यह तो कहिए कि हम लोगों की खुश-किस्मती थी कि मैं इस वक्त इन्द्रदेव की सूरत में था और वह कुछ घबराया हुआ और परेशान सा था जिससे मुझ पर चट विश्वास कर बैठा और अपने मन की बातें साफ साफ बोल पड़ा, मगर मनोरमाजी, इसकी बातों से तो पता लगता

है कि इसको तिलिस्म से कुछ गहरा सरोकार है और साथ साथ इन्द्रदेव भी तिलिस्मी मामले में पूरा दखल रखते हैं !"

मनो० । तो क्या तुमको इसमें कोई शक है ! बेशक ऐसा ही है, मगर उससे क्या बातें हुई सो पहिले सुनाओ तभी मैं कोई राय कायम कर सकूंगी।

इन्द्रदेव रूपी साधोराम ने यह सुन वे सभी बातें जो धोखे में पड़े हुए शेरसिंह ने उससे कही थीं मनोरमा से कह सुनाईं और वह बड़े गौर से सुनती रही। सब कुछ सुन कर वह कुछ देर चुप रही और तब बोली, "जो कुछ तुम कह रहे हो वह तो बड़े आश्चर्य की बात मालूम होती है, अब हम लोगों को बहुत होशियार हो जाना पड़ेगा। बहुत मुमकिन है कि शेरसिंह का कहना सही हो और तिलिस्म टूट रहाहो क्योंकि दारोगा साहब और मायारानी दोनों ही मुझसे कह चुके हैं कि जमानिया के तिलिस्म की उम्र समाप्त हो गई है और इसीलिए वे उन बातों की फिराक में पड़े हुए हैं जिनको पूरा करने हम लोग इस समय जा रहे हैं। मगर तुम्हारी बातें सुन कर मेरा खयाल बदल रहा है और मैं अपने काम का ढंग भी बदल देना चाहती हूं, साथ साथ तुमको भी एक नए काम पर लगा देना चाहती हूं।"

साधो०।जोकुछ आप हुक्म कीजिए साधोराम दिलोजानसे करनेको तैयारहै।

मनो०। मैं तो लौट कर जमानिया जाती हूं और दारोगा साहब को यह खबर देती हूं, और तुम इस शेरसिंह के पीछे लग जाओ। देखो कि अब यह कहाँ जाता या क्या करता है,मगर चाहे जो कुछ भी हो तुम इसका साथ मत छोड़ो। मेरा दिल कहता है कि यह जरूर अब कोई गहरी कार्रवाई करेगा, जिसकी जानकारी हम लोगों को बहुत फायदा पहुंचाएगी।

साधो०। बहुत ठीक है, जो आ कहती हैं मैं वही करूँगा। मेरी समझ में तो अब यह रोहतासगढ़ जायगा।

मनो०। बहुत मुमकिन है, तो तुम वहीं चले जाना, तुम्हारे दोनों शागिर्द वहाँ मौजूद हुई हैं, और जमानिया पहुंच कर मैं और भी कुछ लोगों को तुम्हारी मदद पर भेज दूगी। (गौर से सुन कर) कुछ आहट आ रही है। मैं समझती हूं वह शेरसिंह ही है जो वह देखो चला जा रहा है।

साधो०। (गौर से देख कर) बेशक वही हैं, मगर यह इधर कहाँ जा रहा है ? रोहतासगढ़ जाने के लिये तो इसे.........

मनो०। (धीरे से) कहीं भी जाता हो तुम इसका पीछा करो मगर बहुत

होशियारी के साथ। यह बडा ही चांगला है और अगर जान गया कि तुमने इन्द्रदेव बन कर उसको धोखा दिया है तो तुमको कहीं का न छोड़ेगा।

"आप बेफिक्र रहिये" कहता हुआ इन्द्रदेव रूपी साधोराम मनोरमाके पास से हट गया और तब लम्बा चक्कर काटता और पेड़ों की आड़ देता हुआ शेरसिंह के पीछे लग गया जो किसी गहरी फिक्रमें सिर झुकाए और बिना किसी तरफ को देखे भाले सीधे चले जा रहे थे और जिनको इस बात की कुछभी खबर न थी कि दुश्मन होशियार हो कर उनको बहुत बड़ा धोखा दे चुके हैं और आगे भी दिया चाहते हैं, मनोरमा उसी जगह खड़ी देर तक उन्हीं दोनों को देखती रही, जब दोनों उसकी आँख के ओट हो गए और उनकी आहट तक बन्द होगईतो आगे बढ़ी और साधोरामकेछोड़े हुए घोड़े पर सवार हो जमानियाकी तरफ चल पड़ी।

रात को रात और दिन को दिन न समझते हुए शेरसिंह सीधे चलते ही चले गए और तीसरे दिन की सुब्ह उन्हें एक नई और विचित्र जगह में देखती है, उनकी आँखों के सामने एक बहुत बड़ा और दूर तक फैला हुआ खण्डहरहै जो सब तरफ से गिरा पड़ा और भयावना होरहा है मगर फिर भी जिसमें दस बीस कोठरियाँ और दालान इस हालत में हैं कि लोग उनमें रह कर गुजारा कर सकें, खण्डहर की मोटी मोटी दीवारें और बड़े फाटक बताते हैं कि किसी जमाने में यह इमारत जरूर कद्रकी चीज रही होगी पर अब तो इसकी हालत देख तरस ही आता है, लेकिन अगर हम भूलते नहीं हैं तो बेशक हमारे पाठक भी इस खण्डहर से परिचित हैं और आज के पहिले भी यहाँ आकर इसको देखचुके हैं क्योंकि वह वही है जहाँ से कुँअर इन्द्रजीतसिंह गायब होगये थे या जहाँ शिवदत्त ने राजा बीरेन्द्रसिंह को घेर कर गिरफ्तार करने की कोशिश की थी*।

इस खण्डहरमें पहुंचकर शेरसिंह ने एक दफा अपनी हालत पर गौर किया। उनके कपड़े और तमाम बदन धूल से भरा हुआ था, पैरों पर सेरों गर्द चढ़ गई थी, और बदन थकावट से चूर चूर होरहा था,फिर भी न जाने किस फिराक में वे थे कि उन्होंने इन बातों की कुछ भी फिक्र न की और एक निगाह चारो तरफ गौर से घुमा इस बात का निश्चय कर लेने के बाद कि कोई उनकी कार्रवाई देखने वाला इस जगह मौजूद नहीं है, वे एक दालान की तरफ बढ़े और वहाँ पहुँच उसके बाईं तरफ बनी हुई एक कोठरीके अन्दर जा घुसे जो अभी

* देखिए चन्द्रकान्ता सन्तति पाँचवाँ भाग तेरहवाँ बयान तथा छठवाँ भाग दूसरा बयान।

तक अच्छी हालत में थी,इस कोठरी के सामने वाली दीवारमें एक आलमारी बनी हुई थी जिसके दोनों पल्ले मजबूत बन्द थे मगर उसको खोलने के लिए दो मुट्ठे जरूर लगे हुए थे, शेरसिंह ने इन मुठ्ठों को किसी खास क्रम से घुमाया और पल्ले खोल अन्दर घुस गए।

यह कोई आलमारी नहीं बल्कि एक छोटी कोठरी थी जिसमें शेरसिंह ने अपने को पाया और यहाँ से एक तहखाने में जाने का रास्ता था जिसकी छोटी छोटी सीढ़ियाँ सामने ही नजर आ रही थीं, शेरसिंह ने पीछे मुड़ कर दोनों पल्ले पुनः मजबूत बन्द कर दिएऔर तब कहीं से सामान निकाल कर रोशनी की जिसकी मदद से सीढ़ियाँ तय कर वे नीचे वाले तहखानेमें जापहुँचे*।

इस लम्बे चौड़े तहखाने में यद्यपि गन्दगी तो न थी फिरभी इसकी हालत देखकर कहा जा सकता था कि यहाँ किसीका आना जाना बहुत कमही होता है,एक तरफ एक तख्तपोश पड़ा हुआथा जिस पर मामूली बिछावन बिछा था, दूसरी तरफ कुछ बर्तन और पानी वगैरह था, और तीसरी तरफ कुछ बक्स पिटारे और इसी तरह की और चीजें पड़ी हुई थीं, शेरसिंह ने एक सरसरी निगाह से इन चीजों को देखा मगर कहीं रुके नहीं और रोशनी हाथ में लिए सीधे आगे ही बढ़ते चले गए यहाँ तक कि दीवार के पास जा पहुँचे जो बहुत मजबूत और बड़े ही मोटे मोटे पत्थरों की बनी हुई थी, हाथ की मोमबत्तीकी मदद से शेरसिंह ने उस दीवार की एक जगहको बहुत गौर से देखा और तब मोमबत्ती एक तरफ जमा दोनों हाथों से उस जगह कुछ करने लगे।

थोडी ही देर बाद एक हलकी सी आवाज हुई और दीवार में एक छोटा रास्ता दिखाई पड़ने लगा जिसमें बहुत मुश्किल से एक आदमी जा सकता था, शेरसिंह ने वह मोमबत्ती पुनः उठाई और इस रास्ते के अन्दर घुस गए।

काफी देर बाद शेरसिंह उस रास्तेके बाहर निकले, इस समय उनके हाथ में एक छोटीसी गठरी थी जिसे वे बडी सावधानीसे उठाए हुएथे,बाहर निकल उन्होंने वह रास्ता बन्द कर दिया और तखतपोशकेपासपहुँचे,एक छोटी चौकी नीचेसे उठा सामने रक्खी और तखतपरबैठ हाथकी गठरी और मोमबत्ती उस चौकी पर रख दी,हल्के हाथों गठरी खोली और उसके तरह तरह के सामानों को अलग कर एक डिब्बा निकाला. कुछ देर तक इसे गौर से देखते रहे, तब

* इसी तहखाने में कामिनी को लेकर कमला शेरसिंह से मिलने पहुँची थी, देखिये चन्द्रकान्ता सन्तति तीसरा भाग, तेरहवाँ बयान।

खोला और उसके अन्दर से एक छोटी पोथी बाहर निकाली। एक बार उसे माथे से लगाया और तब मोमबत्ती की रोशनी में थोडी देर उलट पलट कर देखने के बाद इधर उधर जगह जगह से पढ़ने लगे। थोडी देर बाद उनके मुँह से निकला, "जान पड़ता है यह पोथी जरूर मेरी कुछ मदद करेगी और तिलिस्मी गुत्थी सुलझाने में सहायक होगी।" अपनी हालत, सफर की थकावट और रास्ते की धूल आदि किसी बात का खयाल न कर वे जम कर बैठ गए और उस पोथी को गौर से पढ़ने लगे।

पाठकों को तरद्दुद में न डाल हम कहे देते हैं कि यह पोथी वही रिक्तगन्थ है जिसकी मददसे इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंहने जमानिया का तिलिस्म तोड़ा था और हम समझतेहैंकि पाठकोंको यहभी अच्छी तरह याद होगाकि यह पुस्तक शेरसिंह के हाथ में किस तरह आई* । अपने पास वाली पोथियों और चाभियों से काम चलते न देख शेरसिंह को इस ग्रन्थ की याद आई है और वे इससे मदद लिया चाहते हैं; देखना है कि अब इस काम में वे कहाँ तक सफल होते हैं।

अपने भरसक तो शेरसिंह ने बहुत चेष्टा की मगर आखिरकार लम्बे सफर की थकावट ने उनके ऊपर अपना असर डाल ही दिया और रिक्तगन्थ पढ़ते ही पढ़ते वे नींद में गाफिल हो गए। किताब उनके हाथ से छूट छाती पर आ गिरी और तब नीचे जमीन पर गिर गई।

कब तक सोते रहे इसे शेरसिंह खुदभी कुछ नहीं कह सकते पर जब यकायक उनकी आँख खुली तो अपने चारो तरफ घोर अँधकार देख वे चौंक कर उठ बैठे, मोमबत्ती न जाने कब की खतम होकर बुझ चुकी थी और जमींदोज तहखाने के अन्दर इतना गहरा अँधेरा छाया हुआथा कि हाथ को हाथ नहीं दिखाई देता था, उन्होंने सामान निकाल कर पुनः रोशनी की और सबसे पहिले रिक्तगन्थको उठा कर ठिकाने से रक्खा तब धीरे से बोले, "थकावट ने नींद ला दी और जान पड़ता है मैं बहुत देरतक सोता रह गया,मगर वह क्या कोई आवाज थी जो मैंने सुनी?" उनकी निगाह सीढ़ियों की तरफ घूमी और तब उस तहखानेके चारो तरफ, पर कहीं कोई न था। कुछ देर तक गौर करते रहे, तब बोले, "नहीं कोई न कोई बात तो जरूर थी,पता लगाना चाहिये!" उन्होने रिक्तगन्थ की तरफ देखा और सिर हिलाकर कहा, "बड़े मतलब की किताब है और इससे कितनी ही नई बातों का पता लगता है, पर एक तो अक्षर बहुत ही बारीक हैं, दूसरे बहुत जगह मत-

* देखिए रोहतासमठ चौथा भाग, पहिला बयान।

लब भी समझ में नहीं आता। बिना कई बार पूरा पूरा पढ़े काम न चलेगा।"

शेरसिंह ने रिक्तगन्थ डिब्बे में रक्खा और डिब्बा गठरी के हवाले किया, इसके बाद गठरी को पुनः उसी तरह उसी जगह रख दिया जहाँ से निकाला था, इतना करने के बाद वे तहखाने के बाहर निकले और ऊपर वाली छोटी कोठरी का पल्ला खोल बाहर खण्डहरमें निकल आए,यह देख उनको बहुत ताज्जुब हुआ कि उन्हें नींद में काफी अरसा गुजर गया और अब संध्या का समय होगया था।

बहुत गौर के साथ सब तरफ देखते हुए शेरसिंह देर तक उस खण्डहरमें इधर उधर फिरते रहे मगर कोई शक की बात नजर न आई और न किसी की सूरत ही दिखाई पड़ी। उनके मुंह से निकला, "यहाँ तो कहीं कोई नहीं है ! तब वह जरूर मेरा शक था, या शायद कोई सपना देखा हो। खैर अब जरूरी कामों से निपटना चाहिये।" उन्होंने लौट कर तहखाने के रास्ते को मजबूत बन्द किया और तब खण्डहर से बाहर निकल उस नाले की तरफ बढ़े जो वहाँ से बहुत थोड़ी दूर पर बहा करता था।

दूसरा बयान

रोहतासगढ़ महल के अपने कमरे में आधी रात के समय एक पलंगड़ी पर बैठी हुई नन्हों शमादान की रोशनी में कोई पुस्तक पढ़ रही है।

एकतो किले का यह हिस्सा यों ही निराला और सूनसान रहता है दूसरे इस महलके अन्दर आजकल नन्हों के सिवाय एक चिड़िया का पूत भी नहीं रहता अस्तु इस जगहके सन्नाटे का कहना ही क्या है,फिरभी नन्हों न जाने क्यों बार बार कमरेके दर्वाजे की तरफ इस तरह देखती है मानों उसे किसी के आने की उम्मीद हो,दर्वाजा यद्यपि भिड़का हुआ है पर उसकी साँकल लगी हुई नहीं है।

यकायक किसी तरह के खटके की आवाज सुन नन्हों चौंकी। पहिले तो उसकी निगाह दर्वाजेकी तरफ घूमी पर उसे ज्यों का त्यों बन्द पा अपना भ्रम समझ पुनः उस किताब की तरफ ध्यान लगाया। पर कुछ ही देर बाद फिर वैसी ही आवाज सुन कर उठ बैठी। पलंगड़ी पर बैठे ही बैठे उसने कमरे के चारो तरफ निगाह घुमाई। एक आलमारी के पास पहुंच उसकी नजर रुक गई जिसका बन्द पल्ला आप ही आप धीरे धीरे खुल रहा था। नन्हों ने चिराग की बत्ती तेज की और तब उसका हाथ तकियाके नीचे की तरफ बढ़ा पर फौरन रुक गया जब उसने देखा कि आलमारी के दोनों पल्ले खुल गये और उसके अन्दर हमारे दारोगा साहब (बाबाजी) खड़े नजर आ रहे हैं।

नन्हों झपट कर उठी और "बाबाजी, आप आ गए !" कहती हुई उस आलमारी की तरफ बढ़ी। जब तक बाबाजी आलमारी से उतरकर कमरे में आवें तब तक उसने पास पहुंच कर इनके चरण छूए और हाथ जोड़ कर बोली, "आपके आने में बहुत देर हुई।"

बाबाजी बोले, "हाँ मुझे जरूर देर हो गई। रास्ते में ही कुछ ऐसा काम निकल आया कि रुक जाना पड़ा, पर यह तो कहो क्या यहाँ एकदम निराला है और हम लोग बेखटके बातें कर सकते हैं ?"

नन्होंने जवाब दिया,"आप जानतेही हैं कि महलका यह हिस्सा आजकल बिल्कुल सूनसान और सन्नाटा रहा करता है और इसमें कोईभी नहीं रहता।"

बाबाजी ने दर्वाजे की तरफ बता कर कहा, "ठीक है, मुझे यह बात अच्छी तरह मालूम है, पर दर्वाजा खुला देख रहा हूं।"

"आप शायद इधरहीसे आवें इस खयालसे मैंने दर्वाजा खुला छोड़ रक्खा था।"कहतीहुई नन्होंने दारोगासाहबको एकचौकीपर बैठाया और आप दर्वाजे की तरफ बढ़ उसकी जंजीर बन्द करके लौटतीहुई बोली,"मगर दारोगासाहब आपकेचेहरेसे घबराहट और परेशानी झलकरहीहै,क्या कोई नई बातहुई है?"

नन्हों के बिछाये हुए आसन पर बैठ दारोगा साहब बोले, "बेशक ऐसा ही है, और एक नहीं बल्कि कई बातें ऐसी हो गई हैं जो घबराहट और परेशानी पैदा करने वाली हैं।"

नन्हों०। (चौंक कर) सो क्या ? मैं कुछ सुन सकती हूं ?

दारोगा०। खास तुमको सुनाने ही तो मैं दौड़ा दौड़ा चला आ रहा हूं, मगर पहिले यह कहो कि हमारे राजा साहब इस वक्त कहाँ होंगे ?

नन्हों०। हैं तो किले ही में मगर इस वक्त उनके आने की उम्मीद नहीं की जा सकती। किले के ऊँचे अहलकारों के साथ कुछ बहुत ही जरूरी सलाह मशविरा कर रहे हैं।

दारोगा०। (ताज्जुब से) किस बारे में ?

नन्हों०। मैं ठीक ठीक तो नहीं कह सकती पर किसी फौजी मामले पर विचार हो रहा है। उन्हें उड़ती हुई यह खबर लगी है कि राजा बीरेन्द्रसिंह का इरादा इस किले पर हमला करने का है इसीलिए वे भी तैयारी में लगे हैं।

दारोगा०। बीरेन्द्रसिंह ! इस किले पर हमला करेंगे !

नन्हों०। हाँ कुछ ऐसा ही तो सुनने में आया है, मगर खैर, उस बात को जाने दीजिये और आप अपनी खबर बताइए,मैं यह जानने को व्याकुल होरही

हूं कि आपको किस बात ने फिक्र और तरद्दुद में डाल दिया है ?

दारोगा० । अच्छा सुनो, पहिली बात तो यह है कि बूआजी मेरी कैद से गायब हो गईं ।

नन्हों० । हैं, देवीरानी और आपके कैद से निकल गईं !! सो कैसे ? क्या आपने उन्हें हिफ़ाजत से नहीं रक्खा था !

दारोगा० । रक्खा तो मैंने उन्हें ऐसी जगह था कि एक चिड़िया भी वहाँ पर मार न सकती थी, पर फिर भी वे गायब हो गईं । उनके कैदखाने की जंजीर कटी हुई थी और उनका कहीं पता न था जब मैं आज उनके भोजन पानी का इन्तजाम करने उस जगह गया ।

नन्हों० । तब तो बड़ा गजब हो गया ! चाहे जैसे भी वे छूटी हों सीधी यहीं पहुँचेंगी और उनके आते ही यहाँ आफत मच जायगी !!

दारोगा० । इसीलिए तो मैं दौड़ा दौड़ा तुम्हारे पास आया कि जिसमें तुम हाशियार हो जाओ और अपने बचाव का इन्तजाम कर लो ।

नन्हों० । आपने बहुत ठीक किया और राजा साहब को फौरन इस बात की खबर करनी चाहिए ।

दारोगा० । जरूर, मगर बाकी खबरें भी सुन लो जो मैं बताना चाहता हूं । केवल इतना ही नहीं हुआ है, बल्कि वह औरत भी जो जमानिया महल में घुस कर मुन्दर की नाक का बाल बन गई थी और जिसको देख कर तुमने कहा था कि रोहतासगढ़ की ही कोई लौंडी है........

नन्हों० । हाँ हाँ मैना, बूआजी की बड़ी विश्वासपात्र और चालाक लौंडी, उसका क्या हुआ !

दारोगा० । तुमने उसको भी गिरफ्तार कर लेने को कहा था ।

नन्हों० ।बेशक,क्योंकि वह वहाँ जरूर किसी गहरे मतलबसे घुसी होगी।

दारोगा० । मैंने उसे पकड़ कर बन्द कर दिया था और उसकी जगह अपनी एक ऐयारा को उसका रूप बना कर मुन्दर के पास रख दिया था पर आज ही वह मेरी कैद से न जाने कैसे गायब हो गई !

नन्हों० । हाय हाय, यह और भी बुरा हुआ! तब बहुत मुमकिन है उसी ने बूआजी को छुड़ाया हो क्योंकि वह बड़ी आफत की परकाला है! अब बूआजी और मैना दोनों ही सीधी यहाँ पहुँचेंगी और सबसे पहिले मुझीको उनको..... (रुक कर) जान पड़ता है बाजी आजकल आप बहुत ज्यादा झमेलों में पड़े

हुए हैं और अपने कैदियों की हिफाजत का कुछ खयाल नहीं रखते, नहीं तो ये ऐसे ऐसे लोग इतने सहज में क्योंकर छूट जाते !

दारोगा० । इधर जो कुछ घटनाएं मेरे साथ हो रही हैं उनसे खुद मेरी अक्ल परेशान है और कुछ समझ में नहीं आताकि क्या होने वाला है। कैदियों कीजितनी हिफाजत मैंरखताहूं औरमेरे पास जैसी मजबूत जगहें उनको छिपा रखने की हैं क्या किसीके पास होंगी, पर फिर भी समय समय पर कैसे लोग छूट जाते हैं या कौन उनको निकाल ले जाता है कुछभी समझ में नहीं आता ।

नन्हों० । खैर वह सब जो कुछ भी हो पर बूआजी और मैना के छूट जाने से कम से कम हम लोग तो—मैं और राजा साहब, बहुत बड़े तरद्दुद में पड़ जाँयगे । अब बिना एक पल की भी देर किये राजा साहब को भी होशियार कर ही देना चाहिये ।

दारोगा० । बेशक, मगर क्या तुम उन तक अपनी खबर पहुँचा सकोगी! तुम्हीं ने तो कहा है कि........

नन्हों० । इसका कुछ बन्दोबस्त मेरे पास है, यदि आप मुझे जरा देर की मोहलत दें तो मैं अभी यह काम करके लौट जाऊँ, मगर यह क्या ? जान पड़ता है राजा साहब........

दर्वाजे पर किसीकी थपकी पड़ी थी जिसे सुनते ही नन्हों चमक कर उठी और पास जा उसने दर्वाजे की सिकड़ी पर हाथ रखते हुए पूछा,"कौन है ?" जवाब मे एक खास तरहका इशारा हुआ जिसे सुन उसने दारोगा साहब की तरफ घूम इशारे से कहा, "आ गए" और तब दर्वाजा खोल दिया । राजा दिग्विजयसिंह कमरे के अन्दर आ पहुँचे जिन्होंने बाबाजी पर निगाह पड़ते ही कहा, "वाह वाह, बाबाजी भी यहाँ विराज रहे हैं । मैं इस वक्त आप ही से मिलने को व्याकुल हो रहा था ।"

दिग्विजयसिंह ने आगे बढ़ कर बाबाजी के चरण छूए और इशारा पा उनके सामने बैठ गए, तब से नन्हों भी दर्वाजा बन्द करती हुई लौट आई और दोनों से कुछ दूर हट कर बैठती हुई बोली,"बाबाजी अभी अभी आ रहे हैं और हमारे लिए बहुत ही बुरी खबरें लेते हुए आये हैं ।"

दिग्विजय० । (चौंक कर) बुरी खबरें ! सो क्या ?

नन्हों० । बूआजी और मैना दोनों ही इनकी कैद से छूट गईं और इस वक्त पता नहीं कहाँ हैं ?

दिग्वि०। हैं, हैं, ऐसी बात है ! तब तो बड़ी ही मुसीबत हो गई और मुझे बहुत बड़े तरद्दुद में पड़ जाना होगा। क्या उनकी हिफाजत में...!

दारोगा०। तुम ऐसा सोच सकते हो पर सच बात तो यह है कि जो कुछ हुआ वह मेरी अक्ल के बिल्कुल बाहर की बात है। देवीरानी को मैंने अजायबघर की ड्योढ़ी में बन्द किया हुआ था और तुम खुद ही जानते हो कि वह कैसी गुप्त जगह है।

दिग्वि०। अजायबघरकी ड्योढ़ी में ! वहाँ से कोई कैसे छूट सकता है?

दारोगा०।सोईतो,जरूरकोईकातिलआदमी वहाँपहुँचा जिसका यह काम है।

दिग्वि०। बेशक ऐसा ही है, कहीं बूआजी खुद ही तो.... ?

दारोगा०। नहीं वे खुद किसी तरह भी निकल नहीं सकती थीं। उनकी कोठरी की सिकड़ी बाहर से किसी तेज औजार द्वारा काट दी गई थी और इस तरह दर्वाजा खोल कर कोई उन्हें छुड़ा ले गया था।

दिग्विजय०। मगर अजायबघर में किसी का जा पहुँचना....

दारोगा०। बेशक बहुत बड़े ताज्जुब की बात है, मगर वह बात और भी बड़े ताज्जुब की है जो मैं अब तुमको बताऊँगा और जो मैंने अभी नन्हों से भी नहीं कही, अजायबघर का तिलिस्म टूट रहा है !

दिग्विजय और नन्हों दोनों ही इस बात को सुनकर चमक पड़े और एक साथ दोनों के मुंह से निकल गया, "हैं, अजायबघर का तिलिस्म टूट रहा है!"

दारोगा०। हाँ।

दिग्वि०। आपको इस बात का विश्वास है ?

दारोगा०। पूरा पूरा, तिलिस्म टूटने की हालत में जो जो बातें होती हैं मैं उनको बखूबी जानता हूं और वह सब कुछ वहाँ हो रहा है।

दिग्वि०। मगर आप तो सहज ही में तिलिस्म के अन्दर जाकर इस बात का निश्चय कर सकते हैं कि यह बात कहाँ तक ठीक है और अगर ठीक है तो यह किसका काम है।

दारोगा०। और जो तीसरी या सब से बड़ी आफत मेरे ऊपर आई या यों कहना चाहिए कि हम सभों के ऊपर आई वह यह है कि वह तिलिस्मी किताब जो बराबर मेरे पास रहा करती थी कहीं गुम हो गई है।

दिग्वि०। तिलिस्मी किताब गुम हो गई !

दारोगा०। हाँ।

दिग्वि०। मैं यह पूछते डरता हूं कि आप क्या उसे हिफाजत से नहीं रखते थे?

दारोगा०। हिफाजत से तो मैं इतनी उसे रखता था कि जहाँ वह रहती थी वहाँ वायु का भी प्रवेश नहीं हो सकता था पर फिर भी वह गुम हो ही गई और यह चोट मेरे कलेजे पर ऐसी बैठी है कि मैं किसी काम का नहीं रह गया।

दिग्वि०। बेशक! (एक लम्बी साँस लेकर) अफसोस, अब इसी समय तो उससे काम लेने का मौका आ रहा था और ऐसे समय यह आफत आई !

नन्हों०। (कुछ देर बाद, धीरे से) क्या मैं जान सकती हूं कि यह कैसी किताब थी ?

दारोगा०। वह एक ऐसी तिलिस्मी किताब थी जिसकी मदद से मैं जब चाहूं तब और जिस तिलिस्म के अन्दर चाहूं उसमें जा सकता था।

नन्हों०। अच्छा ! मगर आपने कभी मुझसे ऐसी किताब के होने का ज़िक्र नहीं किया ?

दारोगा०। तुम भूलती हो, तुमसे मैं इसके बारे में कह ही नहीं चुका हूं बल्कि इसी किताबकी मदद से आखिरी दफे लोहगढ़ी में मैंने तुम्हारी जान बचाई थी जब तुम मुन्दर और गौहर के साथ वहाँ बैठी किसी ऐयार से बातें कर रही थीं और भूतनाथ ने उस जगह पहुंच बम का गोला चला वह समूची इमारत ही उड़ा दी थी*तथा जिसके साथ साथ जरूर तुम तीनों भी उड़ जातीं अगर मैं वहाँ पहुंच न गया होता।

नन्हों०। ओह हाँ ठीक है, मैं उस वक्त बड़े बेमौके फंस गई थी और आपने बड़े वक्त से पहुंच कर हम लोगों को बचाया था, मेरे पूछने पर आपने कहा था कि एक तिलिस्मी ताली की मदद से आप वहाँ पहुंच सके थे, पर मैं यह नहीं समझी थी कि वह ताली कोई किताब है और आप उसकी मदद से जब चाहें और जिस तिलिस्म में चाहें घुस सकते हैं।

दिग्वि०। यह क्या किस्सा है ? मुझे इसका हाल बिल्कुल नहीं मालूम।

नन्हों०। मैं आपको बता दूंगी पर (दारोगा से) पहिले एक बात आप मुझे और बता दें जिसको पूछने का कई बार मेरे मन में विचार उठा पर मौका न मिलने से रह जाती थी।

दारोगा०। सो क्या ?

नन्हों०। आप उस जगह उस वक्त पहुंच कैसे गए ? क्या किसी ने हम लोगों

---

* देखिये भूतनाथ, सत्रहवें भाग का अन्त।

के वहाँ होने का हाल आपसे कह दिया था ?

दारोगा० । नहीं किसी ने भी नहीं ।

नन्हों० । तब आप वैसे कठिन मौके और ऐन वक्त पर उस जगह कैसे पहुंच गए, क्योंकि इसमें तो कोई शक ही नहीं कि यदि आपने यकायक पहुंच कर हम तीनों को उस तहखाने के अन्दर न खींच लिया होता जिसमें से आप प्रकट हुए थे तो भूतनाथ के बम की बदौलत हमारी लाशोंका भी कहीं पता न रह गया होता।

दारोगा० । खुलासा हाल तो तुम फिर कभी मुझसे सुनना, पर संक्षेप मे बताए देता हूं। (दिग्विजयसिंह की तरफ देखकर) यह बहुत दिनों की बात है आपने अपने ऐयार शेरसिंह को एक पत्र देकर मेरे पास भेजा था और महाराज शिवदत्त की मदद करूं या न करूं इस बारे में मेरी राय पूछी थी !

दिग्वि० । मुझे ठीक ठीक समय का ख्याल तो नहीं पड़ता पर ऐसा हुआ जरूर था और यह उस वक्त की बात है जब मुझे शेरसिंह पर शक नहीं हुआ था और वह भी मुझे अपना मालिक समझ कर मेरी इज्जत करता था। राजा शिवदत्त ने अपने कुछ दुश्मनों की गिरफ्तारी के लिए मेरी मदद चाही थी और यह भी कहा था कि आपको भी राजी करके उसका मददगार बना दूं।

दारोगा०। बेशक ऐसा ही था क्योंकि अपनी चीठी के साथ आपने राजा शिवदत्त की चीठी भी मेरे पास भेज दी थी और जुबानी भी बहुत कुछ उसी शेरसिंह के ही जरिये कहला भेजा था* ।

नन्हों० । अच्छा तब ?

दारोगा० । उस समय तक मुझे भी शेरसिंह पर किसी तरह का शक न था और मैं उस पर पूरा पूरा विश्वास करता था परन्तु उस समय एक घटना ऐसी हो गई जिसके कारण मैं उसे किसी दूसरी ही निगाह से देखने लग गया। हुआ यह कि मालती जो बहुत दिनों से मेरी कैद में थी....(दिग्विजय से) आप मालती को तो जानते ही होंगे ?

दिग्विजय० । बहुत अच्छी तरह ।

दारोगा०। वह यकायक मेरे कब्जेसे निकल गई और यह ठीक उसी दिनकी बात है जिस दिन शेरसिंह मुझसे मिलने आया था । पहिले तो अवश्य ही मेरा उसकी तरफ कुछ ख्याल नहीं गया और मैं इसे अपने किसी दूसरे ही दुश्मन की कारंवाई समझता रहा पर कुछ दिन बाद यकायक मेरा ध्यान उसकी तरफ चला

* देखिए भूतनाथ नौवाँ भाग, दूसरा बयान ।

गया और उसके तथा मालतीके सम्बन्ध का ख्याल कर मैं उसकी तरफसे चौकन्ना रहने लगा, यही नहीं मेरा शक उस समय और भी बढ़ गया जब मेरे ऐयारों ने मुझे खबरदी कि वहअक्सर मेरेदुश्मन दलीपशाहके पासभी आया जाया करताहै।

नन्हों० । ठीक है, अच्छा तब ?

दारोगा० । केवल इतना ही नहीं, बादमें मुझको पता लगाकि शेरसिंह और दलीपशाहमें कोई बहुतही गहरी लागसाँट हुईहै और अकसर दलीपशाह शेरसिंह की सूरत बन कर इधर उधर घूमता तथा तरह तरह के काम करता रहता है । (नन्हां से) तुम इस बात को जानती हो या नहीं मैं नहीं कह सकता, पर जब तुम कामेश्वर का पता लगानेके फेरमें पड़ी हुई जमानिया काशी और मिरजापुर की खाक छान रही थीं और (महाराज दिग्विजयसिंह की तरफ बता कर) इनके ऐयारों के साथ साथ राजा शिवदत्त के ऐयारों से भी तरह तरह के काम ले रही थीं उस समय शेरसिंह बना हुआ दलीपशाह ही तुम लोगों के साथ था और तुम उसे ही शेरसिंह समझ कर उसकी इच्छा और सलाह से काम कर रही थीं, यहाँ तक कि उस लोहगढ़ी वाले तहखाने में तुम जिससे बातें कर रही थीं वह भी शेरसिंह नहीं बल्कि उसकी सूरत बना हुआ दलीपशाह ही था, जब भूतनाथ वहाँ पहुंचा था* और उसकी करतूत ने लोहगढ़ी को तहस नहस कर दिया था ।

नन्हों०। (चौंक कर) ठीक है,भूतनाथ ने भी उस समय यही बात कही थी पर मुझे विश्वास न हुआ था, मगर आपको यह बात कैसे मालूम हुई ?

दारोगा० । शेरसिंह बने हुए दलीपशाह ने अपना एक शागिर्द मेरे पास इस काम के लिए भेजा कि मैं उसको तिलिस्म के अन्दर एक खास जगह पर पहुंचा दूं, शेरसिंह के नकली दस्तखत ने मुझे धोखे में डाल दिया और मैंने वह काम कर दिया ।

दिग्वि० । अर्थात् आपने उस शागिर्द को तिलिस्म में पहुंचा दिया ?

दारोगा० । हाँ मगर उसके बाद ही मेरे मन में शक ने जगह की और मैं सोचने लगा कि शेरसिंह ने इस काम के लिए मुझसे ही क्यों कहा जब कि वह खुद भी उस तिलिस्म में बेखटके आ जा सकता था! यह तो मुझे उस वक्त पता न लगा कि यह काम दलीपशाहकाथा,पर इतना शक जरूर होगया कि शायद वह चीठी शेरसिंहकी न होकर किसी गैर की हो और उसने मुझे चकमा दिया हो, अस्तु मैं जाँच करनेकी नीयतसे पुन: तिलिस्ममें घुसा और भाग्यवश ठीक उससमय लोह-

* देखिए भूतनाथ सत्रहवाँ भाग, आठवाँ बयान ।

गढ़ी में पहुंचा जब नकली शेरसिंह से तुम लोगोंकी बातें हो रही थीं। उस समय मैं भी उसी जगह एक तहखाने में छिपा हुआ था जब भूतनाथ वहां पहुंचा। उसके हाथ में बम का गोला देखते ही मैं होशियार हो गया तथा मेरी बदौलत (नन्हों की तरफ देख कर) इन लोगों की जान बची।

नन्हों०। हां ठीक है, अब मैं समझी।

दिग्विजय०। मगर आपकी बात मैं कुछ समझा नहीं, क्या दलीपशाह उस तिलिस्म में नहीं जा सकता था और आप जा सकते थे? मैं अच्छी तरह जानता हूं कि दलीपशाह को भी तिलिस्मी मामलों में बहुत अच्छा दखल है और वह बेखटके तिलिस्म में आ जा सकता है। अच्छा वह कौन सी जगह थी जहां अपने शागिर्द को पहुंचाने के वास्ते उसने लिखा था?

दारोगा०। एक बड़े आँगन के बीचोबीच में ठीक वैसीही मूरत महाकाल की बैठी हुई है जैसी कि लुटिया पहाड़ी वाले मन्दिर में है, और उसी तरह के गुण भी उस मूरत में हैं। वह स्थान शिवगढ़ी का चौक कहलाता है और जरूर तुमने वह मूरत देखी होगी क्योंकि उसीके सामने से होकर उस इमारत में जाना पड़ता है जिसके अन्दर वाले कमरे से तुमने तिलिस्मी पोशाक.....

दिग्वि०। हां हां ठीक है, मुझे ख्याल आ गया, तो उस जगह....

दारोगा०। (नन्हों की तरफ देखकर) इन्हें तो नहीं पर तुमको जरूर मालूम होगा कि इसी मूरत के सामने भूतनाथ ने अहिल्या को बलि चढ़ाया था और मुझसे दोस्ती की कसम खाई थी।

नन्हों०। मैं अच्छी तरह उस घटना का हाल जानती हूं और आप इस बात को जानते हैं या नहीं मैं नहीं कह सकती पर हमारे ही लिए दलीपशाहने शेरसिंह की तरफ से वह चीठी आपके पास भेजी थी और हमी लोगों ने उस मूरत और उसके आसपास का खाका बनाकर भूतनाथको दिखाया था। इस काम से हमारा अभिप्राय यह था कि इससे डर कर वह हमारे काबू में आ जायगा, पर हुआ इसका उल्टा ही और वह हमारी जान का ग्राहक बन बैठा। उस समय लोहगढ़ी के अन्दर बम लेकर उसका पहुंचना इसी नीयत से था कि हम सभों को एक साथ ही मार कर बखेड़ा तै करे। न जाने कैसे उस कम्बख्त को हम लोगों के वहां मौजूद होने का पता भी लग गया! खैर तो आपका मतलब यहहै कि जब शेरसिंह बने हुए दलीपशाह ने वह जगह दिखाने के बारे में आपको चीठी लिखी तब आप को शक हुआ और आप उस जगह पहुंचे?

दारोगा०। हां मगर खैर इन सब पुरानीबातोंको छोड़ो और अब क्या करना मुनासिब है इसको सोचो। इस वक्त एक एक पल कीमती है। किस वक्त देवीरानी यहां आ पहुंचेंगी कुछ कहा नहीं जा सकता और उनके आने पर......

दिग्वि०। बहुत बड़ी मुसीबत आ जाएगी! तब फिर क्या करना चाहिये?

नन्हों०। मेरी समझ में उनके यहां पहुंचते ही उनको पुनः गिरफ्तार कर लेना चाहिए और इस बार (हाथ से मार डालने का इशारा करती हुई) इस बखेड़े को हमेशा के लिए दूर कर देना चाहिए।

दारोगा०। मेरी भी यही राय है।

दिग्वि०। (जोर से सिर हिला कर) निराले और अकेले में कहीं वे मिल जांय तो शायद मैं उन्हें पुनः पकड़ लेने की हिम्मत कर सकता हूं यद्यपि और किसी बात की तब भी नहीं, मगर खुले आम महल के अन्दर लौंडियों और मुसाहिबों के सामने कोई ऐसी कार्रवाई करने की हिम्मत मेरी हर्गिज नहीं पड़ सकती। सिर्फ महलके अन्दरके ही लोग नहीं बाहरभी मेरे कितने ही अहलकार और ओहदेदार उनकी बहुत बड़ी इज्जत और कद्र करते हैं और इसी सबब से उनके खिलाफ किसी तरह की खुली कार्रवाई मैं हर्गिज नहीं कर सकता।

दारोगा०। मगर वैसा करने की जरूरत ही क्या है? निराले और सन्नाटे में जिस तरह पहिले यह काम किया था वैसे ही अब भी कर डालना।

दिग्वि०। मैं उनकी तिलिस्म सम्बन्धी जानकारी और ताकत से बहुत अच्छी तरह वाकिफहूं और इसीलिए दुबारा ऐसा करते डरताहूं। उस दफे मेरी कार्रवाई जरूर लग गई और मैं उन्हें कैद कर सका पर दूसरी दफे भी ऐसा हो सकेगा इसमें बहुत सन्देह है। एक बार धोखा खाई हुई वे जरूर इस बार अपनी हिफाजत का पूरा बन्दोबस्त करके ही यहां आवेंगी या रहेंगी और अगर मैं कोई कच्ची कार्रवाई कर गया तो बहुत मुमकिन है कि मैं पकड़ जाऊं और उनके तथा दरबार के सामने मुंह दिखाने लायक न रहूं, क्योंकि यों बड़ी शान्त और दयालु होने पर भी जब उन्हें क्रोध आता है तो वे बड़ी बेमुरौवत और कठोर हो जाती हैं और इस तरह की जली कटी सुनाती हैं कि जिसका नाम.....

नन्हों०। मगर आपने तो मुझसे कहा था कि बूआजी की गिरफ्तारी ऐसी चालाकी से आपने की है कि अगर कभी वे छूट कर वापस भी आ जांय और आपका सामना भी होजाय तो किसी तरह का इलजाम आप पर लगा न सकेंगी?

दिग्विजय०। जरूर मैं इसे अपने और उनके दुश्मनों की कार्रवाई बता सकता

हूं मगर वह (दारोगा की तरफ देखकर) तब आपके ऊपर पलट पड़ेंगी क्योंकि उनको अच्छी तरह मालूम है कि आज कल अजायबघर के मालिक आप ही हैं।

नन्हों० । और इस बात का पता तो उनको लग ही जायगा कि वे अजायबघर में बन्द की गई थीं।

दिग्वि०। कैसे न लगेगा? जिसने भी उनको छुड़ाया या उनके छूटने में मदद पहुंचाई होगी वह इस बात को भी जरूर जाहिर कर देगा, और फिर वे खुद भी तिलिस्म के कोने कोने और छिपी से छिपी जगह से वाकिफ हैं : स्वयं मुझसे एक बार उन्होंने कहा था कि अजायबघर के अन्दर एक इतना बड़ा और अद्भुत तिलिस्म है जिसकी टक्कर का इस दुनिया में कोई नहीं, तब भला वे पहिचानेंगी नहीं कि वे कहाँ पर बन्द की गई हैं!

नन्हों०। और जोगी बाबा की समाधि वाले मामले में उनको आप पर एक बार पहिले शक हो भी चुका है।

दारोगा०। उनको एक बार नहीं सौ बार शक होता रहे, साबित वे कुछ भी नहीं कर सकतीं और न मैं उनसे जरा भी डरता ही हूं। अगर तुमको यह कहनेसे पनाह मिलती हो कि उनको कैद करना उनके दुश्मनों की अथवा मेरी कार्रवाई थी तो बेखटके तुम वैसा कह दो मैं अपनी फिक्र आप कर लूंगा।

दिग्वि०। मगर वैसा करके भी क्या मेरी जान बचेगी! उनका शक्की मिजाज तरह तरह की बातें सोचेगा और चाहे वे मुझ पर कुछ रहम भी कर जांय पर इसमें तो कोई शक ही नहीं कि वे अपनी हिफाजत का ऐसा बन्दोबस्त करेंगी कि फिर दुबारा उनके खिलाफ कोई कार्रवाई करना नामुमकिन हो जायगा।

नन्हों०। अच्छा मुझे एक बात सूझती है, अगर ऐसा किया जायतो कैसा हो!

नन्हों धीरे धीरे उन दोनों आदमियों से कुछ कहने लगी।

बात करते करते यकायक नन्हों चौंकी। कमरेके बाहर कहींसे किसी चिड़िया के बोलने की आवाज आकर उसके कानों में पड़ी थी। वह रुक गई और गौर करने लगी। दूसरी बार वही आवाज आई और वह चमक कर बोल उठी, "जरूर कोई नई बात हुई है, जानकी मुझे बुला रही है, आप लोग जरा सा ठहरें, मैं अभी दरियाफ्त करके आई कि क्या बात है!"

कमरे का दर्वाजा खोल नन्हों बाहर निकल गई, दरवाजा पुनः ज्यों का त्यों भिड़का दिया और आगे बढ़ी। कुछ ही दूर गई होगी कि पेड़ों के झुरमुट के बाहर निकलती हुई एक काली शक्ल उसके सामने आई जिसे देखतेही उसने पूछा,

"क्यों जानकी, क्या बात है! सब खैरियत है तो!" काली शक्ल ने जवाब दिया, "खैरियत नहीं है, कुछ न कुछ जरूर गड़बड़ी है, पर क्या मामला है सो ठीक ठीक नहीं कह सकती। अभी अभी थोड़ी देर हुई बूआजी ने अपने कमरे का दर्वाजा खोल मुझको आवाज दी। मैं हड़बड़ा के उठी और उनके पास चली ही थी कि उन्होंने फिर कमरे के अन्दर होकर दर्वाजा बन्द कर लिया, मैंने कई बार पुकारा, दर्वाजे को धक्का दिया, और पूछा कि 'क्या मेरी कोई जरूरत है'? पर फिर उनकी कोई आवाज न आई और न कोई जवाब ही मिला, मगर भीतर से एक बार किसीके चीखनेकी हलकी आवाज जरूर आई जो किसकी थी मैं कह नहीं सकती, देर तक कोशिश की पर दर्वाजा न खुला इसलिये मैं घबराई हुई इधर आ गई कि आपको खबर कर दूं। कदाचित कुछ वैसी ही बात हो जिसके बारे में आपने मुझे आगाह किया था।"

नन्हों जरा देर तक कुछ सोचती रही इसके बाद बोली, "तुमने बहुत अच्छा किया जो मुझको खबर कर दी। मैं अभी आती हूं, तुम चल कर अपने ठिकाने रहो और उनके कमरे से कोई आहट आवे तो उस पर भी ख्याल रक्खो, मुझको ज्यादा देर न लगेगी।"

"जो हुक्म" कह कर लौंडी पीछे घूम गई और नन्हों वापस लौट कर उसी कमरे में पहुंची। देखते ही दिग्विजयसिंह ने पूछा, "क्या बात है?" लौंडी से जो कुछ सुना था कहने बाद नन्हों बोली, "आप दोनों सलाह कीजिए कि अब क्या करना चाहिये, और मैं तब से मैना बन कर तैयार होती हूं। जरूर कोई बात या तो हुई या होना चाहती है और मेरा वहाँ मौजूद रहना बहुत जरूरी है।"

साथ की एक छोटी कोठरी का दर्वाजा खोल कर नन्हों उसके अन्दर चली गई और दिग्विजयसिंह तथा दारोगा आपस में सलाह करने लगे। जिस समय मैना बनी हुई नन्हों उस कोठरी के बाहर हुई उन दोनों की बातें समाप्त हो चुकी थीं और इसको देखते ही दिग्विजयसिंह ने कहा, "जो तुमने कहा वही हम दोनों की भी राय हुई है। तुम बाहरी रास्ते से बूआजी के कमरे में जाओ मैं तिलिस्मी राह से वहाँ पहुंचता हूं, तथा बाबाजी भी मेरे साथ रहेंगे।"

नन्हों बोली, "बाबाजी भी रहेंगे तो बहुत ही ठीक होगा, अच्छा तो मैं चली आप लोग भी जल्द ही आइये, मेरा दिल कह रहा है कि कोई घटना हुआ ही चाहती है।"

कमरे के बाहर निकल कर लपकती हुई मैना महल के उस हिस्से की तरफ

चली जिधर देवीरानी रहती थीं और बहुत जल्द ही वहाँ पहुंच गई। उसका अनुमान था कि जरूर वहाँ कुछ न कुछ गड़बड़ी मची होगी और शायद शोर गुल भी मच रहा हो पर इसके खिलाफ वहाँ हर तरह से सन्नाटा था जिससे उसे कुछ आश्चर्य हुआ। दालानों और कमरों को पार करती हुई वह उस जगह तक पहुँच गई जहाँ देवीरानी रहती थीं और कहीं किसी जागती हुई लौंडी से उसकी भेंट न हुई पर देवीरानी के कमरे के बाहर वही लौंडी अपने बिस्तर पर बैठी हुई जरूर दिखी जिसने उसको होशियार किया था ; इस जगह मद्धिम रोशनी हो रही थी जिसकी मदद से नन्हों ने एक बार देवीरानी के कमरेके पास तक जाकर दर्वाजे के बाहर से आहट ली और तब उस लौंडी के पास आकर बैठती हुई बोली, "क्या खबर है ? कोई आवाज भीतर से आई ?" लौंडी ने जवाब दिया, "सिर्फ एक दफे कुछ ऐसी आवाज आई मानों कोई खिड़की या दर्वाजा खोला गया हो, मगर फिर और कोई आहट न मिली और न किसी ने मुझको पुकारा ही ?" नन्हों ने पूछा, "और बूआजी का दर्वाजा भीतर से बन्द ही है ?" लौंडी बोली, "हाँ।"

यकायक ऐसी आवाज आई मानों बूआजी की कोठरी के दर्वाजे की साँकल भीतर से खोली गई हो। मैना बनी हुई नन्हों आवाज सुनते ही चमक कर उठी और दर्वाजे के पास पहुँची, कुछ देर आहट लेती रही और जब कोई शककी बात न पाई तो धीरे से दर्वाजे को धक्का दिया। धक्का देते ही पल्ला खुल गया और भीतर से किसी ने पुकार कर कहा, "कौन है, मैना ? भीतर आ !" हिचकती हुई नन्हों दर्वाजा पूरा खोल कमरेके अन्दर चली गई, उसी आवाज ने फिर कहा, "दर्वाजा बन्द करके साँकल लगा दे और चिराग तेज करती हुई इधर मेरे पास आ।" नन्हों एक बार तो जरा हिचकी, पर फिर तुरन्त ही सम्हली और "जो हुक्म" कहती चिराग के पास पहुँची। उसको तेज करके उसने एक बार कमरे में चारों तरफ देखा, कहीं कोई नई या घबराहट पैदा करने वाली बात न पाई, कमरे की हालत साबिक दस्तूर थी और बूआजी अभी अभी अपनी पलंगड़ी पर उठ कर बैठती हुई अँगड़ाई ले रही थीं। नन्हों ने कमरे का दर्वाजा बन्द कर दिया और तब बूआजी के पास पहुँची मगर दर्वाजा बन्द करते करते उसने किसी तरह का गुप्त इशारा बाहर वाली लौंडी जानकी से जरूर कर दिया था।

देवीरानी पलंगड़ी पर चैतन्य होकर बैठ गई थीं। नन्हों यानी नकली मैना के सामने आते ही उन्होंने कहा, "मैना, यह क्या बात है, यहाँ की हालत मैं बिलकुल बदली हुई पा रही हूं! क्या तुझे खबर नहीं, या तू भी मेरे दुश्मनों से मिल गई है?"

और अब पहली बार नन्हों का ध्यान इस बात पर गया कि देवीरानी की आवाज में फर्क है। यह उस लीला लौंडी की आवाज नहीं थी जो देवीरानी की शक्ल बनाकर वहाँ बैठाई गई थी। यद्यपि लीला की आवाज देवीरानी की आवाज से बहुत कुछ मिलती जुलती थी और शायद इसी सबब से वह उनके भेष में वहाँ बैठाई गई थी पर फिर भी आवाज में कुछ अन्तर तो था ही जो इस वक्त धूर्त नन्हों के कान में खटका और उसके मन ने चट कह दिया कि 'यह तो लीला की आवाज नहीं है बल्कि अगर मेरे कान मुझको धोखा नहीं दे रहे हैं तो असली देवीरानी की आवाज है, तब क्या वे यहाँ आ पहुँचीं' !

क्या जवाब दे या क्या करे इसको सोचती हुई नन्हों जरा सा ही रुकी थीकि देवीरानी ने चमक कर गौर से उसकी तरफ देखा और तब कहा-"हैं, क्या बात है ! तुझमें यह हिचक क्यों ! अच्छा इशारा बता पहिले।" साथ ही उनका हाथ पलंगड़ी के नीचे की तरफ गया और उन्होंने एक पतली छड़ी जो बाँस की सी मालूम होती थी और वहीं पड़ी थी उठा ली।

नन्हों का कलेजा जोर से धड़क उठा। यह इशारा क्या और कैसा ! क्या बूआजी ने मैना के लिए कोई गुप्त इशारा भी मुकर्रर किया हुआ था ! यह बात तो उसे नहीं मालूम थी। फिर भी देरी करना और भी खराब होता यह सोच फौरन ही उसने जवाब दिया—"बूआजी इशारा तो मैं भूल गई ! मेरे साथ ऐसी सख्ती और बेदर्दी की गई है कि उसकी तकलीफों ने मेरा दिल और दिमाग एक दम बिगाड़ दिया है।"

बूआजी ने कड़े लहजे में कहा, "इसका क्या मतलब! क्या किसी ने तेरे साथ भी कोई जबर्दस्ती की !" नन्हों ने जवाब दिया, "जी हाँ, बहुत भारी, और फिर मैं यहाँ थी ही कहाँ ! इतने दिनों के बाद आज ही तो छूट कर यहाँ आई हूं और यहाँ की बदली हुई हालत देख कर खुद ताज्जुब कर रही थी कि यह आखिर हो क्या गया है और बूआजी अचानक ऐसी बदल क्यों गई हैं कि जो अभी तक कभी नहीं किया सो बर्ताव अब मेरे साथ कर रही हैं यानी मुझे बात बात पर गाली देने लगती हैं !"

बूआजी ताज्जुब में डूबी हुई कुछ देर तक नकली मैना यानी नन्हों की तरफ देखती रहीं जिसकी चलती फिरती बातें बड़े बड़े चालाकों को उल्लू बना सकती थीं, इसके बाद वे बोलीं, "जान पड़ता है मेरी तरह उन लोगोंने तुझको भी कब्जे में करने की कोशिश की। जरूर तेरी बातें सुन कर मुझे कुछ न कुछ भेद लग

जायगा। तू इधर आ और मेरे पास बैठ, मगर पहिले जाकर दर्वाजे की साँकल बन्द कर दे जिसे लगाना तू भूल आई है।"

दरवाजा बन्द करते हुए नन्हों ने जान बूझ कर ही साँकल नहीं लगाई थी ताकि भाग निकलने का रास्ता कायम रहे, पर बूआजी के रंग ढंग ने उसको बताया कि वे उसके चकमे में फँस रही हैं अस्तु उसको कुछ कुछ ढाढ़स हो चली थी, उसने उठ कर दर्वाजे की साँकल भीतर से बन्द की और बूआजी की पलगड़ी के पास आकर बैठ ही रही थी कि बूआजी ने फिर कहा, "पहिले उस कोने में जा और पानी से अपना मुंह खूब अच्छी तरह धोकर तब मेरे पास आ ताकि विश्वास हो जाय कि मुझे धोखा नहीं दे रही है।"

क्या करे ! पानी के पास जाय या कमरे की साँकल खोल एक दम बाहर ही भाग जाय? यह सब सोचती हुई नन्हों जरा सा ठमकी ही थी कि बूआजी डाँट कर बोलीं, "तू मुँह धोने से जी चुराती है ! तब जरूर तू धोखेबाज है और मेरी लौंडी मैना हर्गिज नहीं है !!" कहती कहती वे पलगड़ी से उठ कर जमीन पर आ गईं और साथ ही डरी हुई नन्हों दो कदम पीछे की तरफ हटी। बड़ी तेजी से उसके मन में यह खयाल घूम गया कि ये जरूर असली देवीरानी हैं और इनके सामने उसकी कोई चालाकी न चलेगी, अब उसका कमरे के बाहर ही हो जाना मुनासिब है। उसका हाथ कमर पर गया जहाँ एक तेज छुरी वह हमेशा छिपाये रहा करती थी और उसने एक कदम और दर्वाजे की तरफ बढ़ाया पर तभी बूआजी तड़प कर बोलीं, "अच्छा यह बात है! हथियार भी है तेरे पास!!अच्छा निकाल कर मेरे सामने कर, क्या है तेरी कमर में ?" कहते कहते बूआजी ने अपने हाथ वाली छड़ी की नोक नन्हों के उस हाथ से छुला दी जो उसकी कमर के पास पहुँच गया था।

छड़ी की नोक का छुलाना था कि नन्हों को ऐसा मालूम हुआ मानों उसके हाथ से कोई तपा हुआ लाल लोहा छुला दिया गया हो। उसके मुँह से एक चीख निकल गई और वह हाथ जिसने छुरी की मूठ पकड़ली थी बेबसी के साथ झटका खाकर छटक गया जिसके साथ ही चमचमाती हुई छुरी कमर से निकल कर फर्श पर जा गिरी। छड़ी जिस जगह छू गई थी वहाँ ऐसा भयानक दर्द हो रहा था कि नन्हों बर्दाश्त न कर सकी और दूसरे हाथ से उस जगह को जोर से थाम कर जमीन पर बैठ गई,पर बूआजी ने उसकी तरफ बिलकुल खयाल न किया और आगे बढ़ कर वह छुरी जमीन से उठा ली। तेजी से चल कर वे चिराग के पास

पहुँची और उसकी रोशनी में छुरी को उलट पलट कर अच्छी तरह देखा, मूठ पर कोई नाम खुदा हुआ देख गौर करके उसे पढ़ा और तब बोलीं, "नन्हों ! अक्खाह, तो आप बीबी नन्हों हैं !! मुझे भी यही गुमान था। अच्छा तो अब आप भाग निकलने या मुझे कोई नुकसान पहुँचा सकने का खयाल तो बिलकुल छोड़ दीजिये और चुपचाप जाकर मुँह धो डालिये, नहीं तो....!"

कहते कहते देवीरानी ने एक बार पुनः अपनी छड़ी की नोंक नन्हों के बदन से छुलाई। उसका छूना था कि नन्हों के मुँह से पुनः चीख निकल पड़ी और वह तड़पकर बोली, "मेरी जान बख्श दीजिये रानीजी ! इस तरह तड़पा तड़पा कर मत मारिये! जो जो आप कहिये मैं करने को तैयार हूं पर वह छड़ी अब मेरे बदन से न लगाइये !" देवीरानी बोलीं, "अच्छा तो फिर उठ और जा के अच्छी तरह से अपना मुँह धो !"

काँपती काँपती नन्हों बोली, "आपका हुक्म हो तो मैं मुँह धोने को तैयार हूं पर मेरा हाथ एक दम जल रहा है और मेरे काबू में नहीं है, मैं मंजूर करती हूं कि मैं नन्हों हूं और जो जो बात भी आप पूछें सभी बतलाने को भी तैयार हूं पर भगवान के लिये अब उस छड़ी को मुझसे दूर रखिये।" बूआजी ने कहा, "जो जो मैं पूछूंगी तू सही सही जवाब देगी ? या फिर कोई धोखा देगी?" नन्हों ने जवाब दिया, "मैं सब कुछ एक दम सही सही बता दूंगी,जरा भी धोखा देने की कोशिश न करूंगी !" बूआजी यह सुन पलगड़ी की तरफ बढ़ती हुई बोलीं, "अच्छा तो इधर आ और जो कुछ मैं पूछती हूं उसका जवाब दे।"

मगर यकायक बूआजी पुनः चमकीं और रुक गईं। कमरे की छत के साथ सोने की तारों का बना एक बहुत ही सुन्दर पिंजड़ा लटक रहा था जिसमें मीनाकारी के काम की बनी हुई एक नकली चिड़िया भी बैठी हुई दिखलाई गई थी। अब तक नन्हों ने सैकड़ों बार उसको देखा था पर सिवाय एक कीमती खिलौना समझने के और कोई ध्यान उस पर न दिया था, पर इस समय यह देख उसके ताज्जुब का हद न रहा कि यकायक इस चिड़िया ने अपने पंख फटकटाए और दो बार चहक उठी, आवाज बड़ी ही सुरीली मगर बहुत ही हलकी थी फिर भी यह बात निहायत ताज्जुबकीथी और नन्हों बारबार कभीउसपिंजड़े औरकभीबूआजी की तरफ देखने लगी जिन पर इस आवाज ने अजीब असर किया था ! उन्होंने अपनी आँखें बन्द कर ली थीं और गम्भीर भाव से कुछ सोच रही थीं। पर तुरन्त ही उन्होंने आँखें खोलीं और धीरेसे कहा, "जरूर यह दिग्विजय होगा,मगर उसके साथ कौन है ?" अपने हाथ की छड़ी उन्होंने नन्हों की तरफ बढ़ाई और डपटकर

पूछा, "सच बता, यहाँ आने के पहिले तू कहाँ थी और कौन कौन तेरे पास था ?"

छड़ी के खौफनाक असर से नन्हों इस कदर डर गई थी कि चमक कर जरा दूर हट गई और हाथ जोड़ कर बोली, "मैं सब कुछ बता देती हूं पर दया करके अपनी छड़ी को मुझसे हटाए रखिये ! मैं पुराने महल में थी और उसी जगह महाराजा साहब और बाबाजी भी थे।" देवीरानी ने पूछा, "बाबाजी कौन ? जमानिया का दारोगा ?" नन्हों ने सिर हिला कर कहा, "जी हाँ।" देवीरानी एक सायत तक कुछ सोचती रहीं तब बोलीं, "तेरा मुझको डर तो नहीं है पर शायद तू बेमौके पीछे से मुझ पर वार कर बैठे इस लिए तेरी तरफ से निश्चिन्त ही हो जाना उचित है, चल इधर आ।" कहती हुई वे उस कमरे की दीवारों में बनी कितनी ही आलमारियों में से एक के पास गईं और उसका पल्ला खोल के बोलीं, "इसके अन्दर जाकर खड़ी हो।" नन्हों हिचकी, मगर 'ना' कहने की भी हिम्मत उसमें न थी अस्तु वह डरती और काँपतीहुई उस आलमारीके पास पहुँची, आलमारी खूब लंबी चौड़ी और इस लायकथीकि एक ही नहीं बल्कि दो तीन आदमी उसके अन्दर खड़े हो सकते थे। नन्हों को भीतर कर बूआजी ने दोनों पल्ले बन्द कर दिये और तब बगल की दीवार में लगी एक खूंटीको किसी खास ढंग से उमेठा, नन्हों को अपने पैरों के नीचे की जमीन कुछ हिलती सी जान पड़ी, वह घबराई और कुछ बोलना ही चाहती थी पर मौका न मिला। आलमारी का फर्श उसको लिये हुए इतनी तेजी के साथ नीचे को उतर गया कि उसके मुँह से निकलती हुई चीख की आवाज भी पूरी तरह बाहर न हो सकी।

देवीरानी अब इस आलमारी के पास से हटीं और एक दूसरी आलमारी के पास जाकर खड़ी हुईं। एक बार उनकी निगाह फिर उसी सुनहले पिंजड़े की तरफ उठी। उनके देखते देखते अन्दर वाली चिड़िया ने दो बार अपनी गर्दन धीरे धीरे इधर से उधर को घुमाई। देवीरानी के मुंह से निकला, "ठीक है तो अब यह रास्ता बन्द कर देना चाहिये।" पहिली की तरह इस आलमारी के बगल में भी खूंटी थी, जिस पर हाथ रख देवीरानी ने कुछ किया और तब पीछे हट कर अपनी चारपाई के पास आ गईं। इसी समय उस आलमारी का पल्ला जरा सा हिला और तब धीरे से थोड़ा खुल गया। साथ ही बूआजी ने पुकार कर कहा, "ठीक है तुम भी आ जाओ, अब वहाँ छिपने की जरूरत नहीं, बाहर निकल आओ, उस रास्ते को मैंने बन्द कर दिया और अब तुम उस तरफ से वापस नहीं लौट सकते जिधर से आए हो।" आलमारी के अन्दर से न तो कोई आवाज आई

और न फिर उसके पल्ले में किसी तरह की जुम्बिश ही हुई। देवीरानी कुछ देर तक राह देखती रहीं, तब आगेबढ़ उन्होंने उसके दोनों पल्ले पूरी तरह खोल दिये।

आलमारी के भीतर दो आदमी खड़े थे जिनमें एक था दिग्विजय और दूसरा दारोगा। देवीरानी ने आगे बढ़कर गौर से उसकी तरफ देखा तब कहा, "ठीक है जो मैं सोचती थी वही बात है, पर तुम दोनों अब आलमारी में व्यर्थ खड़े न रहो। अब इस रास्ते से वापस लौट जानेकी उम्मीद न रक्खो क्योंकि रास्ता मैंने बन्द कर दिया। बाहर निकल आओ और जो कुछ मैं पूछतीहूं उसका जवाबदो।"

दिग्विजयसिंह तो चुपचाप खड़ा रहा मगर दारोगाने देवीरानी की बात सुन पीछे घूम आलमारी की दीवार के साथ कुछ किया पर नतीजा कुछ न निकला। बूआजी यह देख हंसकर बोलीं, "शर्माजी, यहां मेरी अमलदारी है; और मेरे घर में आपकी कारीगरी न चलेगी ! अब आप उधर से लौट जाने की उम्मीद छोड़ दीजिये और बाहर निकल आइये। अब (हाथ से कमरे के दरवाजे को बता कर) आपको उस रास्ते से ही बाहर जाना पड़ेगा। (दिग्विजय की तरफ देख कर) तू अभी तक खड़ा है ! मैं कह रही हूं न कि बाहर निकल कर इधर आ और मेरी बातों का जवाब दे !!"

बूआजी ने दिग्विजय को वह डाँट बताई कि वह चुपचौप आलमारीकेबाहर निकल उनके सामने सिर झुकाए आकर खड़ा हो गया, मगर दारोगा साहब अब भी अपनी कारीगरी में लगे थे और आलमारी की बगली दीवारों के साथ कुछ कर रहे थे। देवीरानी ने यह देख आगे बढ़ अपने हाथ वाली छड़ी उनके पैर से छुला दी और कहा, "कम्बख्त, मैं कह रही हूं न कि बाहर निकल !"

छड़ी का छूना था कि दारोगा को तो ऐसा मालूम हुआ मानों उसके पैर में बीसों बिच्छुओं ने एक साथ डंक मार दिया हो। वह बर्दाश्त न कर सका और उसके मुंह से बेतहाशा एक चीख निकल पड़ी, फिर भी वह आलमारी के बाहर न निकला, बड़ी कोशिश करके उसने अपने को सम्हाला और पलट कर दिग्विजय से कहा, "एक बुढ़िया से डर कर लड़कों की तरह सिर झुकाए क्या खड़े हो ! इसी हिम्मत पर तिलिस्म के राजा बनोगे ! यह बुड्ढी बेतरह बढ़ चढ़कर बोल रही है, पहिले करो इसी को काबू में !"

दारोगा की डाँट सुन दिग्विजय ने सिर ऊपर किया, उसकी गई हुई हिम्मत कुछ लौटी और उसने कोई चीज निकालने के लिए अपने कपड़ों के अन्दर हाथ डाला मगर देवीरानी इसके लिए तैयार थीं; उन्होंने झपटकर अपने हाथ की

छड़ी दिग्विजय की बांह से छुला दी और कुछ कसकर दबाया, साथ ही दिग्विजय के मुंह से जोर की चीख निकल गई और वह दूसरे हाथ से अपनी बांह थामे हुए उसी जगह जमीन पर बैठ गया। बूआजी अब दारोगा की तरफ घूमीं, देखा कि उसके हाथ में एक गोला है और वह आलमारी से बाहर को झुक उनके ऊपर शायद उसे फेंकना ही चाहता है, लपक कर देवीरानी ने हाथ वाली छड़ी का एक भरपूर हाथ उसको दिया, जिसकी तकलीफ इस कदर कारी पहुँची कि दारोगा के मुँह से चीख पर चीख निकलने लगी, उसके हाथ वाला गेंद लुढ़ककर एक तरफ गिर गया और वह खुद भी लुण्ड मुण्ड आलमारी के बाहर गिर कर जमीन पर लोटने लग गया। गुस्से में भरी देवीरानी ने पुनः एक हाथ छड़ी का दिया और कहा, "सूअर के बच्चे! मुझ पर भी अपनी दारोगाई दिखाने आया है!!" इस बार तो दारोगा की यह हालत हो गई कि मानों उसे लकवा मार गया हो। उसका बदन बेतरह कांपने लगा, हाथ पांव भी ऐंठ गए और जुबान मुंह के बाहर निकल पड़ी, गले से एक अजीब तरह का "गों गों" शब्द निकलने लगा। गुस्से से दांत पीसती हुई देवीरानी ने कहा, "निकाल एकाध गोला और !!"

मगर दारोगा इस समय मुर्दे से भी बदतर हो रहा था। जान पड़ता था कि अब उसका दम निकला, अब दम निकला। देवीरानी कुछ देर तक उसकी हालत देखती रहीं, तब दिग्विजय की तरफ बढ़ीं और छड़ी उसकी तरफ बढ़ा कर बोलीं, "सीधे से मेरी बातों का जवाब देगा या लगाऊँ दो छड़ी तुझको भी!!" डर से कांपते हुए दिग्विजय के मुंह से कोई आवाज न निकली। देवीरानी कुछ देर तक उसकी तरफ देखती रहीं, तब अपनी छड़ी उसे दिखाती हुई बोलीं, "इस मामूली सी छड़ी में वह ताकत है कि मैं अगर चाहूं तो जहाँ तू खड़ा है वहीं पर तुझे भस्म कर डालूँ और तेरी राख का भी पता न लगे ! कम्बख्त, तेरी इतनी हिम्मत कि तू मुझ पर ही वार करने को तैयार हो गया ! क्या तू मेरी ताकत को भूल गया, या इस बात को भूल गया कि यह राज्य और यह तिलिस्म तेरा नहीं मेरा है और मेरा रहेगा! नालायक, तेरे बाप की तो कभी हिम्मत न पड़ी कि मेरी तरफ आँख उठा कर देखे, और तेरी यह मजाल हो गई कि तूने मुझे कैद में डाल दिया और मनमानी करने लगा !!"

डरे और दुबके हुए दिग्विजयके मुँह से एक शब्द न निकला, गुस्से से कांपती हुई देवीरानी कुछ देर उसकी तरफ देखती रहीं, तब बोलीं, "जी तो चाहता है कि तुझको इसी जगह जला कर राख कर दूं और तेरी जगह तेरे लड़के को राजा

बना दूं पर छोड़े देती हूं। अब भी सम्हल जा और सीधे रास्ते चल। (दारोगा की तरफ बता कर) ऐसे ऐसे हरामजादों का साथ छोड़ और भले आदमियों की संगत करके ठीक तरह से राज्य का काम चला, नहीं तो तेरे दुश्मनों के हाथों से तेरी जो दुर्गति होगी सो तो होगी ही सब से पहिले मैं ही तुझे बर्बाद कर के छोड़ दूंगी ! और सुन रख, आज से फिर कभी अपनी मनहूस सूरत मुझको मत दिखाइयो और न महल के इन हिस्सों में आने की ही हिम्मत कीजियो। अगर फिर कभी इधर दिखाई पड़ा या मेरे सामने आया तो तुझे जिन्दा न छोड़ूंगी !!"

गुस्से में भरी हुई देवीरानी ने और भी न जाने कितनी ही बातें दिग्विजयको सुनाईं और वह चुपचाप बैठा बैठा सुनता रहा, जरा सा एक लफ्ज भी उसकी जुबान से न निकला। उसे बिलकुल ही दब गया हुआ पा धीरे धीरे देवीरानी का गुस्सा कम हुआ और वे उसकी तरफ से पलटकर दारोगा की तरफ घूमीं जिसकी तकलीफ इस बीच में बहुत कुछ कम हो गई थी और जो जरा सम्हल कर अब उठ कर बैठ जाने की कोशिश कर रहा था। देवीरानी उसके पास जाकर बोलीं, "निमकहराम, शैतानके बच्चे, मुझ पर ही अपनी ताकत आजमाई करने चला था! घर वालों को खाया, जमानिया वालों को खाया, अब रोहतासगढ़ को तहस नहस करने आया है! जी तो चाहता है कि इसी छड़ी से तेरी दोनों आँखें फोड़कर तुझे कुत्तों के आगे डलवा दूं। तेरी इतनी बड़ी हिम्मत कि मुझे बन्द करके तिलिस्म का मालिक बनने चला था? सुन और याद रख, आज से फिर कभी मेरे सामने आने का नाम भी न लीजियो, और साथ ही साथ इस किले में भी पैर न रखियो। अगर मैंने कभी सुन भी लिया कि तू इस जगह आया है तो तेरी वह हालत कर दूंगी कि कोढ़ियों को भी तुझ पर तरस आवेगा। और भी एक बात सुन ले, मैं इस वक्त तुझे इस लिये जिन्दा नहीं छोड़ रही हूं कि मुझे तुझ पर रहम आ गया है बल्कि इस लिए छोड़ रही हूं कि तेरे हाथ से एक काम होने वाला है और इसलिए जाने देती हूं कि तेरी सजा इस तिलिस्म के बनाने वाले ही मुकर्रर कर गए हैं जिस पर कब्जा करने की तुझको इतना लालच है कि इसके लिए तू बुरे से बुरे काम करते नहीं हिचक रहा है। जल्दी ही तू बुरे कामों का नतीजा बन कर दुनिया के सामने आने वाला है, इसीलिए इस समय मैं तुझको यहाँ से सही सलामत जाने दे रही हूं, उठ खड़ा हो, वह दर्वाजा खोल, और हटा ले जा अपनी नापाक सूरत को मेरे सामने से, जो तेरे गुरगे यहाँ मौजूद हैं उनको भी लेता जा अपने साथ, नहीं तो याद रखियो कि उनमें से हर एक के मुंह से तेरा

भेद निकलवा लूंगी—मेरी छड़ी में इतनी ताकत है ! (दिग्विजय की तरफ घूम कर) तू भी निकल जा मेरे कमरे से, और तेरे जो ऐयार यहाँ पर हों उनको भी अपने साथ लेता जा, याद रख कि आज से मुझे अपना काला मुंह कभी न दिखाइयो, अगर फिर कभी इस तरफ कदम रक्खा तो जिन्दा न छोड़ूंगी !"

गुस्से में भरी देवीरानी कभी दिग्विजय और कभी दारोगा की तरफ खड़ी देखती रहीं पर फिर धीरे धीरे उन्होंने अपने ऊपर काबू किया और बोलीं, "दोनों कम्बख्तों उठो, और अपने साथियों को लिए दिए यहाँ से निकल जाओ, मैं अभी लौट कर आती हूं लौटने पर कोई भी नापाक सूरत अपने सामने न देखूं।"

देवीरानी उस आलमारी के पास गईं जिसके अन्दर उन्होंने नन्हों को बन्द किया था, उसका पल्ला खोला और उसके अन्दर चली गईं, पल्ले को पुनः बन्द कर लिया, कमरे में अब केवल वे ही दोनों दुष्ट रह गए, कुछ देर बाद वे दोनों भी उठे, दारोगा ने एक बार दाँत पीस कर उस तरफ देखा, जिधर देवीरानी गई थीं, तब हाथ का सहारा देकर दिग्विजय को उठाया, दर्वाजे की साँकल खोल दोनों कमरे के बाहर निकल गए, कमरे में एक दम सन्नाटा हो गया।

तीसरा बयान

जान पड़ता है शेरसिंह ने इस खण्डहरको ही अपना अड्डा या डेरा बना लिया है और यहीं अपना एकान्त जीवन बिता रहेहैं क्योंकि हम न तो उनको कहीं आते जाते देखते हैं न कोई उनसे मिलने जुलने ही यहाँ आता है। सुबह शाम दो एक घंटे आस पास के जंगलों में घूमना, दोपहर को अपने हाथ ही से भोजन बना कर खाने के बाद कुछ देर आराम करना और रात भी उसी खण्डहरके किसी दालान में बिता देना, बस यही उनकी दिनचर्या है, हाँ बाकी का वक्त वे उस तहखाने में बन्द हो उस तिलिस्मी किताब को खूब गौर और सावधानी से जरूर पढ़ते हैं, जिसकी उन्होंने कई आवृत्ति कर डाली और जिसकी मदद से कोई भारी काम कर सकने की उम्मीद उनको बराबर बढ़ती जाती है।

दोपहर बीत चुकी है और शेरसिंह सब कामों से निश्चिन्त हो उस खंडहर के एक दालान में लेटे हुए हैं। नीचे तहखाने में बहुत ऊमस होने के कारण वे वह किताब लिए उसी जगह आ गए हैं और गमछा बिछा कर लेटे हुए उसके पन्ने इधर से उधर उलट रहे हैं, मगर जान पड़ता है उनका ध्यान उस पोथी की तरफ नहीं है और वे कोई दूसरी ही बात सोच रहे हैं क्योंकि कुछ ही देर बाद उन्होंने पुस्तक बन्द कर दी और उसे सिर के नीचे तथा माथे पर अपनी दोनों बाहें रख

किसी गंभीर चिन्ता में निमग्न हो गए।

बाहर जंगल से आती हुई एक तेज सीटी की आवाज ने यकायक उनका ध्यान भंग किया और वे कुछ चमक से गये। आंखें खोल उन्होंने चारो तरफ देखा और पुनः वैसी ही सीटी की आवाज सुनी। वे उठ कर बैठ गए और उसी समय किसी के भागते हुए आने और किसी दूसरे के डपट कर यह कहने की आवाज सुनी—"ठहर तो कम्बख्त, कहां भागता है !" जब तक वे उठें किसी के जोर से चीखने और "हाय, मार डाला !!" कहने की आवाज उनके कानों में पड़ी और तब पुनः एक चीख और धम्माके की आवाज आई। वे घबरा कर उठ खड़े हुए और लपके हुए खण्डहर के बाहर निकले। पहली ही निगाह ने बता दिया कि कोई गहरी दुर्घटना हुई है क्योंकि एक लड़का खून से लथपथ फाटक के बीचोंबीच में पड़ा हुआ था और कोई औरत उसके ऊपर झुकी हुई न जाने क्या कर रही थी। शेरसिंह को आते देख वह औरत तो उठ कर वहाँ से भागी मगर लड़का उसी तरह पड़ा ही रहा।

लपकते हुए शेरसिंह उसके पास पहुंचे। देखा तो वह बेहोश हो गया था और कई जगह लगे हुए घावों से निकल निकल कर खून उसके कपड़ों और जमीन पर फैल रहा था। शेरसिंह ने घूम कर एक बार उस औरत की तरफ देखा मगर वह दूर निकल गई थी, उसके पीछे जाने में शायद इस लड़के की जान पर बन आवे यह सोच वे रुके रह गए और लड़के की चोटों की अच्छी तरह जांच करने लगे, और इस समय उन्हें मालूम हुआ कि यह लड़का नहीं बल्कि कोई कमसिन औरत है जो मर्दाने कपड़े पहिने हुए है।

शेरसिंह का ताज्जुब और भी बढ़ा और वे सोच ही रहे थे कि क्या करें क्या न करें कि इसी समय उस लड़के (या औरत) ने आंखें खोल दीं और इनकी तरफ देखा। इन्होंने उससे पूछा, "तुम कौन हो और तुम्हारी यह गत किसने बनाई ?"

गम्भीर निगाह से कुछ देर एकटक शेरसिंह की तरफ देखने के बाद उसने जवाब दिया, "सरदार साहब, क्या आप मुझे पहिचान नहीं रहे हैं !" शेरसिंह चमके और गहरी आँखों से उसे देखकर बोले, "हैं, क्या तू छुट्टन लौंडी है * ?" जवाब में सिर हिला कर उसने कहा—"जी हाँ, और मुझे अफसोस है कि आप मुझे ऐसा भूल गए कि पहिचान तक न सके !!"

* पाठक एक बार पहिले भी यह नाम सुन चुके हैं। देखिये रोहतासमठ पहिला भाग, पांचवां बयान।

शेर० । इसका सबब यह है कि तेरे चेहरे पर रंग चढ़ा हुआ है और पोशाक भी मर्दानी है पर खैर अब मैंने तुझको अच्छी तरह पहिचान लिया, मगर इसके पहिले कि और बातें तुझसे पूछूं तू मुझे यह बता कि तुझे कहाँ चोट आई है ?

छुट्टन० । चोटें तो बहुत जगह हैं मगर गहरी नहीं हैं और मैं बहुत जल्द ठीक हो जाऊंगी... ।

शेर० । मगर मैंने तुझे बेहोश पाया था !

छुट्टन० । मैं उस चुड़ैल के डर के मारे बेहोश हो गई थी जिसने मुझको जख्मी किया था । ओह, बड़ी भयानक औरत है । किसी की जान लेने को तो कुछ समझती ही नहीं ! लेकिन अब आप मुझको जाने दीजिये, वह शैतान की खाला अगर मुझे आपसे बातें करते देख लेगी तो मुझको जिन्दा न छोड़ेगी !

यह कह कर छुट्टन उठने लगी मगर कमजोरी और घावों की तकलीफ के कारण उसे पुनः गश आ गया और वह गिरने लगी । शेरसिंह ने उसे सम्हाल कर लिटा दिया और जब कुछ देर बाद उसने आंखें खोलीं तो कहा, "जाने तो मैं तुझे अब देता नहीं । तू इस लायक भी नहीं है कि उठ सके, मगर मेरी कुछ समझ में नहीं आ रहा है कि यह क्या मामला है, वह औरत कौन है जिससे तू इस कदर डर रही है और रोहतासगढ़ से जाने के बाद अब तक तू कहाँ थी ?"

छुट्टन० । मुझे बहुत कमजोरी मालूम हो रही है इससे खुलासा फिर कभी कहूंगी, मुख्तसर यही है कि जब आप मुझसे नाराज हो गये तो मैंने भी रोहतासगढ़ छोड़ दिया और इधर उधर नौकरी की तलाश में घूमती फिरती उस औरत के पास पहुंच उसकी नौकरी कर ली । आप जानते ही हैं कि मुझे थोड़ी बहुत ऐयारी आती है, अतएव उसने मुझे अपनी ऐयारा बना लिया और तरह तरह के काम लेने लगी । मगर मैं नहीं जानती थी कि वह इतनी बड़ी पिशाची है, जब उसका काम करने लगी तब उसका भेद खुला ! आज ही की बात देखिये, एक जरा सी गलती पर उसने मेरी यह गत कर डाली ।

शेर० । वह कौन है और कहाँ रहती है ?

छुट्टन० । यहाँ से दो कोस दक्खिन एक बड़ा सा तालाब है जिसके अन्दर एक मकान बना हुआ है । वह उसी मकानमें रहती है । उसके बीसों नौकर चाकर हैं जिनसे वह तरह तरह के काम लिया करती है और उसके पास दौलत भी भरपूर है जिसे वह दोनों हाथों से लुटाती है क्योंकि अगर कोई उसका कुछ काम बना दे तो वह खुश होकर उसको मुँहमांगा इनाम देती है मगर किसीसे अगर कोई काम

बिगड़ जाय तो उसके जान की दुश्मन हो जाती है । मेरी ही हालत देख लीजिये ।

शेर० । वह तालाब और मकान तो मेरा देखा हुआ है, मगर उसमें कोई रहता भी है यह बात मुझको नहीं मालूम थी* ।

छुट्टन० । केवल वह औरत ही नहीं बल्कि और भी कितने ही आदमी उस मकान में रहते हैं मगर बहुत गुप्त रीति से । यकायक देखने से यही जान पड़ता है कि वह मकान खाली ही पड़ा है ।

शेर० । खैर होगा, मैं इसकी जांच करूँगा, मगर तुमको उसने किस कसूर पर यह सजा दी ?

जवाब देने में छुट्टन को कुछ हिचकिचाता पा शेरसिंह उसे दिलासा देते हुए बोले, "डरो नहीं और जो कुछ हो साफ साफ कहो । किसी बात से बिल्कुल मत घबराओ ।" छुट्टन रुकती रुकती बोली, "उसने मुझको आपके ऊपर जासूसी करने का काम दिया था मगर आप उसके कई आदमियों को मार चुके हैं इसलिए मैं यहाँ आते या आपका सामना करते डरती थी..."

शेर० । (ताज्जुब से) मैं उसके कई आदमियों को मार चुका हूं !

छुट्टन० । जी हाँ, बीरूसिंह की लाश अभी तक उस नाले में पड़ी हुई है !

शेर० । नाले में किसी की लाश पड़ी हुई है और उसको मैंने मारा है ?

छुट्टन० । हाँ बेशक ।

शेर० । नहीं नहीं, न तो मैंने किसी को मारा ही है और न मुझे यही पता है कि नाले में किसी की लाश पड़ी हुई है ।

छुट्टन० । तब उस बेचारे की जान भी उसी कम्बख्त ने ली होगी । पूरी राक्षसी है राक्षसी ! आज मुझसे पूछने लगी कि बता शेरसिंह दोपहर में कहाँ गया था...

शेर० । (चौंक कर) मेरा नाम लिया ?

छुट्टन० । जी हाँ, वह आपको पूरी तरह जानती है ।

शेर० । अच्छा तब क्या हुआ ?

छुट्टन० । मैंने कहा—"कहीं तो नहीं, दुपहरिया भर उसी दालान में लेटे कोई किताब पढ़ रहे थे और अभी अभी सोए हैं", मगर वह कम्बख्त काहे को मानने को थी, मुझ पर टूट पड़ी और यह कह कर कि तू 'झूठ बोलती है और मालूम होता है दुश्मन से मिल गई है, शेरसिंह जरूर कहीं गया था' मेरी यह हालत

* इस तालाब और मकान का खुलासा हाल चन्द्रकान्ता सन्तति में पाठक पढ़ चुके हैं । देखिये चन्द्रकान्ता सन्तति तीसरा भाग, नौवां बयान ।

कर डाली। (कांप कर) न जाने उसने मुझको जीता क्योंकर छोड़ दिया? क्रोध आने पर तो वह पिशाची किसी की जान लेना कुछ समझती ही नहीं है! (रुक कर) लेकिन सरदार साहब अब आप ही उससे मेरी जान बचाइयेगा, अगर वह देख लेगी कि मैं आपसे बात कर रही हूं तो मुझको फौरन मार डालेगी। न जाने क्यों वह आपसे इतना जलती है।

शेर०। मुझे इसका पता लगाना पड़ेगा क्योंकि तुम्हारी बातें मुझको ताज्जुब में डाल रही हैं, लेकिन तुम किसी बात से मत डरो, वह औरत चाहे कोई भी हो, तुम्हारा अब कुछ भी नहीं बिगाड़ सकती। तुम बेफिक्र होकर दो एक रोज यहाँ रहो और जब तुम्हारी तबीयत ठीक हो जाय तो जहाँ जी में आवे चली जाओ।

छुट्टन०। (सिर हिला कर) मैं ठीक हो गई और अब यहाँ एक पल भी रहना नहीं चाहती, क्योंकि आपको उस औरत की ताकत और खूंखारी का हाल मालूम नहीं है। वह मौका मिलते ही मुझे मार डालेगी और आप अगर मेरी मदद को आवेंगे तो आप पर भी वार करेगी। मैं आपके हाथ जोड़ती हूं, आप मुझको रोकिये नहीं और सही सलामत यहाँ से चले जाने दीजिये।

शेर०। मैं तुम्हें बिल्कुल नहीं रोकता। तुम जरा भी यह ख्याल न करो कि मेरा कोई और इरादा है या मैं तुम्हें तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध रोकना चाहता हूं, मैं तो तुम्हारी चोटों की तरफ ख्याल करके ही कह रहा था कि रुक कर उन्हें ठीक हो जाने दो तब जाना, लेकिन अगर तुम यह समझती हो कि जाने लायक हो तो तुम खुशी से जा सकती हो, मैं बिल्कुल रुकावट न डालूंगा।

"तब मैं जाऊँगी ही।" कह कर छुट्टन उठ बैठी, मगर खड़ा होने की कोशिश करते ही उसे गश आ गया और वह पुनः जमीन पर गिरने लगी। शेरसिंह ने संभाल कर लिटाते हुए उससे कहा, "मैं कहता था न कि तुम्हारी हालत ठीक नहीं है पर तुम नहीं मानती! जिद्द मत करो और जो मैं कहता हूं सो करो। उस औरत से जरा भी मत डरो और न मुझसे ही खौफ खाओ। चुपचाप दो चार दिन पड़ी रहो, अच्छी हो जाओ तो जहां जी में आवे चली जाना।"

छुट्टन कुछ न बोली, और उसकी रजामन्दी समझ शेरसिंह उसे सहारा देते हुए खंडहर के अन्दर ले आये जहाँ एक साफ कोठरी में उन्होंने उसे एक कम्बल पर लेटा दिया और उसकी मलहम पट्टी की, तब ताकत की एक दवा उसको खिलाई और चुपचाप सो रहने को कह उस जगह के बाहर निकले। कुछ देर इधर से उधर टहलते हुए वे यही सोचते रहे कि वह औरत जिसका छुट्टन ने जिक्र किया

कौन होगी और उसे उनसे क्या दुश्मनी हो सकती है पर कुछ समझ में न आया। तब छुट्टन की दूसरी बात याद आई और वे उस नाले की तरफ बढ़े जिसमें किसी लाश का पड़ा होना उसने बताया था।

छुट्टन ने बिल्कुल ठीक कहा था और पास ही वाले भयानक सूखे नाले में शेरसिंह को एक लाश पड़ी नजर आई जिसका कुछ हिस्सा जानवरों ने खा डाला था और जो इसी सबब से बड़ी ही डरावनी और भयानक लग रही थी, मगर जो कुछ हिस्सा लाश का बचा हुआ था वह बता रहा था कि इसे मरे ज्यादा समय नहीं हुआ है। गौर से देखने पर उन्हें यह भी मालूम हुआ कि इसकी जान खंजर मार कर ली गई है जो अभी तक उसकी पीठ में घुसा हुआ था। एक बार शेरसिंह की तबीयत हुई कि उस खंजर को निकाल कर देखें पर फिर ऐसा न कर देर तक गौर से उसकी तरफ देखते रहे और तब सिर हिला कर यह कहते हुए वापस लौटे—"नहीं, मैं इसे बिल्कुल नहीं पहिचानता, न जाने कौन है और इसकी यह दुर्गति किस लिए हुई!"

शेरसिंह पुनः खंडहर में लौटे। छुट्टन की तरफ गये तो देखा वह गहरी नींद में है, अस्तु वहाँ से हटे और अपने तहखाने में पहुंचे। यह समझ कर कि दुश्मनों की निगाह उन पर पड़ गई है और शायद वे लोग कोई गहरी घात करें, उन्होंने रिक्तगन्थ को उसी गुप्त और हिफाजत की जगह में डाल दिया जहाँ वह इतने दिनों से पड़ा था, और तब पुनः बाहर निकल कर अपने जरूरी कामों में लगे।

दो तीन रोज तक छुट्टन की हालत बहुत खराब रही और इसके बाद भी पांच सात दिन तक उस औरत की याद उसको कंपाती रही जिसने उसकी यह दुर्गति की थी, पर फिर धीरे धीरे वह चैतन्य हो गई और शेरसिंह ने आहिस्ता आहिस्ता उसके पेट से कितनी ही बातें निकाल लीं। उन्हें मालूम हो गया कि वह औरत जिसने उसको जख्मी किया था और आप उस तालाबवाले तिलिस्मी मकान में रहती थी पहिले जमानिया महल में रहती थी और वहां की रानी की कोई है तथा उसी के हुक्म से इस तालाब वाले मकान में आकर रहती है, वह बहुत बड़ी ऐयारा भी है और अकसर रोहतासगढ़ शिवदत्तगढ़ चुनार काशी और गयाजी आती जाती रहती है, शेरसिंह से उसकी कोई खास अदावत है और इनके भेदों की जानकारी रखने के लिए उसने अपने कई आदमी लगा रक्खे हैं, छुट्टन भी इसी काम पर लगाई गई थी, आदि आदि बातें उन्होंने धीरे धीरे दरियाफ्त कर लीं और जब पूरी तरह ठीक हो कर छुट्टन चलने फिरने लायक हुई तो एक बार उसी

के साथ जाकर उस औरत और उस मकान दोनों को दूर से देख भी आए। शेरसिंह को पहिले गुमान हुआ था कि वह औरत मनोरमा या उसकी कोई संगी साथिन होगी, मगर सूरत देखने पर उन्होंने उसको कोई दूसरी ही औरत पाया जिसे वे बिल्कुल ही नहीं पहिचानते थे। उनको बहुत ज्यादा ताज्जुब हुआ और वे यह जानने की फिक्र में पड़ गये कि वह कौन हो सकती है तथा इसी ख्याल से उस तालाब के आस पास अक्सर चक्कर लगाने लगे।

एक दिन की बात है। संध्या का समय था और अंधेरी बड़ी तेजी से घिरी आ रही थी। एक मोटे पेड़ की आड़ में खड़े शेरसिंह एकटक उसी तालाब वाले मकान की तरफ देख रहे थे कि यकायक उन्हें किसी दौड़ते आने वाले के पैरों की आहट लगी और वे चौकन्ने हो गये। कुछ ही देर बाद उन्होंने देखा कि कोई नकाबपोश औरत दौड़ती हुई इसी तरफ आ रही है। और भी अच्छी तरह आड़ में अपने को छिपा शेरसिंह ने जब गौर किया तो कद और अन्दाज से जान पड़ा कि यह वही है जो तालाब वाले मकान में रहती है और साथ ही यह भी पता लगा कि वह कोई खून करके चली आ रही है क्योंकि उसके हाथ में एक बड़ा छूरा था जो खून में डूबा हुआ था। जिस समय वह पास ही से जा रही थी शेरसिंह ने उसके मुंह से निकलते ये शब्द सुने, "कम्बख्त का इतना बड़ा कलेजा, मुझ पर ही हाथ साफ करना चाहता था! अच्छा हुआ जो दोजख को पहुंच गया!" झपटती हुई वह तालाब की तरफ बढ़ गई मगर शेरसिंह के मुंह से निकला, "कैसी भारी राक्षसी है, जान पड़ता है फिर कोई खून करती हुई चली आ रही है!" जैसे ही वह आँखों की ओट हुई वे आड़ से निकले और उस तरफ को चले जिधर से वह आई थी। ज्यादा दूर जाना न पड़ा और सौ डेढ़ सौ कदम ही जाने के बाद बीच पगडंडी पर एक लाश पड़ी नजर आई। लपक कर उसके पास पहुंचे। देखा तो कोई नौजवान आदमी है जो खून में डूबा हुआ था और न जाने कब का दम तोड़ चुका था। कुछ देर तक गौर से उसकी देख भाल करते रहे, तब उठे और तरह तरह की बातें सोचते हुए धीरे धीरे अपने डेरे की तरफ वापस लौटे। हम नहीं कह सकते कि उन्होंने उस नौजवान को पहिचाना भी या नहीं जिसकी लाश अभी अभी देखते चले आ रहे थे पर उनकी मुद्रा बहुत गंभीर हो रही थी और वे किसी गहरी चिन्ता में डूबे नजर आ रहे थे।

खंडहर से अभी कुछ दूर ही थे कि छुट्टन मिली जो कुछ घबड़ाई हुई तथा परेशान सी हो रही थी और इनको देखते ही बोली, "बारे आप किसी तरह आए

तो सही! वह पिशाची आज यहाँ पहुंची और बहुत देर तक उसी कोठरी में घुस कर न जाने क्या करती रही, जब गई तो उसके हाथ में कोई चीज भी थी। मैं तो उसकी सूरत देखते ही यहाँ से निकल भागी मगर आप देखिये तो सही आपका कौन सा सामान लेकर गई है!"

छुट्टन ने जिस कोठरी की तरफ बताया वह वही थी जिसके अन्दर से नीचे तहखाने में जाने का रास्ता था। दुश्मन का आदमी समझ कर और उसके ठीक ठीक भेदों से वाकिफ न होने के कारण शेरसिंह ने छुट्टन पर अभी अपने तहखाने का पूरा भेद जाहिर नहीं किया था और न कभी उसे वहां ले ही गए थे, अगर कभी जाते भी थे तो उसकी आँख बचा कर, मगर इस समय धोखे में पड़ गये और उससे यह कह कर कि 'तुम इसी जगह रहो मैं जाकर देखता हूं कि उसने क्या चुराया है'—उस तरफ बढ़ गये। आलमारी का पल्ला खोला और भीतर वाली कोठरी में पहुंचे, सामान निकाल रोशनी की और नीचे वाले तहखाने में उतरे। पहली ही निगाह ने बता दिया कि जरूर यहां पर कोई आया था क्योंकि उनका जो कुछ मुख्तसर सा सामान यहाँ पर था सभी कुछ अस्त व्यस्त और इस तरह इधर उधर फेंका फांका पड़ा था मानों किसी ने बहुत जल्दी जल्दी उन सामानों की छानबीन की हो। वे घबरा गये और बरबस उनकी निगाह उस तरफ उठ गई जिधर सामने वाली दीवार के अन्दर रिक्तगन्थ रखते थे। वहां कोई शक की बात न पाई मगर फिर भी तबीयत न मानी और आगे बढ़ मामूली ढंग से वह गुप्त रास्ता खोला। एक दफे चारो तरफ देखा और तब उसके भीतर घुस गये, इस बात पर बिल्कुल गौर न किया कि ऊपर वाली कोठरी में पहुंची हुई छुट्टन ने रोशनदान की तरह पर बने एक छेद की राह उनकी सब कार्रवाई अच्छी तरह देख ली है बल्कि अभी तक देख रही है।

शेरसिंह की तबीयत तब ठिकाने हुई जब उन्होंने केवल रिक्तगन्थ ही नहीं बल्कि उन सभी चीजों को ठीक पाया जो इस गुप्त जगह में बहुत छिपा कर न जाने कब से वे रक्खे हुए थे। देर तक अच्छी तरह देखभाल करने के बाद वे उस गुप्त स्थान के बाहर निकले तथा उसका रास्ता बन्द किया, और तब पहिले बार उन्हें ख्याल आया कि इस खबर की घबराहट में वे ऊपर कोठरी वाला रास्ता खुला ही छोड़ आए हैं। वे झपट कर सीढ़ी के पास पहुंचे पर न तो उस तहखाने में और न ऊपर वाली कोठरी में ही कहीं कोई नजर आया और वे कुछ आश्वस्त होकर बोले, "तहखाने तक तो वह कम्बख्त जरूर पहुंची मगर शुक्र है

कि उस जगह तक पहुंच न सकी और मेरी चीजें हिफाजत से हैं। फिर भी यहाँ रहना अब खतरे से खाली नहीं। मुझे रिक्तगन्थ और बाकी चीजों की हिफाजत का कुछ और बन्दोबस्त कर देना चाहिये।"

ऊपर वाले खण्डहर की एक कोठरी और दालान से शेरसिंह अपनी बैठक का काम ले रहे थे। यहाँ वे अक्सर दिन में रहा करते थे और यहाँ छुट्टन के आने के बाद से वे अपना प्रायः सभी समय बिताया करते थे। तहखाने से बाहर निकल जब शेरसिंह उस दालान में पहुंचे तो उन्होंने छुट्टन को वहीं पर बैठा पाया जो उन्हें देखते ही उठ खड़ी हुई और बोली, "कहिये क्या क्या चीज आपकी गई?" शेरसिंह बोले, "कोई जरूरी चीज गई तो मालूम नहीं होती मगर इसमें भी शक नहीं कि कोई मेरे गुप्त स्थान तक पहुंचा जरूर, क्योंकि मेरा सामान सब अस्त व्यस्त हो रहा था। खैर अब तुम ज्यादा होशियारी से रहना और..." छूटते ही छुट्टन बोली, "मैं यहाँ अब एक सायत रहने की नहीं! उस कम्बख्त ने मुझे इस जगह देख लिया है और जरूर समझ गई होगी कि मैं आपसे मिल गई हूं। वह अब मेरी जानी दुश्मन बन गई होगी और किसी तरह मुझको जिन्दा न छोड़ेगी।" शेरसिंह बोले, "तो तुम क्या करना चाहती हो?" छुट्टन ने जवाब दिया, "मैं इसी समय अपने घर चले जाना चाहती हूं।" शेरसिंह ने कहा, "तुम जब चाहे जा सकती हो मैं तुम्हें रोकता नहीं, मगर इतना जरूर है कि समय अब रात का है और बाहर का जंगल दरिंदे जानवरों से भरा हुआ है। ऐसा ही है तो आज रात यहाँ और काटलो, सुबह होते ही चली जाना।" छुट्टन ने यह मंजूर किया और तब शेरसिंह उसी औरत के बारे में तरह तरह की बातें उससे पूछने लगे जिसे वे कुछ ही देर पहिले एक खून करके जंगल में जाते हुए देख चुके थे।

बातें करते करते यकायक छुट्टन पूछ बैठी, "हाँ यह तो कहिए उस आदमी से आपकी भेंट हुई जो आज शाम को आपको खोजता हुआ आया था?" शेरसिंह ने ताज्जुब से पूछा, "कौन आदमी?" छुट्टन बोली, "अधेड़ सा आदमी था, बदन बहुत गोरा, चेहरा रोआबदार, डील डौल से बहुत मजबूत जान पड़ता था। आपके जाने के कुछ ही देर बाद आया और आपको पूछता था। मैंने कह दिया कि तालाब की तरफ गए हैं सो उधर ही को चला गया।" शेरसिंह गौर करते हुए ताज्जुब से बोले, "कुछ नाम भी बताया?" छुट्टन ने जवाब दिया, "हाँ, इन्द्रदेव नाम बताया था।" शेरसिंह अफसोस से बोले, "नहीं मुझसे तो भेंट नहीं हुई! मगर उनसे मिलना बहुत जरूरी था। सच तो यह है कि उन्हीं की राह देखता मैं यहाँ

बैठा हुआ हूं क्योंकि उनको मिलने का यही ठिकाना बताया हुआ था।" छुट्टन बोली, "तब शायद लौट कर वे फिर आवें क्योंकि उनके रंग ढंग से जान पड़ता था कि उन्हें भी आपसे मिलने की बहुत जरूरत है।" यकायक बाहर की तरफ से किसी की आहट आई और वह उधर ही देख कर बोल उठी, "लीजिये आ ही तो गए, ये ही हैं वे!" शेरसिंह ने भी उधर देखा और खड़े होकर बोल उठे, "इन्द्रदेवजी आप आ गए! मैं अभी आपके लौट जाने की खबर सुन अफसोस कर रहा था। मुझे आपसे मिलने की बहुत जरूरत है।" इन्द्रदेव बोले, "मुझे भी आपसे बहुत सी बातें करनी हैं, मगर सबसे पहिले मेरे लिए कुछ भोजन का इन्तजाम कीजिये क्योंकि बहुत दूर से आ रहा हूं। इस लड़के* ने मुझे व्यर्थ ही कोसों दौड़ा दिया जिससे मैं और भी थक कर चूर चूर हो गया।" शेरसिंह बोले, "बात की बात में सब इन्तजाम हुआ जाता है, आप आइये, बैठिये, कपड़े उतारिये, और जरा ठंडे हो लीजिये।" शेरसिंह ने छुट्टन की तरफ देखा, वह तुरन्त बोली, "बात की बात में भोजन तैयार हो जायगा" और उठ खड़ी हुई।

शेरसिंह ने बड़ी खातिर के साथ इन्द्रदेव को बैठाया और उनके आराम का इन्तजाम करने बाद बोले, "यों तो आपसे मुझे बहुत सी बातें पूछनी और अपनी सुनानी हैं, मगर सब से पहिले मैं यह जानना चाहता हूं कि आपने उस बारे में कुछ किया जिसके लिए उस दिन जंगल में नाले के किनारे मेरी आपकी बातें हुई थीं।"

इन्द्र०। (अफसोस के साथ सिर हिला कर) जो आपके साथ हुआ वही मेरे साथ भी हुआ। मैं तिलिस्म के अन्दर न जा सका और सब तरह की कोशिश कर लेने बाद बैरंग वापस लौटने पर मजबूर हुआ, फिर भी इस बात में कोई शक मुझको नहीं रहा कि तिलिस्म बेशक तोड़ा जा रहा है।

शेर०। है न यही बात! ऐसा ही मुझे भी मालूम होता है। अच्छा आप क्या गुमान करते हैं कि वह कौन आदमी होगा जो ऐसा कर रहा है?

इन्द्र०। (सिर हिला कर) इस बारे में मेरी अक्ल कुछ काम नहीं करती क्योंकि मैं किसी को देख नहीं पाया, फिर भी कितनी ही तरफ ध्यान जाता है। यह बात बहुत मशहूर है कि राजा बीरेन्द्रसिंह के लड़के कोई तिलिस्म तोड़ेंगे, मगर वे इस समय अपने ही झमेलों में पड़े हुए हैं और इश्क में पड़ कर बर्बाद हो रहे हैं। राजा गोपालसिंह के बारे में भी एक दफे उड़ती सी खबर सुनने में

* शेरसिंह के हुक्म से छुट्टन बराबर अपने उसी लड़के वाले वेष और पौशाक में वहाँ रहती थी।

आई थी कि वे भी कोई भारी तिलिस्म तोड़ेंगे पर ईश्वर ने उनको उठा ही लिया। अब सिर्फ दो तीन आदमी ऐसे रह जाते हैं जिनकी तरफ शक जा सकता है।

शेर०। सो कौन?

इन्द्र०। एक जमानिया के दारोगा साहब !

शेर०। और दूसरा ?

इन्द्र०। आपके राजा दिग्विजयसिंह।

शेर०। (सिर हिला कर) ऐसा तो नहीं जान पड़ता, तिलिस्मी मामलों में इन लोगों का थोड़ा बहुत दखल भले ही हो पर तिलिस्म तोड़ने का दावा ये लोग हर्गिज नहीं कर सकते।

इन्द्र०। नहीं आपका खयाल गलत है और क्यों सो मैं अभी बताता हूं, मगर एक आदमी और भी है जिसकी तरफ निगाह जाती है और वह है राजा शिवदत्त।

शेर०। (चौंक कर) शिवदत्त ! उसका नाम भला आप क्यों लेते हैं ?

इन्द्र०। क्योंकि उसके बारे में भी मैंने कुछ ऐसी बातें सुनी हैं जो शक पैदा करती हैं, और सच तो यह है कि आज मैं यही निश्चय करने निकला था कि उसका इन मामलों में कहां तक हाथ हो सकता है ? मगर आपके ढंग से मालूम होता है कि आपको भी उसके बारे में कुछ शक है !

शेर०। कुछ क्यों पूरा शक है क्योंकि उसकी एक बड़ी भारी शैतानी का पता मुझे हाल ही में लगा है और यह भी निजी तौर पर अच्छी तरह मालूम है कि उसे तिलिस्म के हाल चाल की कुछ न कुछ जरूर खबर है, बल्कि एक दफे मैंने उसे तिलिस्म के अन्दर गिरफ्तार भी किया था और बाहर निकाल कर छोड़ा, मगर वह तिलिस्म तोड़ सकेगा यह बात फिर भी मेरा दिल कबूल नहीं करता।

इन्द्र०। आप किस घटना की बात कहते हैं मैं नहीं जानता मगर मुझको पक्की खबर लगी है कि उसके पास एक तिलिस्मी किताब है और वह आज कल रिक्तगंथ पर कब्जा करने की धुन में है, बल्कि इसी काम के लिए उसने अपने कई ऐयारों को चारो तरफ भेजा हुआ भी है जिनमें से कुछ आपके इस खण्डहर के आस पास मंडराते भी देखे गये हैं।

शेर०। (चौंक कर) क्या ऐसी बात है ? मुझे भी कुछ शक पैदा करने वाली बातें इधर हाल ही में नजर आने लगी हैं जिनमें से एक इस लड़के का भी किस्सा है जिसे अभी आपने देखा और जो हम लोगों के लिये भोजन तैयार कर रहा है, मगर आपने यह बात किस बुनियाद पर कही ?

इन्द्र०। इस पर कि शायद उन्हीं लोगों ने अपना अड्डा उस मकान में कायम

किया है जो इस जगह से पास ही तालाब के अन्दर बना हुआ है और जिस तरफ इस लड़के ने मुझको भेजा जब मैं थोड़ी देर पहिले यहां आया था। क्या इस लड़के को भी उस मकान से कुछ सम्बन्ध है ?

शेरसिंह ने यह सुन कर केवल छुट्टन का असली परिचय बचाते हुए पिछला सब हाल कह सुनाया और तब इन दोनों में तरह तरह की बातें होने लगीं यहां तक कि रात काफी गुजर गई और भोजन तैयार हो गया। दोनों आदमियों ने एक साथ ही भोजन किया और तब शेरसिंह के आग्रह पर इन्द्रदेव ने वह रात वहीं बिताना मंजूर कर लिया। दो बिस्तर लग गये जिन पर लेट ये दोनों बातें करने लगे और छुट्टन इनसे आज्ञा ले स्वयं भोजन करने की फिक्र में चली गई।

अफसोस, इस जगह शेरसिंह ने बहुत बड़ा धोखा खाया, ऐसा धोखा जिसकी याद इन्हें बहुत दिनों तक सताती रहेगी। इतने बड़े होशियार होकर भी वे जरा सी बात में चूक कर गये और चालाक ऐयारों के फेर में पड़ कर अपना बहुत बड़ा नुकसान कर बैठे। बेईमान छुट्टन के जाल में फंस कर नकली इन्द्रदेव की चलती फिरती बातों में वे पड़ गए और अपनी स्वाभाविक सावधानी को ताक पर रख दुश्मन के हाथ का बनाया हुआ ऐसा भोजन कर बैठे जिसमें मसालों के साथ साथ बेहोशी की दवा का इस्तेमाल किया गया था, नतीजा यह निकला कि इन्द्रदेव से बातें करते करते ही वे दीन दुनिया की होश गवां बैठे।

जब रात काफी बीत गई तो छुट्टन इन दोनों के पास पहुंची और इन्द्रदेव को चैतन्य करके बोली, "उठिये उठिये, ये शेरसिंह तो अन्टा गाफिल हो गये और अब हम लोगों को अपनी कार्रवाई कर डालनी चाहिये।" इन्द्रदेव तुरन्त उठ कर बैठ गए और अंगड़ाई लेकर बोले, "यद्यपि मैंने बहुत कम खाया फिर भी तुम्हारी बेहोशी का बड़ा तेज असर हुआ। क्या शेरसिंह बेहोश हैं ?" छुट्टनने जवाब दिया, "हाँ एक दम, और अभी घण्टों तक होश में न आवेंगे।"

इन्द्रदेव बिछावन से उठे और शेरसिंह के पास गए। देखा तो वे गहरी बेहोशी में पड़े हैं। सिर हिला कर बोले, "इनकी तरफ से तो घण्टों की निश्चिन्ती है, अच्छा तुमने उस जगह का पता लगा लिया जहां वह खूनी किताब रक्खी है ?" छुट्टन बोली, "बखूबी, आप मेरे साथ आइये।" आगे आगे छुट्टन और पीछे पीछे वह इन्द्रदेव रूपी ऐयार उस कोठरी में पहुंचे जिसमें से तहखाने में जाने का रास्ता था। छुट्टन ने मोमबत्ती बाली और आलमारी के मुट्ठे घुमा पल्ले खोले, तब दोनों तहखाने में उतर गये। छुट्टन सीधी उस सामने वाली दीवार के पास पहुंची और पत्थर पर हाथ रख कर बोली, "इसको किसी तर्कीब के साथ दबाने

से यहाँ एक रास्ता पैदा होता है और उसी के अन्दर आपकी चीज रक्खी हुई है।"

वह ऐयार बोला, "मुझे इस गुप्त स्थान का हाल मालूम है" और तब आगे बढ़ा। जिस तरह शेरसिंह करते थे उसी तरह उसने पत्थर को दबाया और वह रास्ता निकल आया। रोशनी लिए दोनों अन्दर घुस गए और बहुत देर तक बाहर न आए।

सूरज बहुत काफी ऊंचा उठ आया था जब दूसरे दिन शेरसिंह की नींद टूटी। उनके सिर में चक्कर आ रहा था और समूचा बदन टूट रहा था। उन्हें अपनी हालत पर आश्चर्य हुआ और वे घबड़ा कर बोले, "यह मुझे क्या हो गया और मेरी ऐसी हालत क्यों हो रही है मानों बहुत गहरी बेहोशी में देर तक डूबा रहा होऊं!" उन्होंने बगल वाले बिछावन की तरफ देखा जिस पर इन्द्रदेव सोए थे, उसको खाली पाया। उस कम्बलकी तरफ निगाह की जिस पर छुट्टन सोया करती थी, और उसे भी खाली पाया। एक घबड़ा देने वाला शक उनके मन में दौड़ गया और वे अपने बिछावन से उठ कर सीधे तहखाने की तरफ लपके। आलमारी के दोनों पल्ले खुले देखते ही उनका माथा ठनका और नीचे उतरते ही तो उनके मुंह से अफसोस और रंज भरी एक चीख निकल गई क्योंकि वह दीवार के अन्दर वाला गुप्त स्थान भी जिसमें रिक्तगंथ तथा दूसरी कई जरूरी चीजें छिपा कर रखते थे खुला हुआ था। दौड़े दौड़े गए और अन्दर पहुंच कर जांच की, तुरन्त मालूम हो गया कि केवल रिक्तगंथ ही नहीं बल्कि और भी कई चीजें जिनकी वे जान से बढ़ कर हिफाजत करते थे अपनी जगह पर नहीं हैं और गायब हो गई हैं। बाहर निकल आए और माथे पर हाथ रख कर तख्तपोश पर बैठ गए।

चौथा बयान

जमानिया राजमहल के एक एकान्त कमरे में मुन्दर (मायारानी) सुस्त और उदास चुपचाप बैठी हुई है।

न जाने किस तरह की बातें उसके मन में घूम रही हैं कि वह रह रह कर सिसक उठती है और बीच बीच में लम्बी सांसें भी उसके मुंह से निकल पड़ती हैं। कभी कभी वह घबड़ा कर इधर उधर देखती है और अक्सर उसके मुंह से कुछ टूटे फूटे शब्द भी निकल पड़ते हैं। कमरेमें उसके सिवाय इस समय और कोई नहीं है पर बाहर उसकी कई लौंडियां और सहेलियां मौजूद हैं जिनको उसने अपने पास से हटा दिया है और इसी सबब से जो यह जानते हुए भी कि उनकी रानी इस समय किसी भारी तरद्दुद और सोच में पड़ी हुई है बाहर वाले दालान

में सुस्त और उदास बैठी हुई उसे कुछ समझाने बुझाने या दिलासा देने की हिम्मत नहीं कर पातीं, केवल कभी कभी कोई अधखुले दर्वाजे के सामने होकर भीतर देख लेती है और रानी को उसी तरह बैठा पा पुनः हट जाती है।

आखिर एक लम्बी सांस के साथ मुन्दर के मुंह से निकला—"जान पड़ता है मेरे सुख के दिन बीत गए और अब मुझे तरद्दुद फिक्र और डर में ही अपनी बाकी उम्र गुजार देनी पड़ेगी!" उसने गर्दन घुमा कर बेचैनी के साथ इधर उधर देखा। इसी समय दर्वाजा जो भिड़काया हुआ था खुला और धनपत ने कमरे के अन्दर पैर रक्खा। मुन्दरने सवाल से भरी निगाह उसकी तरफ उठाई पर उसने जवाब में मायूसी जाहिर करने वाले ढंग से गर्दन हिलाया और पास आ र धीरे से कहा, "कुछ पता नहीं लगा मेरी रानी!" मुन्दर ने पूछा, "तू क्या अभी चली आ रही है?" धनपत बोली, "जी हां, मैं सीधी चली आ रही हूं, अभी कपड़े तक नहीं उतारे।" मुन्दर बोली, "अच्छा यहां बैठ जा और बता कहां कहां गई और क्या हुआ?"

धनपत मुन्दर के पास आकर बैठ गई और धीरे धीरे कहने लगी, "जहां जहां तुमने कहा था मैं उन सब जगहों में गई। नौगढ़ गई, विजयगढ़ गई, चुनार गई, कहीं कुछ पता न लगा। रोहतासगढ़ और शिवदत्तगढ़ इन दोनों जगहों में भी देखा, पर कोई काम न हुआ। अन्त में काशी पहुंची।"

मुन्दर ने सवाल की निगाह धनपत की तरफ उठाई और पूछा "मनोरमा से मिलने?" वह सिर हिला कर बोली, "नहीं काशी में भूतनाथ का मकान एक ऐसी जगह है जहां कुछ पता लगने की उम्मीद हो सकती थी।"

मुन्दर०। मगर भूतनाथ तो कब का मर चुका!

धनपत०। लेकिन उसका लड़का नानक सिर उठा रहा है, वह ऐयारी में बहुत तेज हुआ है और हमारे मामले की भी उसे थोड़ी बहुत जानकारी है जिसका पता इसी से लगता है कि मेरा जो कुछ काम बना उसी जगह बना।

मुन्दर०। सो क्या? तूने अभी कहा कि कोई काम नहीं बना!

धनपत०। जी हां क्योंकि जो बना वह न बनने के बराबर ही है।

मुन्दर०। खैर तू पूरा हाल कह तो मुझे पता लगे।

धन०। मैं नानक के मकान के आस पास टोह लगाने लगी। आधी रात के समय मैंने उसको अपने घर से निकल एक तरफ को जाते देखा और उसका पीछा किया। मैंने देखा कि वह सीधा शहर के बाहर की तरफ चला और तेजी से चल

कर वहीं पहुंचा जहाँ इमली के पेड़ों के भीतर 'बकरिया बीर' की समाधि है।

मुन्दर०। हैं! मगर वह जगह तो...?

धन०। जी हाँ, और इसी से मेरा माथा ठनका। मैंने देखा कि वह एक इमली के पेड़ पर चढ़ गया और चुपचाप बैठा रहा। बार बार उसकी निगाह उसी समाधि पर जाती थी। रात भर वह वहाँ बैठा रहा और मैं भी उसी जगह डटी रही। सुबह होने के कुछ पहिले वह पेड़ से उतर अपने घर लौटा और मैंने उसको घर के अन्दर तक करके ही तब उसका साथ छोड़ा।

मुन्दर०। अच्छा तब ?

धन०। मुझे विश्वास हो गया कि नानक को जरूर कुछ न कुछ हाल हम लोगों का मालूम हो गया है और मुमकिन है कि उससे मेरा कुछ काम बने। इसके बाद वाली रात को भी जब मैंने उसे उसी तरह निकल कर समाधि की तरफ जाते देखा तो समझ गई कि यह रात भर वहीं पहरा देगा, अस्तु अपनी सूरत नानक जैसी बनाई और उसके घर पहुंची। नौकर लोगों ने मुझ पर कुछ शक न किया और मैं सीधी उसके कमरे में जा पहुंची जहाँ सबको बिदा कर मैंने उसके सामान की अच्छी तरह तलाशी ली। मतलब की और कोई चीज तो न मिली मगर उसका रोजनामचा जरूर मिला जिसको पढ़नेसे कई ताज्जुब की बातें मालूम हुईं।

मुन्दर०। सो क्या ?

धन०। यह कि उसे आज से नहीं बल्कि बहुत दिनों से हम लोगों के बारे में शक है। उसकी मां रामदेई को जब हम लोगों ने चुराया था और नागर को उसकी जगह बैठाया था उसी समय उसे इस बात का पता लग गया था, रिक्तगन्थ के भूतनाथ द्वारा नागर के हाथ में दिए जाने का हाल भी मालूम था, और अन्त में इस बात का भी उसको पता लग गया था कि साधीराम ने रिक्तगन्थ को चुरा कर रोहतासगढ़ के तहखाने में रक्खा है*।

मुन्दर०। हैं!!

धनपत०। जी हां, उसने अपने रोजनामचे में एक जगह लिखा है—"साधोराम ने रिक्तगन्थ चौबीस नम्बर की कोठरी में रख उस कोठरी की ताली अपने एक दोस्त के हाथ मनोरमा के पास भेजी थी जो मय उसकी चीठी के मेरे हाथ लगी। चीठी और ताली मैंने ठिकाने से कर दी, अब शेरसिंह से मिल उनसे पूछूंगा कि चौबीस नम्बर की कोठरी कौन और कहाँ है।"

* यह सब हाल चन्द्रकान्ता सन्तन्ति पढ़ने वाले पाठकों को अच्छी तरह मालूम है। देखिये सन्तति सातवाँ भाग—नानक का किस्सा।

मुन्दर०। (उछल कर) ऐसा! तब तो मुमकिन है कि वह खूनी किताब अभी तक वहाँ ही पड़ी हो ?

धनपत०। और या फिर नानक ने उस ताली की मदद से कोठरी खोल उसको निकाल लिया हो ?

मुन्दर०। (उदास होकर) हां सो भी हो सकता है, और अगर ऐसा हुआ तो हमलोगों की जान किसी तरह न बच सकेगी क्योंकि बाबाजी का जोर देकर कहना है कि रिक्तगन्थ अगर हमारे दुश्मन के हाथ लग गया तो तिलिस्म जरूर टूट जायगा और हम लोग कहीं के न रहेंगे। खैर तुमने क्या किया? वह रोजनामचा लाई हो?

धन०। नहीं, उसे चुरा लेने से नानक को शक हो जाता, अस्तु उसकी मतलब की बातें सब मैंने याद कर लीं और वहाँ से निकल भागी क्योंकि नानक के आ पहुंचने का डर था, पर एक काम मैंने बिना आपसे पूछे किया।

मुन्दर०। वह क्या ?

धन०। मैंने मनोरमाजी से मिल कर यह सब हाल कह दिया और नानक पर निगाह रखने की ताकीद कर सीधी इधर चली आ रही हूं।

मुन्दर०। तुमने बहुत अच्छा किया। मनोरमाने इन बातों को सुन क्या कहा ?

धन०। वे बोलीं कि मुझको भी नानक पर बहुत दिनों से शक था पर यह नहीं सोचा था कि वह इतना बड़ा चालाक निकलेगा। खैर अब मैं उस पर अपना जाल फेंकती हूं और उसको ऐसा उल्लू बनाती हूं कि वह भी याद करेगा। उन्होंने यह भी कहा कि उसका इन्तजाम कर मैं बहुत जल्द जमानिया पहुंच कर आपसे मिलूंगी, बल्कि कुछ काम भी कर रखने की हिदायत की है जिसका जिक्र इस चीठी में है।

धनपत ने एक चीठी निकाल कर मुन्दर के हाथ में दी जिसे वह बहुत गौर से पढ़ गई, तब बोली, "मनोरमा का ख्याल बहुत ठीक है और इस तर्कीब से नानक जरूर हम लोगों के काबू में आ जायगा। तुम जरा सुस्ता लो तो इस चीठी को लेकर बाबाजी के पास चली जाओ और उनको ये सब बातें बता दो। वे बहुत जल्द मुनासिब इन्तजाम कर डालेंगे।"

धनपत०। बहुत खूब, थोड़ा सुस्ता कर मैं निकल जाऊंगी। रास्ते में मुझे बाबाजी का एक सिपाही मिला था जिसकी जुबानी सुना कि आज कल वे यहाँ नहीं अजायबघर में विराज रहे हैं अस्तु वहीं जाना होगा और मैं लम्बे सफर के कारण एक दम चूर हो रही हूं।

मुन्दर०। नहीं नहीं कुछ सुस्ताके जाइयो। हां यह तो कह उसका कुछ पता लगा?

धनपत०। किसका ?

मुन्दर ने झुक कर धनपत के कान में कुछ कहा जिसे सुन उसका चेहरा कुछ उतर सा गया और वह उदासी से सिर हिला कर बोली, "नहीं रानी, उसका तो कुछ भी पता न लगा, मैंने बहुत कोशिश की मगर नाकामयाब हुई !"

मुन्दर०। उसके घर भी गई थी ?

धनपत०। जरूर गई और नौकर चाकरों से बहुत कुछ पूछताछ भी की, मगर कोई कुछ बता न सका। उसके घर वाले खुद उसकी फिक्र में परेशान हैं और कोई कुछ नहीं जानता कि वह कहाँ गया या क्या हुआ ?

मुन्दर ने यह सुन कर एक लम्बी साँस ली और बदन झुका कुछ सोचने लगी। धनपत कुछ देर तक वहीं बैठी रही, तब उसकी इजाजत से कमरे के बाहर निकल गई। मुन्दर का साथ छोड़ हम अब कुछ देर के लिए धनपत के पीछे लगते और देखते हैं कि वह कहाँ जाती या क्या करती है।

मायारानी के पास से हट धनपत बाग के पहिले दर्जे की तरफ चली पर कुछ ही दूर जाने बाद न जाने क्या सोच कर लौटी और राजमहल के पिछवाड़े की तरफ बढ़ी जिधर लौंडियों मजदूरनियों और खवासों के डेरे थे। इस समय इस तरफ बिल्कुल सन्नाटा था क्योंकि सब अपने अपने काम पर लगी हुई थीं पर धनपत सीधी एक कोठरी के पास पहुंची और उसके बन्द दर्वाजे पर उंगली से ठोकर मारी। किसी ने भीतर से पूछा, "कौन है ?" उसने अपना नाम बतलाया और भीतर से जवाब आया, "ठहरो खोलती हूं।" तुरन्त ही दर्वाजा खुल गया और धनपत भीतर हो गई। दर्वाजा तुरन्त ही बन्द भी कर लिया गया।

छोटी कोठरी में बहुत ही मुख्तसर सा सामान है। एक तरफ एक मामूली खाट पड़ी हुई थी जिस पर बिछावन बिछा हुआ था और बाकी तरफ तरह तरह के सामान फैले हुए थे। जिस औरत ने अपने खाट से उठ कर दर्वाजा खोला और धनपत को अन्दर कर पुनः बन्द कर लिया था वह आकर पुनः खाट पर बैठ गई और धनपत को भी वहीं आकर बैठने का इशारा करती हुई बोली, "धनपत रानी, तुम आ गईं ? अबकी के सफर में तो तुमने कई दिन लगा दिए !"

पाठक इस औरत की सूरत देखें तो चौंकेंगे क्योंकि यह हूबहू वही बिन्दो नजर आती है जिसकी तीरन्दाजी का नमूना पाठक बहुत दिन हुआ देख चुके हैं या जिसकी नानी कूएं में गिर जान गंवा चुकी है। उन्हें यह भी याद होगा कि यह बिन्दो असल में देवीरानी की लौंडी मैना थी और दारोगा साहब द्वारा गिरफ्तार होकर उनका कैदखाना आबाद कर रही थी जब शेरसिंह ने उसे छुड़ाया। अस्तु अवश्य ही उनको यह भी ख्याल होजायगा कि जरूर यह कोई ऐयारा है जो बिन्दो बना कर दारोगा साहब द्वारा भेजी हुई यहां मायारानी अर्थात् मुन्दर पर निगहबानी कर रही है—खैर जो कुछ भी होगा शीघ्र ही पता लग जायगा।

धनपत आकर बिन्दो के बगल में खाट पर बैठ गई और एक अँगड़ाई लेकर बोली, "हां बहुत दिन लग गए और दौड़ धूप तथा परेशानी भी बहुत रही, बदन एक दम चूर चूर हो गया।"

बिन्दो ने पूछा, "कुछ काम भी बना ?" धनपत सिर हिला कर बोली, "विशेष कुछ भी नहीं, सिर्फ नानक के घर पर जाने से कुछ भेद मालूम हुआ और रानी का हुक्म हुआ है कि दारोगा साहब से सब बातें कह दूँ। मगर वे अपने घर पर हैं नहीं, इसीलिए अजायबघर जाना पड़ेगा।"

बिन्दो०। तो इतना मुझसे सुन लो कि वे अजायबघर में भी नहीं हैं और कल ही से वहां से भी गायब हैं, किसीको कुछ मालूम नहीं कि कहां चले गए या कब आवेंगे।

धनपत०। सो कैसी बात ! और तुम्हें कैसे मालूम ?

बिन्दो०। मैं अभी अजायबघर से ही वापस लौटी आ रही हूं। बैठ कर सुस्ता रही थी कि तुम्हारी आवाज सुन पड़ी।

धनपत०। अच्छा ! क्या (एक कोने की तरफ देखती हुई) इसी सुरंग की राह गई थीं ?

बिन्दो०। हां, और इधर ही से लौटी भी, मगर फिर भी चक्कर बहुत लगाना पड़ा क्योंकि दूसरा मुहाना सुरंग का, अजायबघर वाला, भीतर से बन्द था और इसलिये सुरंग से बाहर होकर जगल जगल अजायबघर जाना और उधर ही से वापस लौटना पड़ा।

धनपत०। यह कैसी बात ? दूसरा मुहाना किसने बन्द किया ?

बिन्दो०। दारोगा साहब के सिवाय और कौन उस सुरंग का हाल जानता है जिसकी यह कार्रवाई हो सकती है। उन्होंने किसी मतलब से ऐसा किया होगा, अब भेंट हो तो पता लगे।

धनपत०। ठीक है, बेशक ऐसा ही होगा, तब मैं अभी वहां जाऊँ भी तो उनसे मुलाकात नहीं हो सकती।

बिन्दो०। किसी तरह नहीं, और अच्छा यही होगा कि तुम अपने डेरे

पर या यहां मेरे ही बिछावन पर कुछ देर लेट रहो, थकावट दूर होने पर जो जी में आवे करना।

"अपने डेरे पर जाऊँगी तभी आराम मिलेगा" कहती कहती धनपत थकावट की मुद्रासे बिन्दोके बिछावन पर लेट गई जिसने अपनी चादर उढ़ा दी और हलके हाथों बदन दबाती हुई बोली, "अच्छा कहां कहां गईं और क्या क्या किया कुछ सुनाओ तो सही!" धनपत बोली, "सब सुनाऊँगी मगर तुम पहिले इतना बता दो कि रानी ने फिर कभी कोई काम तुमसे लिया या कहीं तुम को ले गई थीं ?"

बिन्दो० । नहीं कहीं नहीं, वे मुझे जैसे कुछ भूल ही सा गई हैं और मैं भी मौका बचाती हुई बीमारी का स्वांग किये ज्यादातर यहां पड़ी रहा करती हूं, उनके सामने या और कहीं आती जाती नहीं।

धनपत० । यह भी अच्छा ही करती हो।

बिन्दो० । अब तुम अपने सफर का हाल सुनाओ।

धनपत० । अच्छा सुनो।

धनपत धीरे धीरे कुछ कहने और बिन्दो गौर से सुनने लगी। बीच बीच में कभी कभी कुछ पूछती भी जाती थी। काफी देर तक इनकी बातें चलती रहीं यहां तककि धीरे धीरे धनपत की आंखें झपने लगीं और अन्त में वह एकदम ही गहरी नींद में डूब खुर्राटे लेने लगी। बिन्दो कुछ देर तक उसकी हालत गौर से देखती रही, तब धीरे से बोली, "अब यह घण्टों के लिये मुर्दा हुई, मुझे भी अपने काम पर लग जाना चाहिये।"

बिन्दो खाट पर से उठी और दर्वाजे के पास गई। एक बार उसे खोल बाहर की तरफ झांका, सब तरफ सन्नाटाथा और केवल एक बूढ़ी मालिन एक तरफ बैठी कुछ कर रही थी, उसको कुछ समझाया और पुनः अपनी कोठरीमें लौट दर्वाजा भीतर से मजबूत बन्द कर लिया। एक बार पुनः धनपतके पास गई, देखा वह उसी तरह गाफिल पड़ी है, सिर हिलाकर हटी और कोठरीके एक कोने की तरफ गई जहां एक बड़ा सा ताक बना हुआ था। कोई तर्कीब ऐसी की जिससे उसके भीतर एक छोटी सुरंग का मुहाना नजर आने लगा। बिन्दो उसी सुरंग में उतर गई और पीछेसे सुरंगका मुंह बन्द कर लिया। अन्दर एकदम अंधेराथा पर बिन्दो ने इसका कुछ ख्याल न किया और अन्दाज से टटोलती हुई जाने लगी।

बहुत देर तक बिन्दो इसी तरह अंधेरे में चली गई और अन्त में एक ऐसी जगह जाकर रुकी जहां एक छोटी कोठरीकी तरह पर बनी हुई थी जिसके आगे

की तरफ के कई सूराखों की राह कुछ हवा और रोशनी वहां आ रही थी। बिन्दो कुछ देरतक वहां रुककर सुस्ताती रही और तब फिर आगे की तरफ बढ़ी। पहले ही की तरह अंधेरी तंग और बन्द सुरंग मिली जिसमें पुनः देरतक वह चलती गई और इस बार जब रुकी तो उसके सामने दो तीन डण्डा सीढ़ियां और उनके पीछे एक बन्द दर्वाजा था। अवश्य ही अंधेरे के कारण यह सब कुछ नजर न आता पर बिन्दो ने यहां रुक कर किसी जगह से सामान निकाल रोशनी की जिससे हमारी भी निगाहें उन सीढ़ियों तथा दर्वाजेको देख सकीं। यह दर्वाजा जो ऊँचाई में बहुत ही कम बल्कि किसी खिड़की सा मालूम होता था कुछ अजीब ढंग का बना हुआ था। इसमें जगह जगह पर पचासों ही फूलदार कांटियां जड़ी हुई थीं जिन पर कहीं कहीं कुछ अक्षर भी खुदे हुए थे। हाथ की रोशनी की मदद से बिन्दो ने इन कांटियों को बहुत गौर से देखा और तब कई को किसी खास क्रम से दबाया जिससे एक हलकी आवाज हुई और वह दर्वाजा या खिड़की जो कुछ भी कहिये खुल गई। बिन्दो ने रोशनी बुझा कर सामान उसी जगह रख दिया और आप सीढ़ियां चढ़ती हुई उस राह के बाहर हुई।

यह एक छोटी कोठरी थी जिसका दर्वाजा खुला हुआथा। बाहर झांकने पर सामने एक हरा भरा बाग नजर आया, कुछ सोच विचार के बाद बिन्दो इस बाग में जाना ही चाहती थी कि यकायक रुक कर पीछे हट गई क्योंकि उसके कानों में कुछ ऐसी आवाज गई जिसने उसको चौंका दिया। कोई कड़ी आवाज में डपटकर बोला, "ठहर तो जा कमबख्त, कहां भागता है !" और इसके साथ ही किसी ने इस दर्वाजे की राह अन्दर कोठरी में घुस फौरन अपने पीछे वह दर्वाजा बन्द कर लिया, उसके पीछे पीछे ही कोई आदमी उस दर्वाजेके दूसरी तरफ आ पहुंचा जिसने दर्वाजे को जोर से ठोकर मारी मगर तब तक वह बन्द हो चुका था, उसने जोरका धक्का दिया मगर इस बीच वह दर्वाजा मजबूतीसे बन्द कर लिया गयाथा यह आदमी जो भाग कर इस कोठरी में घुस आया था अब घूमा और बिन्दो की तथा उसकी निगाहें चार हुईं, बिन्दो चमक गई क्योंकि उसने देखा कि ये माया-रानी के दारोगा साहब हैं जिनकी हालत कुछ घबराई हुई सी थी और जो इस तरह से हांफ रहेथे मानों बहुत दूरसे भागते हुए चले आ रहे हों। इधर दारोगा ने भी बिन्दो को देखा और चमककर बोला, 'तू कौन ?" बिन्दो ने बहुत कोशिश करके अपने को सम्हाला और जवाब दिया, "मैं, आपकी लौंडी सुभद्रा, जिसे आपने बिन्दो के भेष में रानीजी के पास रहने का हुक्म दिया था।" दारोगा कुछ देर

तक गौरसे देखता रहा, तब बोला, "ठीक है, मैं तुझे पहिचान गया, मगर तू इस जगह इस समय कैसे ?" बिन्दो ने कहा, "रानीजी के एक बहुत ही जरूरी कामसे आपकोखोजतीहुईअजायबघरतक गई पर आप न मिले तब धनपतजीकी बात सुन यह ख्याल हुआ कि शायद आप इस जगह हों इस लिए आई थी।" दारोगा बोला, "क्या धनपत लौट आई?" बिन्दो हाथ जोड़कर बोली, "जीहां।"

दारोगा थोड़ी देर तक खड़ा कुछ सोचता रहा। इसी समय उसके पीछे वाले दर्वाजे पर फिर जोरकी एक चोट पड़ी जिसे सुन वह डर सा गया और बोला, "अच्छा भीतर सुरंगमें चलकर तुझसे बातें करूँगा जरा इसे पकड़ तो, मैं दर्वाजा मजबूत बन्द कर दूं।" दारोगा के हाथ में एक छोटी गठरी थी जिसे बिन्दोने पकड़ लिया मगर उसकी तरफ निगाह पडते ही न जाने क्यों चमक सी गई। एक बार गौरसे पुनः उस पोटली को देखा और तबदारोगाकी तरफ निगाहकी मगर वह घूम कर अपने पीछे वाले दर्वाजे को मजबूत बन्द करने की धुन में लगा हुआ था। बिन्दो की निगाह पुनः उस गठरी की तरफ घूमी और उसके मुंह से बहुत ही धीरे से निकला, "बेशक वही है, मगर यह इसके पास कैसे ?"

दारोगा ने दर्वाजा अच्छी तरह बन्द कर दिया और तब घूमता हुआ बोला, "बस अब कोई डर नहीं, फिर भी यहां से चल देना ही मुनासिब है!" बिन्दो की तरफ देखकर उसने कहा, "सुरंग में चल कर तुझसे बातें करूँगा, मेरे पीछे आ।" बिन्दो बोली, "जो हुक्म" और सुरग के उस छोटे दर्वाजे के सामने से हट गई जो अभी तक खुलाही हुआथा। दारोगा सुरगके अन्दर घुस गया और बोला, "भीतर आ जा तो मैं दर्वाजा बन्द कर दूं।" बिन्दो ने कहा, "बहुत अच्छा!" और दर्वाजे की तरफ बढ़ी। दारोगा ने भीतर से कहा, "ला वह पोटली मुझको पकड़ा दे।" बिन्दो दर्वाजे की तरफ बढ़ी मगर वह गठरी उसको पकड़ाने के बदले हाथ बढ़ा उसने सुरंग का दर्वाजा अपनी तरफ खींच लिया और साथ साथ सिकड़ीभी चढ़ा ली। दारोगा घबरा कर बोला, "हैं यह क्या कर रही है तू सुभद्रा !" मगर बिन्दो ने कोई जवाब न दिया बल्कि दर्वाजे के ठीक ऊपर की तरफ लगी हुई एक खूंटी को जोरसे दबा दिया जिससे वह और भी मजबूती से बन्द हो गया। बिन्दो इसके बाद वहां भी न ठहरी, अपने पीछे वाला वह दर्वाजा जिसकी राह दारोगा अभी अभी इस कोठरी के अन्दर आया था उसने फुर्तीसे खोला और उसके बाहर निकल उसको भी बाहर की तरफ से मजबूत बन्द कर लिया।

बाहर वाले बाग में एक दम सन्नाटा था। बिन्दो को खयाल था कि वह

आदमी जो दारोगा का पीछा करता हुआ यहां तक आया था और जिसने दर्वाजे में धक्के दिए थे अभी तक वहीं होगा, मगर वहां कोई भी न था और न चारो तरफ देखनेसे ही कोई कहीं उसकी निगाह में आया। कुछ सोचती हुई वह दर्वाजे के पास से हटी और लपकती हुई एक तरफ़ को चली। बहुत जल्दी ही पेड़ों के एक घने झुरमुटके अन्दर पहुंचकर इस नीयत से उसने अपने को छिपा लियाकि अगर दारोगा किसी तर्कीब से दर्वाजे खोलता हुआ उस बाग में आ भी पहुंचे तो जल्दी उसको पा न सके पर उसकाडर बृथाथा और दारोगाका फिर कहींपता न लगा।

कुछ देर बाद बिन्दो का मन शान्त हुआ और वह इस लायक हुई कि सोचे कि अब आगे क्या करना चाहिये। एक बार उसने अपने हाथ वाली गठरी पर निगाह की बल्कि उसका एक कोना खोलकर उसके भीतर के सामानों को देखा। उसके मुँह से पुनः निकला, "बेशक वही है, मगर यह दारोगा के हाथ क्योंकर लगी और इसके बिना तिलिस्म का काम कैसे चलेगा!" उसने पुनः गठरी को ज्यों का त्यों बांध दिया और सोचने लगीकि अब क्या करना मुनासिब होगा।

बिन्दो कुछ निश्चय न कर सकी, मगर साथ ही इस बाग में ठहरने की भी उसकी हिम्मत न हुई क्योंकि दारोगा का डर उसके जी में समाया हुआथा। कुछ सोच विचार वह झुरमुट से बाहर निकली और पेडों और झाड़ियों की आड़ ही आड़में चलती हुई बाग के पिछले हिस्से की तरफ बढ़ी जिधर कुछ इमारतें नजर आ रही थीं। वह पोटली उसने कपडों के अन्दर छिपा कर कमर मे बांध ली।

कुछ ही दूर चलने के बाद बिन्दो एक बारहदरी के पास पहुंची जो इस बाग के बीचोबीच में बनी हुई थी। बारहदरी कोई कमर भर ऊँची कुर्सी देकर बनी हुई थी और उसके बाहर की तरफ उसकी सतह से हाथ डेढ़ हाथ नीचा लम्बा चौड़ा चबूतरा उसके चारो तरफ बना हुआ था। बाग से इस चबूतरे पर चढ़ने और चबूतरेसे बारहदरी में जानेके लिये छोटी छोटी सीढ़ियां कई तरफ बनी हुई थी। इन्हीं चबूतरों में पूरब तरफ वाले चबूतरे पर एक छोटे खम्भे के ऊपर एक हिरन खड़ा हुआ बनाया गयाथा जो किसी धातु का था या पत्थरका इसका पता न लगता था। जिस समय इस चबूतरेके बगल से होती हुई बिन्दो आगे बढ़ी जा रही थी, इस हिरन ने उसकी तरफ देख एक अजीब अन्दाज से अपनी सींगें टेढ़ी कीं जिससे बिन्दो को बड़ा ही ताज्जुब और कुछ कौतूहल भी हुआ और वह चलते चलते रुक कर उस हिरन की तरफ गौर से देखने लग गई। हिरन ने एक पैर उठाया और अपने कान के पीछे खुजला कर फिर सीधा कर लिया।

बिन्दो का ताज्जुब और बढ़ा । यद्यपि उसके मन में हुआ कि यह कोई तिलिस्मी खेल है और इससे दूर ही रहना चाहिये, फिर भी उसकी चंचल प्रकृति न मानी और वह चबूतरे पर चढ उस हिरन के पास पहुंच उसे गौरसे देखने लगी, उसके देखते देखते हिरनने अपनी गर्दन पीछेकी तरफ घुमाई और इसतरह आंखें घुमाई मानों अपने पीछे आते हुए किसी शिकारी को देख रहा हो । बिन्दो को और भी ताज्जुब हुआ, वह दो कदम आगे बढ़ हिरन के और भी पास पहुंच गई ।

जिस खम्भे पर यह हिरन खड़ा किया गया था उसके बाहर की तरफ चारो ओर काले पत्थर का कोई दो हाथ चौड़ा एक घेरा चबूतरेके फर्श पर बना हुआ था। बिन्दो चलती हुई इसी काले घेरे के पास पहुंची।जैसे ही उसका पैर उस काले पत्थर पर पड़ा पत्थर का एक टुकड़ा जोर से हिला । वह चौंकी और चमक कर पीछे को हटने लगी मगर मौका न मिला, वह पत्थर का टुकड़ा यकायक भीतर की तरफ धंस गया और उसके साथ ही साथ बिन्दोभी जमीनके अन्दर धस गई। यह सब इतनी फुर्ती से हो गया कि बिन्दो अपने बचाव के लिये कुछ भी न कर सकी बल्कि डर और घबराहट से बेसुध हो गई ।

पांचवां बयान

सुबह होने में अभी कुछ समय वाकी है फिरभी पूरब तरफ का आसमान सफेदी पकड़ चुका है और मन्द मन्द दक्षिणी हवा के झोंके बदन में लगने शुरू हो गये हैं । कभी कभी कहीं कहीं से नाजुक चिड़ियों के कोमल कण्ठ की सुरीली तान भी सुनाई पड़ जाती है- पर अभी उन्होंने घोसलों के अन्दर ही से ताक झाक शुरू की है, बाहर निकलने की हिम्मत नहीं की है ।

ऐसे समय में एक नौजवान जरूरी कामों से निपट, बहते हुए नाले के पानी में स्नान कर, उसी के किनारे की एक साफ चट्टान पर बैठा संध्योपासन कर रहा है । इस वक्त की गुलाबी सर्दी से बचने के लिए केवल एक हलकी चादर उसने ओढ़ी हुई है और उसके पहिनने के कपड़े, हथियार और अन्य मुखतसर सी चीजें तथा कुछ जरूरी सामान जिनकी उसने एक साधारण गठरी सी बनाई हुई है, उसके बगल की दूसरी चट्टान पर पड़े हैं ।

मगर यह स्थान कौन सा है ? क्या कोई जंगल बियाबान या पहाड़ी मैदान है ? नहीं बल्कि यह एक बहुत ही खुशनुमा और बिगहों तक फैला हुआ मनोहर बाग है जिसमें स्थानस्थान पर तरहतरह की इमारतें भी पेड़ों की आड़से अपना सिर ऊंचा किये नजर आरही हैं,पर अभी चांदना काफी न होनेके कारण उनके

बारे में यह कहना कठिन है कि वे कैसी या किस प्रकार की हैं ।

इस जगह का सन्नाटा यद्यपि यह बताता हैकि यहां सिवाय उस नौजवान के और कोई भी यहां तक कि चिड़िया का एक बच्चा भी नहीं है और उस नौजवान का भी जरूर यही ख्याल है नहीं तो शायद वह इस तरह से निश्चिन्त बैठा न रहता पर हम बखूबी जानते हैं कि वास्तव में ऐसी बात नहीं है और उस नौजवान का एक बहुत बड़ा दुश्मन भी यहां उसके पास में मौजूद है जो मौका पाकर अपनी घात करना चाहता है । जिस ढोंके पर नौजवानने स्नान करती समय अपने कपड़ेलत्ते सामान और हथियार आदि रख दिये हैं उसके पासही के एक दूसरे बड़े ढोंके की आड़में उसका यह दुश्मन इस समय दुबका हुआ है और छिपी निगाहों से सब तरफ देखता हुआ किसी कार्रवाई की फिराक में है, और इस बात का पता उस नौजवान को बिल्कुल नहीं है ।

जिस समय प्राणायाम करने के लिए नौजवान ने आंखें बन्द कीं और नाक पर उंगलियां रक्खीं, उसी समय दुश्मन ने अपना मौका समझा । दुबका हुआ वह उस ढोंके की आड़ से कुछ बाहर हुआ और वहीं से हाथ बढ़ा वह छोटी गठरी उठा ली जो उस नौजवानके कपड़ोंके पास पड़ी हुई थी, इसके बाद ही वह दुबक कर फिर अपनी जगह जा छिपा, यह काम उसने इतनी आहिस्तगी और फुर्ती से कियाकि नौजवान को जरा आहट तक न लग पाई और वह अपनी जगह पर निश्चिन्त बैठा रहा । कुछ देर बाद जब उसने अपने गले वाली माला उतारी और एकाग्र मन से आंखें बन्द करके जप करने लगा,अब दुश्मन को पुनः मौका मिला । वह अपने पहिले ढोंके की आड़ से निकल कुछ दूर वाले एक दूसरे ढोंके की आड़ में हो गया और तब वहां से भी हटता हुआ धीरे धीरे इस जगह से दूर निकल गया ।

नौजवान की पूजा समाप्त हुई और वह अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ । कपड़ों के पास पहुंच अपनी पोशाक पहिरी और हर्बे बदन से लगाये और तब पहिले पहल उसका ध्यान उस छोटी गठरी की तरफ गया जिसे उसका दुश्मन उठा ले भागा था । उसने चमककर चारो तरफ देखा और उसके मुंह से निकला, "हैं, वह पोटली जिसमें मेरी तिलिस्मी किताब थी कहां गई !"

इधर उधर चारो तरफ देखा, ढोंके के नीचे ऊपर सब तरफ देखा, मगर वह गठरी थी ही कहां जो उसे दीखती! नौजवान एकदम घबरा गया और बोल उठा, "मुझे खूब याद है कि मैंने उसे इसी जगह कपड़ों के बगल में रख दिया था ।

तब वह कहां जा सकती है? जरूर यह मेरे किसी दुश्मन की कारवाई है और जरूर यहां कोई गैर आदमी आया हुआ है।" उसने अपनी निगाह उठाई और उसी समय दूर के पेड़ों की झुरमुट के अन्दर छिपते हुए उस आदमी की एक झलक देख ली जिसकी यह कार्रवाई थी। उसने दहाड़ कर कहा, "ठहर तो जा बदमाश, कहां जाता है !" और ढोंके के नीचे कूद कर बेतहाशा उसी तरफ को लपका जिधर दुश्मन भागा था।

लेकिन फासला बहुत था और उस बहुत बड़े बाग में छिपने की जगहें और निकल भागने के रास्तों की कमी न थी, अस्तु उस नौजवान की मेहनत और फुर्ती कुछ काम न आई और उसने सिवाय उस पहिली झलक के फिर अपने दुश्मन की दूसरी झलक न पाई। बहुत देर तक वह इधर से उधर दौड़ता घूमता और खोज ढूंढ करता रहा मगर उसकी मेहनत का कोई नतीजा न निकला और अन्त में एकदम हताश होकर सुस्ती की हालत में एक जगह जाकर खड़ा होगया।

यह जगह जहां वह नौजवान रुका था एक छोटा दालान था जिसकी कुर्सी बागीचे की जमीन से ज्यादा ऊंची न थी और जिसके पीछे वाली दीवार पर तरह तरह की तस्वीरें और नक्शे बने हुए थे। दालान के बीचोबीच में पत्थर का एक छोटा सिंहासन रक्खा हुआ था जिस पर जाकर वह नौजवान बैठ गया और हथेली पर सिर रख कर कुछ सोचने लगा।

यकायक उसके बगल ही से कहीं से आवाज आई, "क्यों बेटा क्या बात है? सूरज इतना चढ़ आया और तुमने अभी अपना काम नहीं शुरू किया !"

आवाज सुनते ही नौजवान चमककर अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ और बोला, "मैं तुम्हारी ही राह देख रहा था। जान पड़ता है मेरा कोई दुश्मन फिर इस तिलिस्म में आ पहुंचा है, मेरी तिलिस्मी किताब गायब हो गई।"

आवाज आई, "तिलिस्मी किताब गायब हो गई ! सो कैसे ? तुमने उसे कहां रक्खा था ? कब की यह बात है?" नौजवान जवाब में बोला, "आज अभी अभी ही ! तिलिस्मी किताब ने आज सुबह जल्दी ही उठ कर काम में लग जाने को कहा था सो मैं रात रहते ही उठा और निपट नहाकर संध्या कर रहा था, वह किताब और कुछ दूसरा सामान एक गठरी में बंधा हुआ मेरे कपड़ों के साथ ही पड़ा हुआ था, पूजा से उठ कर देखता हूं तो वह गठरी गायब है।"

आवाज० । तुमने किसी को देखा भी है ?

नौजवान०। दूर पेड़ों की झुरमुट में कोई आदमी भागता नजर आया पर

जब तक वहां पहुंचूं वह गायब हो गया था। मैंने बहुतेरा खोजा ढूंढ़ा पर फिर कहीं किसी का पता न लगा।

आवाज० । बड़े ताज्जुब की बात है ! तुमको ठीक ख्याल है कि आज सुबह वह किताब तुम्हारे पास थी ?

नौज० । हां हां इसमें जरा भी शक नहीं, नहाने के बाद पूजा पर बैठने के वक्त तक भी वह उसी जगह पड़ी हुई थी, मुझसे सिर्फ तीन चार हांथ के फासले पर, बीच बीच में उसे देखता भी जाता था और फिर मुझे देर ही कितनी लगनी थी पूजा में ? घड़ी आधी घड़ी से ज्यादा नहीं लगा होगा। मेरी समझ में तो यह उसी आदमी का काम है जिसने एक बार पहिले मुझे परेशान किया था और गिरफ्तार करके किताब ले ली थी, वही जिसमें देखते देखते गायब हो जाने की सिफत थी और जिसके हाथ से बड़ी मुश्किल से मेरी जान बची थी।

आवाज० । नहीं यह उसका काम नहीं है, वह आजकल यहां है भी नहीं और न जल्दी उसके आने की ही उम्मीद है। खैर तुम फिक्र न करो, जिस किसी का भी यह काम होगा उसका पता बहुत जल्द लगा लिया जायगा। तुम उठो और आगे के काम में हाथ डालो। तुम उस किताब को कई बार पढ़ चुके हो और इस समय फिलहाल तुमको उसकी कोई जरूरत नहीं है क्योंकि जरूर ही तुम्हें मालूम होगा कि अब तुमको आगे क्या कार्रवाई करनी है।

नौज० । सो तो बेशक सही है, मगर फिर भी तिलिस्मी किताब...

आवाज०। वह तुम्हारी चीज है और जरूर तुम्हें वापस मिलेगी। तुम इसमें कोई शक न समझो और रंज अफसोस छोड़ अपने काम में लग जाओ। बस उठ जाओ, देर मत करो !

"अच्छी बात है, मैं अपना काम शुरू करता हूं।" कहता हुआ वह नौजवान उठ खड़ा हुआ। सिंहासन से नीचे उतर के वह बोला, "मगर तुमसे बन पड़े तो जरूर मेरे इस दुश्मन का पता लगाना!" जवाब में आवाज आई, "जरूर ऐसा ही होगा।" मगर इस बार आवाज के रुख से पता लगा कि बोलने वाला कुछ दूर हट गया है या किसी तरफ को जा रहा है। नौजवान ने भी फिर कुछ सवाल जवाब न किया और उस दालान से उतर पूरब की तरफ रवाना हुआ।

कुछ ही देर बाद नौजवान एक छोटे चबूतरे के पास पहुंचकर रुका जिसके ऊपर एक मूरत बैठाई हुई थी, यह मूरत किसकी है या किस चीज की बनी हुई है इसका पता न लगता था क्योंकि यह सब तरफ से ऐसी गल पच गई थी कि

अब कोई आकृति स्पष्ट न रह गई थी और महज एक पिण्डिका जैसी सूरत हो गई थी। नौजवान कुछ देर तक इस मूरत को देखता रहा तब बोला, "जरूर उस मसाले के लेप ने इसकी यह हालत कर दी है !" इसके बाद उचक कर वह चबूतरे के ऊपर चढ़ गया और जोर करके उस मूरत को उखाड़ने लगा। यद्यपि वह बहुत मजबूत बैठाई हुई थी पर नौजवान के बदन में ताकत भी भरपूर थी जिसकी मदद से आखिर उसने उसे उखाड़ ही लिया और तब लिए दिए चौतरे के नीचे उतर आया। सामने थोड़ी ही दूर पर एक ऐसा हौज था जैसा अकसर बागीचों में आबपाशी के काम के लिए बनाया जाता है, फर्क अगर कुछ था तो यही कि यह संगमर्मर का बना और इस समय पानी से लबालब भरा हुआ था। नौजवान इसके पास पहुंचा और उस मूरतको उठाकर इसके भीतर डाल दिया।

पानी में मूरत के गिरते ही हौज में से इस तरह की आवाज आने लगी जैसी कि लाल तपा हुआ भारी लोहा जल में डुबाने पर आवाज निकलती है। हौज का पानी बीचोबीच से उबाल खाने लगा और उसमें से कुछ धूआं भी निकलने लगा, पर नौजवान ने इसका कोई ख्याल न किया और पुनः लौटकर उसी चबूतरे पर पहुंचा जिस पर से इस मूरत को उखाड़ा था। जहां पर वह मूरत थी वहां एक छोटासा गड़हा नजर आ रहा था जिसके अन्दर हाथ डाल कर वह कुछ करने लगा।

यकायक बड़े जोर की आवाज हुई और वह चबूतरा कांपने लगा, नौजवान ने कोई फिक्र न की मगर अपना हाथ गड़हेमें से निकाल लिया और जमकर वहीं बैठ गया। चबूतरा पुनः कांपा और तब उस नौजवानको लिए दिए जमीन के अन्दर धंस गया। झटके की वजह से नौजवान की आंखें बन्द हो गईं और इससे वह कुछ देख न पाया कि चबूतरा कितना नीचे उतर गया पर वह अपनी जगह पर जमा बैठा रहा और जब एक झटके ने उसे बताया कि चबूतरे की चाल बन्द हो गई और वह कहीं रुक गया है तो वह उस पर से उतर पड़ा। उसके उतरते ही वह चबूतरा फिर ऊपर को उठ गया पर नौजवान ने इस बात की फिक्र न कर अपने सामानोंको टटोला और सब कुछ ठीक पाकर अपने चारो तरफ देखा।

एक बड़ा कमरा किसी छोटे मोटे राजदर्बार या महफिलके ढंग पर सजा हुआ इस समय उस नौजवान की आंखों के सामने था। बीचोबीच बहुत लम्बा चौड़ा फर्श बिछा हुआ था जिसके एक सिरे पर ऊंची गद्दी और तकियेथे तथा फर्श के चारो तरफ कमरे की दीवार के साथ साथ बहुत सी मखमली गद्दी वाली कुर्सियां लगी हुई थीं। कमरे की दीवारोंमें जगह जगह छोटे बड़े कितनेही दर्वाजे

थे पर वे सभी इस समय बन्द थे और उसके अन्दर सिर्फ उन कई बड़े बड़े रोशनदानों के जरिये रोशनी आ रही थी जो ऊपर की तरफ बने हुए थे। दीवारों के साथ कहीं कहीं तरह तरह के चित्र टंगे हुएथे और रोशनी का सामान कंवल दीवारगीर हंड़िया झाड़ फानूस आदि आदि भी करीने के साथ जगह जगह लगे टंगे और रक्खे हुए थे। गरज कि यह स्थान सब तरह से लैस महफिल के किसी कमरे की तरह पर मालूम हो रहा था, मगर था यह एकदम से खाली, कहीं एक चिड़िया का पूत भी इसमें नजर न आ रहा था।

नौजवान कुछ देर तक इस कमरेकी कैफियत देखता रहा, तब आगे बढ़ा और कमरे की दीवारों के साथ साथ चलता हुआ चक्कर लगाने लगा। उसका ध्यान जगह जगह लगी हुई उन तस्वीरों पर था और जान पड़ता है उन्हीं में वह कोई चीज ढूंढ़ रहाथा क्योंकि एक तस्वीर के सामने पहुंचकर वह रुका और कुछ देर तक उसको गौर से देखने के बाद धीरे से बोला, "बेशक यही है।" इस तस्वीरके ठीक नीचे एक सिंहासन रक्खा हुआथा, नौजवान उसी पर बैठ गया और तब अपनी सुनहरी तलवार मियान से निकाल हाथ में ले ली। इसकी नोकसे उसने अपने पीछे वाली तस्वीर को एक खास जगह पर छू दिया और तब पुनः उसको मियान में रख लिया।

तस्वीर पर तलवार की नोक लगनेके साथही किसी जगह पर एक घण्टी जोर से बज उठी और साथ ही नौजवान के सामने पड़ने वालाकमरे का दर्वाजा खुल गया। नौजवान ने देखा कि इधर कमरे के बाहर एक बहुत बड़ा दालान है जिसके बाद एक बाग की कैफियत नजर आ रही है जिसे देखते ही उसके मुंह से निकल गया, "ओह, यह तो वही बाग है जिसका नाम तिलिस्मी किताब में आनन्द-बाग बताया है! तब क्या मैं घूमता फिरता फिर उसी जगह आपहुंचा?" मगर इसी समय उसका ध्यान बंटा क्योंकि न जाने किधर से आते हुए दो आदमी बाहर का दालान पारकर उसी दर्वाजे की राह कमरेके अन्दर आपहुंचे और नौजवान के सामने पहुंच झुकझुक कर लम्बी सलामें करने के बाद हाथ जोड़ अदब से खड़े होकर बोले, "महाराज, मोहफिल का सब सामान दुरुस्त है, क्या मर्जी होती है ?" नौजवान मुस्कुरा कर बोला; "तो फिर देर क्यों ? गाना बजाना शुरू होने दो !"

"जो हुक्म महाराज का।" कह कर दोनों ने फिर फर्शी सलाम किया और पीछे हटते हुए कमरेके बाहर निकल गये। नौजवान मनहीमन धीरे से बोल उठा,

"ये सचमुच के जिन्दे जागते आदमी हैं या कल के पुतले ? मैं तो कुछ फर्क नहीं पा रहा हूं। मेरे लिये तो इतना भी कहना एक दम मुश्किल है कि ये क्या हैं और कैसे काम करते हैं ?"

पुनः घण्टी बजी और इस बार नौजवान के पीछे वाली दीवार के दाहिने और बाएं बगल के दो दर्वाजे खुले। तरह तरह का सामान लिए कई लौंडियां इनमेंसे बाहर हुईं। किसी के हाथमें पानदान था किसीके इतरदान, कोई आफ-ताबा लिये हुए थी तो कोई पानी की झारी। कुछ चंवर और मोरछल लिये हुई थीं जो हमारे नौजवान के पीछे जा खड़ी हुईं, बाकीभी अपने अपने ठिकाने कायदे से खड़ी हो गईं और वे दोनों दर्वाजे बन्द हो गये।

पुनः एक घण्टी की आवाज हुई और बाईं तरफ के दो दर्वाजे खुल गये। कुछ सुन्दर कमसिन और नाजुक औरतें जिनकी पोशाक उनको गानेबजाने का पेशा करनेवाली होना बता रही थी इन दर्वाजों से दाखिल हुईं और नौजवान के सामने से होती और उसको सलामें करतीं हुई जाकर सामने के फर्श पर एक तरफ अदब और करीने से बैठ गईं। बाद में कुछ साजिन्दे निकले जिनके हाथों में तरह तरह के साज और बाजे थे और ये भी नौजवान को सलाम करते हुए जाकर उन गाने वालियों के पीछे बैठ गये। वे दोनों दर्वाजे बन्द हो गये। नौज-वान के मुंह से निकला, "यदि ये सब पुतले पुतलियां हैं तो कम से कम मेरी आंखें तो जिन्दाआदमियोंमें और इनमें कोई फर्क ढूंढ़कर निकाल नहीं पातीहैं!!"

कुछ रुक कर पुनः घण्टी की आवाज आई। इस बार दाहिनी बगल के दो दर्वाजे खुले। दो औरतें जिनके रंग ढंग और पोशाक से जान पड़ता था कि राज-महल की रानियों की सखियां होंगी, बाहर निकलीं, और नौजवान के सामने आ अदब से सलाम करने के बाद पिछले पांव लौट गईं, कहीं से लाकर दो बारीक चिकें उन दर्वाजों के सामने उन्होंने टांग दी और तब एक बार पुनः नौजवान को सलाम कर उन चिकों के पीछे जाकर गायब हो गईं। अन्दाज से नौजवान को मालूम हुआकि इन चिकों के दूसरी तरफ कुछ औरतें आकर बैठ रही हैं।

साजिन्दों ने साज मिलाना शुरू किया और थोड़ी देर बाद गाना बजाना शुरू हो गया। नौजवान बहुत गौर से सुनने लगा। सुबह के समय की राग-रागिनियां चलने लगीं।

और अब हमें मालूम हुआकि यह केवल एक मन बहलाव का सामान या तमाशा ही नहीं था बल्कि इसके भीतर किसी तिलिस्मी कार्रवाई की भी झलक थी, क्योंकि कुछ ही देर बाद नौजवान के मुंह से निकला, "बेशक वही है!"

और उसने जोर से ताली बजाई। गाना बजाना एक दम से रुक गया और वे ही दोनों चोबदार दौड़तेहुए आकर नौजवानके सामने हाथ बांधे खड़े होगये जिनकी तरफ देख नौजवान ने कहा, "वह बांसुरी वाला एकदम बेसुरा बजा रहा है, उसे मेरे सामने हाजिर करो।"

साजिन्दों में मिला हुआ एक कम उम्र लड़का बांसुरी लिए हुए था जिसे वह मौके पर मुंह से लगाकर बजाता था। नौजवान का इशारा उसी की तरफ था और देखते देखते दोनों चोबदारों ने उसे पकड़ के लाकर नौजवान के सामने खड़ा कर दिया, वह डर से कांपता हुआ नौजवान के पैरों की तरफ झुका पर नौजवान ने डांट कर कहा, "चुपचाप खड़ा रह और मेरी बातों का जवाब दे! तू किसका लड़का है ?"

नौजवान के पीछे खड़ी मोरछल करने वालियों में से एक की तरफ उंगली उठाकर वह लड़का बोला, "सरकार, मेरी मां वह है!" नौजवान ने घूम कर देखा और उस लौंडी ने सहमते हुए सलाम किया जिस पर नौजवानने उसे सामने आने का इशारा किया। वह डर से कांपती हुई नौजवान के आगे हुई और डरा हुआ लड़का उसका हाथ पकड़कर खड़ा हो गया। नौजवान कड़े स्वर में बोला, "इन दोनों को छोड़ कर बाकी के सब लोग कमरे के बाहर हो जाओ।"

नौजवान के हुक्म की फौरन तामील की गई और लोग उठ उठ कर सलामें करते हुए जो जिधर से आया था उधर ही को जाने लगा, देखते देखते वह कमरा एकदम खाली हो गया। नौजवान ने जोर से ताली बजाई और कमरे के सब दर्वाजे भी पहिले की तरह बन्द हो गए, केवल वे दोनों मां बेटा और हमारा नौजवान बस ये ही तीन यहाँ रह गए।

नौजवान कुछ देर तक एक टक उस लौंडी को देखता रहा इसके बाद बोला, "तू किस महल में रहती है और क्या काम तेरे सपुर्द है ?" वह पुतली बोली, "सरकार मैं छोटी रानी की पासवान हूं।" नौजवान ने पूछा, "कहां हैं वह इस समय?" लौंडी ने हाथ जोड़कर जवाब दिया, "सरकार ने खफा होकर उनको कैद में रखने का हुक्म दिया था। वे इस समय 'वायु मंडप' में एकदम अकेली बन्द हैं, सिर्फ सुबह शाम हम लोग उनका खाना लेकर थोड़ी देर के लिये जाया करते हैं।" नौजवान ने कहा, "क्या तू मुझे वहां ले चल सकती है!" लौंडी ने जवाब दिया, "क्यों नहीं महाराज!" नौजवान बोला, "अच्छा तो चल मेरे आगे आगे और इस लड़के को भी साथ लेती चल।"

"जो हुक्म" कह उस लौंडी ने सलाम किया और लड़के का हाथ पकड़े हुए

पलट पड़ा। कमरेके दाहिनी तरफ वाला एक छोटा दर्वाजा इसने खोला और उसके अन्दर हुई, 'नौजवान भी सिंहासन से उठ उसके पीछे चल पड़ा मगर अपनी सुनहरी तलवार मियान से निकाल अपने हाथ में जरूर ले ली।

कितने ही कमरों दालानों कोठरियों और सहनों को पार करती हुई वह लौंडी नौजवान को लिए घुमाती फिराती एक दूसरी ही इमारत के सामने जाकर खड़ी हुई जो यद्यपि थी तो उन्हीं इमारतों का ही एक हिस्सा पर सब तरफ से अलग और सबसे ऊंची थी। सामने मोटे मोटे पत्थरों से पटा हुआ एक बड़ा आंगन था जिसमें उस इमारत का बहुत बड़ा आलीशान बन्द फाटक नजर आ रहा था। यद्यपि उस इमारत के पीछेकी तरफ क्या था इसका ठीक पता वह ऊंची कनाती दीवार लगने न देती थी जो उसके दोनों बगलों से बढ़ती हुई दूर तक निकल गई थी फिर भी अंदाज से नौजवान समझ गयाकि इसके पीछे वही बाग पड़ता होगा जो मोहफिल वाले कमरे से नजर आया था!

वह लौंडी तो फाटक के पास चली गई और वहाँ कुछ करने लगी मगर हमारा नौजवान उस इमारतसे कुछ दूर ही खड़ा हो सिर ऊंचा कर बड़े गौर से उसे देखने लगा। एक बहुत ही ऊंची इमारत जो किसी तरह से दस बारह मंजिल से कम न होगी उसके सामने थी। इमारत बहुतही खूबसूरत और बजेहदार बनी हुई थी पर इसकी हर मंजिल अपने नीचे वाली मंजिल से छोटी होती जाती थी, यहाँ तक कि सबसे ऊपरी मंजिल पर कई खम्भों पर खड़ा सिर्फ एक छोटा गोल गुम्बद नजर आरहा था जिसकी नोक ऊंची उठी हुईथी और जो उस ऊंचाई पर होने के ही कारण शायद यहाँ से देखने पर एक दम ही छोटा जान पड़ता था। नौजवानने यह भी देखाकि इमारत का समूचा सामने वाला हिस्सा जहाँ तक निगाह काम करती है छोटी बड़ी मूर्तियोंसे ढंका है और उनमेंसे प्रत्येक मूरत के हाथ में कोई न कोई बाजा है। जितने तरह के भी बाजे इस नौजवान ने अपनी उम्र में देखे थे वे सभी तो थे ही उनके अलावे पचासों ऐसे बाजे नजर आ रहे थे जिनको न तो उसने आज तक देखा था और न कभी नाम ही सुना था। फाटक के ठीक ऊपर संगमर्मर के एक टुकड़े पर लिखा था—'वायु-मण्डप'।

इसी समय नौजवान ने देखाकि उस इमारतके फाटक की एक छोटी खिड़की खुल गयी और किसी ने भीतर से झांक कर बाहर देखा। उस लौंडी से इसकी कुछ बातें हुईं जिसके बाद ही फाटक खुल गया और दो सन्तरी बाहर निकल दोनों तरफ खड़े हो गये। उस लौंडी ने घूम कर नौजवान की तरफ देखा जिसने कहा, "तुम अन्दर चलो, मैं तुम्हारे साथ हूं।" लौंडी इमारत के भीतर चली,

लड़का उसका हाथ पकड़े पकड़े चला और पीछे पीछे नौजवान हुआ। सन्तरियों के सामने पहुंचते ही उन्होंने नौजवान को बड़े अदब से सलाम किया और नौजवान के अन्दर हो जाने पर आप भी अन्दर हो फाटक भीतर से बन्द कर लिया जिससे वहाँ कुछ अंधेरा सा हो गया।

लौंडी ने घूम कर नौजवान की तरफ देखा और कहा, "सरकार यदि सीधे रानी साहब के पास जाना चाहें तो इस सिंहासन पर विराज जांय और यदि इस इमारत की कुछ सैर करते हुए जाना चाहें तो इन सीढ़ियों के रास्ते पधारें।" नौजवान ने देखा कि उसके सामने ही काले पत्थर का एक बड़ा सिंहासन रक्खा हुआ है, बगल की तरफ निगाह की जिधर लौंडी ने दिखाया था तो सीढ़ियों का सिलसिला ऊपर जाता हुआ नजर आया। वह इन सीढ़ियों हीकी तरफ घूमा और उसके इशारे पर वह लौंडी अपने लड़के का हाथ पकड़े आगे हुई।

तीन मंजिल तक तो नौजवान को इस इमारत मे कोई खास बात नजर न आई पर जब वह इसकी चौथी मंजिल पर पहुंचा तो उसने देखा कि ढंग बदल रहा है और इमारत में कुछ विचित्रता नजर आने लगी है। जगह जगह कुछ लिखा हुआ भी उसको दिखाई पड़ा। एक जगह एक तख्ती के सामने खड़े होकर उसने पढ़ा, लिखा हुआ था—"पुष्प-मण्डप।"

लौंडी ने पीछे घूमकर देखा और बोल उठी, "महाराज, यह 'पुष्प-मंडप' है। इसकी भिन्न भिन्न खिड़कियों को खोल देने से भिन्न भिन्न प्रकार के पुष्पों की सुगन्धें आती हैं? क्या सरकार देखेंगे!" नौजवान ने जरा गर्दन झुकाई। लौंडी ने सामने का बड़ा दर्वाजा खोल दिया और नौजवान ने वह कमरा देखा जिसके बीचोबीच एक विचित्र सिंहासन रक्खा हुआथा जिसकी बनावट कुछकुछ कमलके पुष्प के जैसी थी। लौंडी के कहने से नौजवान आगे बढ़ा और साथ ही कमल के फूलों की सुगन्ध उसके नाक में गई। मालूम होता था कि सैकड़ों कमल के फूल चारो तरफ खिले हुए हैं जिनकी भीनी भीनी सुगन्ध सब तरफ फैल रही है।

लौंडी ने आगे बढ़ कर सामने की एक छोटी खिडकी खोल दी, साथ ही हवा का एक झोंका आया और नौजवान का नाक गुलाब की खुशबू से भर गया; मालूम होता था कि दौरे के दौरे चैती गुलाब के फूल पास में ही कहीं बिखरे हुए हैं। नौजवान को सन्देह हुआकि शायद नीचे के बागसे यह खुशबू आ रही हो पर गौर करने से मालूम हुआ कि यह बात नहीं है। उसी समय लौंडी ने वह खिडकी बन्द कर दी और एक दूसरी खोली। जूही की खुशबू हवा के झोंके से मिल कर

आने लगी। इसी तरह पारी पारी से लौंडी ने कई खिड़कियाँ खोलीं और हर एक में से किसी न किसी फूल के सुगन्ध की लपटें निकलीं। आखिर नौजवान ने कहा, "ठीक है मैं समझ गया, अब चलो आगे बढ़ो।"

"जो हुक्म" कह लौंडी ने खिड़कियाँ बन्द कीं और नौजवान के बाहर निकलने पर उस कमरे का दर्वाजा भी बन्द कर दिया। लौंडी पुनः सीढ़ी पर चढ़ने लगी और नौजवान उसके पीछे हुआ। ऊपर की मंजिल में पहुंचते ही सामने की तख्ती पर लिखा हुआ नौजवान ने पढ़ा 'षड्रितु-मण्डप'। लौंडी उसकी इच्छा समझ आगे बढ़ी और सामने वाला दर्वाजा खोल कर भीतर घुसी! नौजवान ने देखा कि षट्कोण कमरा है जिसकी छहों तरफ की छः दीवारों में छः बड़ी खिड़कियाँ बनी हुई हैं। लौंडी ने आगे बढ़कर एक खिड़की खोल दी, ग्रीष्म ऋतु की बदन झुलसानेवाली लू के झोंके सामने से नौजवान के चेहरे पर इस तेजी से लगने लगे कि कुछ ही देर में वह घबरा गया। लौंडी ने वह खिड़की बन्द कर दी और एक दूसरी खिड़की खोली। माघ पूस की हड्डियाँ कड़कड़ा देने वाली ठंढी हवा आने लगी। लौंडी ने इसे भी बन्द कर एक तीसरी खिड़की खोली, पावस ऋतुकी शीतल मन्द वायु से कमरा भर गया।

"ठीक है", कह कर नौजवान घूमा और उसका मतलब समझ कमरा बन्द करती हुई वह लौंडी पुनः सीढ़ियाँ चढने लगी, पीछे पीछे नौजवान जाने लगा। तीनों मंजिल पर मंजिल पार करते हुए चढ़ने लगे। बीच बीच में लिखी हुई तख्तियाँ मिलती थीं पर सिवाय एकबार पढ लेने के नौजवान और फिर कहीं भी रुका नहीं। उन तख्तियों में किसी पर लिखा था—"वाद्य-मण्डप" किसी पर "गीत-मण्डप", किसी पर "राग-मण्डप" किसी पर "नृत्य-मण्डप"। आखिर जब एक जगह "स्वर-मंण्डप" लिखा हुआ नौजवान ने देखा तो वह रुका और उसके इशारे पर लौंडी ने उस तख्ती के नीचे वाला दरवाजा खोला।

एक कमरा जो नीचे वाले सभी कमरों से छोटा था अब नौजवान के सामने था। कमरे के बीचोबीच एक बाघम्बर बिछा हुआ था और उस पर कोई औरत लेटी हुई थी जिसकी तरफ देख उस लौंडी ने पुकारकर कहा, "रानीजी, रानीजी, देखिये महाराज आए हैं!"

मगर कई आवाज पड़ने पर भी उस सोने वाली ने जुम्बिश न ली। लौंडी नौजवानकी तरफ देखकर बोली, "जान पड़ता है रानीजी को नींद आगई है।" नौजवान यह सुन मुस्कुरा दिया और उस लड़के की तरफ देख कर बोला, "जो

राग तुम नीचे मोहफिलमें बजा रहे थे वही फिर बजाओ।" लड़केने अपनी बासुरी होठों पर रक्खी और एक गत बजाने लगा। दस ही बीस दफे स्वर भरा था कि वह सोने वाली चमककर उठी और झिड़ककर उस लड़के से बोली, "क्या गलत सलत बजा रहा है! ला अपनी बांसुरी मुझको दे, और सुन यह गत कैसे बजाई जाती है!" लड़के ने बासुरी उस औरत के हाथ में दे दी और वह उसको बजाने लगी।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि उस औरत को बांसुरी बजाना बहुत ही अच्छा आता था और वह इस समय तन्मय होकर उसको बजा भी रहीथी पर नौजवान का ध्यान इस तरफ बिलकुल था ही नहीं। वह न जाने किस चीज की खोज में इस कमरे में चारो तरफ घूम रहा था और दीवारों पर ऊपर नीचे सब तरफ बारीक निगाहों से देख रहा था! आखिर एक जगह पहुंच कर वह रुका। कमरे की चिकनी दीवारके बीचोबीच कुछ लकीरें खिंची हुई थीं और उनके बीच बीच में 'सा रे ग म' आदि संगीत के स्वर लिखे हुए थे। नौजवान ने अपनी तिलिस्मी तलवार हाथ में ली और इन अक्षरों के सामने उसकी नोक करी, तब बांसुरी बजाने वाली की तरफ ध्यान दिया और थोड़ी देर बाद बोले, "तुम भी गलत बजा रही हो, उतरती समय धैवत तीव्र नहीं कोमल लगेगा।" साथही तलवार की नोक से 'ध' अक्षर को दबा दिया। बांसुरी का स्वर जरा बदल गया और नौजवान ने गौर करके कहा, "ऋषभ भी गलत लग रहा है।" और पुनः एक अक्षर तलवार की नोकसे छूआ। बांसुरी के स्वर में पुनः कुछ परिवर्तन हुआ और नौजवान ने गौर से सुन कर कहा, "यदि मेरा संगीत-ज्ञान ठीक है तो अब यह रागिनी बिलकुल शुद्ध बज रही है।"

अभी मुश्किल से यह बात नौजवान के मुंह से निकली होगी कि वह औरत जो बांसुरी बजा रही थी और जिसे लौंडी ने 'रानीजी' के नाम से सम्बोधित किया था बांसुरी फेंककर उठ खड़ी हुई और जोरसे यह कहती हुई कि 'महाराज बेशक आप ही वे गुणी हैं जिनके आने की मैं इतने दिनों से राह देख रही थी' नौजवान के पैरों पर गिर पड़ी। नौजवान जरासा मुस्कराकर पीछे हट गया और बोला, "तुम्हारा ख्याल ठीक है, वह मैं ही हूं और मैं तुमसे उस चीज को लेने आया हूं जो मेरे ही वास्ते एक धरोहर की तरह तुम्हारे पास रक्खी हुई है।"

वह औरत यह सुनते ही पीछे घूमी और अपने सिहाने के नीचे से कोई चीज निकाल नौजवान के सामने करती हुई बोली, "महाराज लीजिए, आपकी धरोहर हाजिर है।" नौजवान ने देखा कि उसके हाथ में एक छोटी पुस्तक है जिसके

चारो तरफ पतली सोने की जंजीर लपेटी हुई है । जंजीर के एक सिरे से एक छोटी ताली भी लटक रहीथी, नौजवानने बड़ी प्रसन्नतासे वह पुस्तक और ताली ले ली और उसे माथे से लगाया, इसके बाद बोला, "अच्छा, तुम लोग अब अपने अपने ठिकाने जाओ, मैं आगे के काम में लगता हूं।" वह रानी यह सुन बोली, "पर महाराज,हमलोगोंपर कृपा कब होगी? कबतक हम इसकैदमें पड़ी रहेंगी?" नौजवान बोला, "अभी तुम लोगों के सुपुर्द कई काम और हैं जिन्हें पूरा करने के बाद ही तुम इस कैद से छूट सकोगी, धैर्य के साथ स्थिरता-पूर्वक अपना कर्तव्य करती चलो।" रानी ने बड़े अदब से हाथ जोड़ झुक कर कहा, "ऐसा ही होगा महाराज, परन्तु कृपा कर इतना बताते जांय कि अब हमारी मुक्ति में कितना समय बाकी है ?" नौजवान बोला,"इस वायु-मडप का तिलिस्म टूट जाने पर दूसरे दर्जे का काम समाप्त होजायगा, इसके बाद जब तीसरादर्जा भी टूट जायगा तब तुम लोगों को मुक्ति मिलेगी। अच्छा अब तुम लोग जाओ, मैं अपने काम में लगूंगा।" रानी लौंडी और उस लड़केने नौजवानको सलाम किया और पिछलेपांव चलते हुए कमरे के बाहर हो सीढ़ी के पास पहुंच नीचे उतर गये। नौजवान कुछ देर उनकी तरफ देखता रहा, तब धीरे से बोला,"तिलिस्मी किताब में लिखा रहने पर भी विश्वास नहीं होता कि ये सब पुतले पुतलियां हैं और किसी शक्तिके बल पर काम कर रहे हैं। भला इनकी चाल ढाल, बातचीत और करतब देख के भी कोई कह सकता है कि ये जिन्दा मनुष्य नहीं हैं !!"

नौजवान कुछ देर चुपचाप खड़ा तिलिस्म बनाने वालों की बुद्धि पर आश्चर्य करता रहा, इसके बाद उसने वह किताब और चाभी जो पुतली से पाई थी सम्हाल कर अपने कपड़ों के अन्दर रक्खी और इस मंजिल के ऊपर जाने वाली सीढ़ी की तरफ घूमा। अब तकतो सीढ़ियां खूबसूरत चौड़ी और कुशादा मिलती आई थीं पर अब बहुत ही तंग पतली ऊंचे डण्डों वाली और घुमावदार सीढ़ियों पर उसे चढ़ना पड़ा तथा जब उसने उनको तयकियातो देखाकि वह इस इमारत की सब से ऊपरी मंजिल यानी उसी गुम्बज में पहुंच गया है जिसे उसने नीचे से देखा था। पतले खम्भों पर इस गुम्बज की गोल छत रक्खी हुई थी पर नीचे से यह जितना छोटा मालूम होता था उतना वास्तव में न था और यहां इतनी जगह थी कि बीस पचीस आदमी बखूबी इसके अन्दर बैठ सकते थे। इसकी छत के बीचोबीच दो मजबूत जंजीरें लटक रही थीं जिनके सिरोंके साथ झूले की तरह लटकता हुआ किसी धातु का बना हुआ एक मोरटगा हुआ था जो इतना बड़ा था

कि कई आदमी उसकी पीठपर बखूबी बैठ सकते थे। नौजवान आगे बढ़ा और उस मोर को बहुत गौर से देखने लगा।

बहुत ही सुन्दरता और कारीगरीके साथ बने उस मोरके पंख आधे खुले हुए थे और दुम ऊपर की तरफ उठी और फैली हुई थी, यकायक देखनेसे यही गुमान होता था मानों बरसात का मौसम जान यह मोर पख फैला बस अब नाचना ही चाहता है, नौजवान ने इसकी पीठ पर और गर्दन को बड़े गौरके साथ देखा और तब उसके पास से हट उस गुम्बज के बाहर बने गोल बारामदे में आया जहां से झांक कर उसने नीचे देखा। ऊँचाई इस कदर थी कि उसे एक बार झांई सी आ गई पर वह सम्हलकर चलता हुआ उस गोल बारामदेका चक्कर लगाने और नीचे को बहुत गौरसे देखने लगा। वह बाग जिसे उसने नीचे से देखा था इस समय उसके सामने फैला हुआ था और उसके बीचोबीच में बनी हुई सगमर्मर वाली बारहदरी यहां से ऐसी जान पड़ती थी कि मानों किसी कारीगर ने कूचीसे उसकी तस्वीर बना दी हो, नौजवान क्षण भर उसे देखता रहा, इसके बाद आप ही आप धीरे से बोला, "मुझे इस समूचे बाग को पार कर उस सामने वाली इमारतकी छत पर पहुंचना पड़ेगा,परन्तु यदि कहीं तिलिस्मी कारीगरीने धोखा दियातो इतने ऊंचेसे गिरकर मेरी हड्डीपसलीका भी पता न लगेगा।" ऊंचाई पर ध्यान दे वह एक बार कुछ सिहर सा गया पर साथ ही सम्हला और फिर बोला, "मगर ऐसा हो नहीं सकता और तिलिस्मी कारीगरी धोखा दे नहीं सकती,जरूर यह मोर मुझे लेकर उड़ता हुआ उस मकान की छत तक पहुंच जायगा। अच्छा अब देरी करने की जरूरत नहीं।"

नौजवान लौटा और पुनः उस मोर के पास पहुंचा। एक बार अपनी स्मरण शक्ति पर जोर देकर तिलिस्मी किताब में यहां के तिलिस्म के बारेमें जो कुछ पढ़ा था सो याद किया, और तब भगवान का स्मरण कर उचक के उस मोर की पीठ पर जा चढ़ा,अपने दोनों पैर उसके दोनों पंखों के साथ मजबूत फंसा लिये, पीठ मोर के बदन पर शायद इसी काम के लिये बनी एक अड़ानी से सटा ली और दोनों हाथों से मोर की गर्दन खूब मजबूती से पकड़ ली। एक बार फिर भगवान का नाम लिया और तब मुंह आगे बढ़ा दांतों से मोर के सिर पर उठी हुई चोटी को जोर से पकड़ कर खींचा।

एक तीक्ष्ण स्वर उस मोर के गले से निकल कर चारो तरफ गूंज उठा। उसने अपने दोनों डैने फैला दिये तथा पूंछ और भी टेढ़ी करनौजवान की पीठ

दोनों बगल और सिर के ऊपर से भी उसके फैलाव के अन्दर ले ली, और तब वह एक अजीब अदासे इधर उधर पेंगें लेने लगा,यद्यपि वह पेंग उन्हीं जंजीरों के सहारे परथी जिनसे वह टंगा हुआ था पर देखने वालों को यही गुमान हो सकता था कि वह उड़ने के लिए अपने डैने तौल रहा है।

पेंगों की लम्बान बढ़ने लगी और अब वह मोर हर पेंग पर उस गुम्बज के बाहर जाने लगा। पेंगों की लम्बान और बढ़ी और वह हर बार पहिले से ज्यादा ऊंचा भी उठने लगा। हवा के झोंके लगने से नौजवान की आंखें बन्द होने लगीं। अचानक उसे ऐसा जान पड़ा मानों उसके हाथ पैर और समूचा बदन उस मोर के शरीरसे ऐसाचिपकगयाहैकि कोशिश करने परभी छूट कर अलग न हो सकेगा।

पेंगें और भी लम्बी हुईं और तब यकायक मोर के गले से दुबारा एक चीख की आवाज निकली। नौजवान के बदन को एक कड़ा धक्का लगा। उसको ऐसा ज्ञात हुआ मानों जंजीरें जिनके सहारे झूले की तरह वह मोर पेंगें ले रहा था, यकायक टूट गई हैं और वह मोर अधर में आ गया है। दूसरे क्षण ऐसा ज्ञान पड़ा मानों वह उसे लिए दिए हवा में उड़ रहा हो, नौजवान को बड़ा भय मालूम हुआ और उसने चाहा कि अपने पैरों से मोर का बदन और भी भरपूर जकड़ ले पर हाथ पांव मानों अवश हो रहे थे। इसी समय उसके बदन में बिजली का एक झटका लगा जो इतना कड़ा था कि उसे तनोबदनकी सुध न रह गई और वह मूर्छित हो गया।

छठवां बयान

बिन्दो जब होश में आई उसने अपने को एक नई ही जगह में पाया। उसके सामने थोड़ी ही दूर पर संगमर्मर की एक ऊंची बारहदरी थी और चारो तरफ बहुत बड़ा और खुशनुमा बाग जिसमें सैंकड़ोंही फुहारे बने हुए थे जिनमें कुछ छूट रहेथे मगर ज्यादातर बन्द थे,एक नहर जिसमें पानी बहुत काफी जान पड़ता था इस बाग के बीचोबीच में से बह रही थी और उसी के किनारे वह इस समय पड़ी हुईथी, ताज्जुब में डूबी वह उठ कर बैठ गई और अपने चारो तरफ देखने लगी।

इस बाग के चारो तरफ तरह तरह की इमारतें बनी हुई थीं मगर पेड़ों की बहुतायत के कारण उनका बहुत थोड़ा ही हिस्सा नजर आ रहा था फिर भी एक बहुत बड़ी और ऊँची इमारत जो काफी दूर पर थी, पेड़ों की चोटियों के ऊपर अपना ऊंचा सिर उठाये बिन्दोको नजर आ रही थी जिसकी बनावट कुछ अजीब तरह की थी और जिसके सिरे पर एक छोटा गुम्बज खड़ा दिखाई पड़ रहा था।

बिन्दो आश्चर्य के साथ इस इमारत को देखने लगी क्योंकि इस गुम्बद की नोकदार चोटी में उसे कुछ विचित्रता नजर आई। बिन्दो को उसमें से कुछ धूआं सा निकलता नजर आया जो एक अजीब काले रंग का था और तेजी से उठता हुआ सीधा आसमान की तरफ बढ़ रहा था।

बिन्दो के मन में ख्याल हुआ कि जब धूआं निकल रहा है तो जरूर उस जगह कोई आदमी भी होगा और वह न जाने उसका दोस्त होगा कि दुश्मन अस्तु वह बड़े गौरसे उस गुम्बज की तरफ देख ही रहीथी कि यकायक चमक गई। उसके पीछे से किसी की आवाज आई,"तू कौन है?" उसने चौंक कर पीछे की तरफ देखा और एक खूबसूरत नौजवान को खड़ा पा आश्चर्य करने लगी जिसने उसको चुप पा पुनः पूछा, "तू कौन है और यहां कैसे आई?"

बिन्दो सकपका कर उठ खड़ी हुई मगर उसके मुंहसे कोई आवाज फिर भी न निकली और तरह तरह की बातें सोचती हुई वह चुपचापही रह गई। नौजवान फिर बोला,"तेरे चुप रहने से मुझको सन्देह होता है। क्या मैं तुझे अपना कोई दुश्मन समझूं?"

अब बिन्दो ने कहा,"हरगिज नहीं,मगर अपना हाल कहने के पहिले क्या मैं आपका कुछ परिचय जान सकती हूं?" नौजवानने गौर से उसकी तरफ देखते हुए कहा,"मैं अपना परिचय तो नहीं दे सकता पर इतना कह सकताहूंकि मैं इस तिलिस्म का मालिक हूं और इस समय इसको तोड़ने का काम कर रहा हूं!"

बिन्दो ने हाथ जोड़ कर प्रणाम किया और बोली,"ठीक है,परिचय देने की आवश्यकता नहीं,मैं आपको पहिचान गई और मैं कौनहूं या कैसे यहां पर आई यह अभी अभी बताती हूं पर पहिले कृपा कर इतना और बता दीजिये कि क्या आपकी कोई चीज चोरी गई है?"

नौजवान ताज्जुबसे उसकी तरफ देखताहुआ बोला,"हां एक छोटी गठरी जरूर चोरी गई है जिसमें मेरा कुछ बहुत ही जरूरी सामान था।" बिन्दो ने कपड़ों के अन्दर से वह छोटी गठरी निकाली और नौजवान को दिखा कर कहा, "क्या यही है वह?"

गठरी देखते ही नौजवान के मुंह से प्रसन्नता की एक आवाज निकल गई। उसने झपटकर बिन्दो के हाथ से उसे लेलिया और जल्दी जल्दी खोला, बाकी सामानके ऊपर रक्खी हुई एक छोटीकिताब सबसे पहिले उसे नजर आई जिसे देखते ही उसके मुंह से खुशी की किलकारी निकल गई और उसने फुर्ती से उठा उस किताब को अपने कलेजे से लगाते हुए कहा,"आ हा, इसी के बिना तो मैं

मुर्दा हो रहा था ! मगर सच बता कि यह गठरी तुझे कहां मिली ? क्या तूने ही इसको चुराया था ?"

बिन्दो बोली,"जी नहीं, बल्कि जिसने चुराया और ले भागना चाहा था उसके हाथसे इसे लिए आ रहीहूं और डरतीहूं कि कहीं वह मेरा पीछा करता हुआ यहां न आ पहुंचे क्योंकि उस हालतमें वह मुझको कभी जीता न छोड़ेगा!"

नौजवान हंसकर बोला,"मुझको धोखा देकर या गाफिल पाकर कोई चाहे कुछ भी कर ले पर जब तक मैं सावधान हूं किसी की मजाल नहीं कि मेरे सामने आकर तुझको परेशान कर सके,तूबताकि कौनहै और किससे तूने यहगठरीली!"

बिन्दो ने कुछ कहनेके लिये मुंह खोला ही था कि यकायक उसकी निगाह किसी पर पडी जिसे देखते ही उसके मुंह से डर की आवाज निकल गई और वह घबडा कर बोली, "भगवान ही कुशल करे, देखिये वह दुष्ट इधर ही आ रहा है जिसके हाथसे मैंने इसे छीना था ! होशियार हो जाइये और अपने बचाव की फिक्र कीजिये !"

बिन्दोको इतना डरने और ऐसा कहने का कारण था क्योंकि उसने अपने सामने ही पेड़ों की झुरमुट के बाहर आते हुए एक आदमी को देखा जो बिल्कुल उसी ढंग और पोशाक में था जिसमें उसने थोडी देर पहले दारोगा को देखा था या अगर फर्क कुछ था तो केवल इतना ही कि इस समय उसके चेहरे पर नकाब पडी हुई थी और हाथ में एक तलवार थी, बिन्दोकी निगाहकी सीधमें देखते हुए नौजवानने भी इस आने वाले को फौरन ही ढूंढ़ निकाला और उस तिलिस्मी किताब को जेबमें डाल गठरीके सामानों को हिफाजतसे रखता हुआ बोला,"क्या तू बता सकती है कि यह कौन है ?" बिन्दो डरती हुई बोली, "हो न हो ये जमानिया के दारोगा साहब हैं !"

नौजवान के मुंह से ताज्जुब के साथ निकला, "दारोगा !" और साथ ही उसका ढंग बदल गया, क्रोध से उसका चेहरा लाल होगया और वह गुस्से से कांपता हुआ कुछ क्षण तक एकटक उस आने वाले की तरफ देखता रह गया, इसके बाद कमर से तलवार खींच ली और उसकी तरफ बढ़ा मगर तुरत ही रुक कर बिन्दो से बोला,"शायद यह मौका पाकर तुझ पर हमला करे,तू...(कुछ रुककर) अच्छा तू इस संगमर्मर वाली बारहदरी पर चढ़ जा, वहां पहुंच कर वह जल्दी तेरा कुछ बिगाड़ न सकेगा।"नौजवानने बारहदरीकी तरफ हाथ उठा कर बताया और तब उस आने वालेकी तरफ बढ़ा जो पास पहुंच चुका था। मगर इस आने वाले की निगाह भी बिन्दो पर पड़ चुकी थी। नौजवान को

अपनी तरफ बढ़ता पा वह कावा काट उसके सामनेसे हट गया और बिन्दोकी तरफ बढ़ा। उस नौजवानके मुंहसे निकला,"मेरा सामना कर कम्बख्त, उधर कहां जाता है !" पर वह लपककर बिन्दो के सामने आ खड़ा हुआ और गौर से उसकी सूरत देखता हुआ बोला,"तू कौन है,सच बता नहीं अभी तेरा सिर काट कर फेंक दूंगा !" उसने अपना तलवार वाला हाथ ऊंचा किया मगर उसी समय नौजवान की आहट उसने अपने पीछे पाई और घूमकर देखा,झपटता हुआ नौजवान उसके पीछे आपहुंचा था और वार करनाही चाहता था, यह देख उसके मुंह से गुस्से के साथ निकला, "ठहर जा, पहिले मैं तुझी से समझ लूं तब इस कम्बख्त की खबर लूंगा।"

उस नौजवान और नकाबपोश में तलवारके हाथ चलने लगे और सहमी हुई बिन्दो इस लड़ाई की कैफियत देखने लगी,यद्यपि इसमें कोई शक नहींकि नकाबपोश अपने फन का उस्ताद था और उसने तलवार के अच्छे हाथ दिखाये पर वह नौजवान उससे कहीं ज्यादा फुर्तीला था और शीघ्र ही मालूम हो गया कि वह अपने विपक्षी को दबा लेगा। नकाबपोश भी इस बात को जल्दी ही समझ गया और साथ ही उसने अपना ढंग बदल दिया। मौका बचा उसने अपना एक हाथ अपने कपड़ों के अन्दर किया और एक छोटीसी थैली बाहर निकाल हवामें उछाल दी। गिरते गिरते तलवार का एक हाथ उस पर दिया जिससे वह कट कर दो टुकड़े हो गई और उसके भीतर भरी हुई मैदे की तरह कोई बुकनी जो बहुत ही हलकी और दूर दूर तक फैल जाने वाली थी, कपड़ा कटने से निकल कर चारो तरफ फैल गई।

इस बुकनी में जो बात की बात में दूर दूर तक फैल गई जरूर बहुत ही तेज बेहोशी का असर था क्योंकि जरा सी ही इसमें की बुकनी सांसके साथ नौजवान के नाक के अन्दर गई होगी कि वह लड़खड़ाया और दूसरे क्षण में जमीन पर आ रहा। बिन्दो पर भी जो यहांसे काफी दूर पर थी, इस बुकनीका असर हुआ और देखते ही देखते वह भी जमीन पर लेट गई। नकाबपोश खुश होकर बोला, "वह मारा, बच्चा जी मेरी इस बुकनी से कैसे बच सकते थे ! मगर सबसे पहिले इसकीतलवारपर कब्जा करना चाहिये,यहबड़ीही खतरनाक चीजहै इसकेपास।"

नकाबपोश उस नौजवान की तरफ बढ़ा मगर दो ही एक कदम चलकर रुक गया ! किसी ने उसके बगल ही से डपट कर कहा, "अबे मूर्ख, क्या करता है, खड़ा रह!" चमक कर वह नकाबपोश अपने सब तरफ देखने लगा मगर कहीं

कोई नजर न आया जिस पर वह ताज्जुब से बोला,"यह किसकी आवाज मैंने सुनी ?" पास ही कहीं से जवाब मिला, "मेरी !" और साथ ही नकाबपोश चौंक गया। उसने अपने सामने एक सुफेद शक्ल खड़ी पाई जिसके आंख कान नाक मुंह कुछ भी न था, सिर्फ एक खोल की तरह की आकृति नजर आ रहीथी।

इस सुफेद शक्लको देखतेही नकाबपोश क्रोधमें आकर गरज उठा और तड़प कर बोला, "ओह, तू आ पहुंची ! मेरी सबसे बड़ी दुश्मन तो असल मे तू ही है, और आज मैं तुझसे भी पूरी तरह से समझ लूंगा !" तलवार वाला हाथ ऊँचा कर नकाबपोश इस सुफेद शक्ल की तरफ झपटा मगर वह अपनी जगह से जरा भी न हिली और एक अजीब ढग से हस कर बोली, "शेर, सचमुच आजकल तेरी अक्ल चरने चली गई है !"

नकाबपोश चमक कर रुक गया और उसके मुँह से घबराहट भरे स्वर में निकला, "यह किसकी आवाज सुन रहा हूं !!" जवाब में पुनः वैसी ही हसी सुन पड़ी, साथ ही वह सुफेद खोल हिलकर जमीन पर गिर पड़ी और उसकी आड़ में से निकली हुई एक नई शक्ल सामने नजर आ गई जिसने इस नकाबपोश पर अजीब असर पैदा किया, इसने अपने हाथकी तलवार दूर फेंक दी और दूसरे हाथ से नकाब भी खींच कर फेंकने के बाद यह कहता हुआ उस सूरत के पैरों पर गिर पड़ा, "बूआजी, आप ही हैं ! शेरसिंह का दिल कह रहा था कि आपके सिवाय और कोई हो ही नहीं सकता !!"

सचमुच उस सफेद खोल की आड़ से निकलकर बूढ़ी देवीरानी ही खड़ी मन्द मन्द मुस्कुरा रही थीं जिन्होंने शेरसिह की पीठ पर प्यार से हाथ फेरा और उन्हें पैरों से उठाते हुए कहा, "उठो शेरसिह, और समझ लो कि यह नौजवान और कोई नहीं तुम्हारा गोपालसिंह ही है, जो तिलिस्म के दो दर्जे तोड़ता हुआ यहां आ पहुंचा है, और वह बिन्दो बनी हुई तुम्हारी मैना है ।"

आश्चर्य के मारे शेरसिह के मुँह से कोई आवाज न निकल सकी, वे हक-बका कर कभी उस नौजवान और कभी उस औरत की तरफ देखते रह गये जो दोनों ही अभी तक बेहोश पड़े हुए थे। बड़ी कठिनता से उन्होंने कहा, "गोपाल-सिंह और मैना !" देवीरानी हंसती हुई बोलीं, "हां गोपालसिंह और मैना, पर तुम पहिले इन्हें होशमें लाने की फिक्र करो और तब वे बातें मुझसे पूछो जिनको जानने के लिये जरूर व्याकुल हो रहे होगे !"

"मैं इन्हें अभी होश में लाता हूं" कहते हुए शेरसिह उस नौजवान की तरफ

बढ़ गए मगर उसी समय बूआजी ने पुकार कर कहा,"देखो होशियार, गोपाल के बदन पर हाथ न लगाना नहीं बेहोश होजाओगे। वह तिलिस्मी कवच पहिरे है।" ताज्जुब करते हुए रुक कर शेरसिह बोले,"तिलिस्मी कवच! यह क्या चीज है?" और तब उन्होंने बड़े गौर से नौजवान की तरफ देखा, उन्होंने देखाकि जो रेशमी पोशाक नौजवान पहिरे है उसके अन्दर से छन छन कर एक सुनहरी आभा बाहर निकल रही है । और भी गौर करने से मालूम हुआ कि सोने की बहुत ही बारीक तारोंको कपड़े की तरह बिनकर उसकी एक पोशाक बनाई गई है जिसे अपने बदन पर पहिनकर नौजवान ने ऊपर से अपने मामूली कपड़े पहिन रक्खेथे ! उन्होंने ताज्जुब से कहा,"क्या इसी सुनहरी पोशाक से आपका मत-लब है?" देवीरानी बोलीं,"हां,यह तिलिस्मी कवच है । इसकी तारीफ यह है कि जोकोई इसे छूएगा बेहोश हो जायगा और इसके पहिरनेवाले पर किसी हथि-यारका कोई असर न होगा, उसे किसी तरह की भी चोट न लग सकेगी,और वह ऊँची से ऊँची जगह से बेखटके कूद सकेगा।" शेरसिह ताज्जुबसे बोले,"बड़ी अजीब चीज है यह !" देवीरानी ने जवाब दिया,"यह तिलिस्म ऐसी चीजों से भरा हुआ है,मैंने इसके जोड़की एक नकाबभी इसे दी थी जो इस समय इसके चेहरे पर नहीं है । वह अगर होती तो तुम्हारी बेहोशी की बुकनी का भी कोई असर इस पर न पड़ता ।"

ताज्जुब के साथ शेरसिंह ने सिर्फ इतना ही कहा,"ऐसी चीजोंका पता सिर्फ आपको ही हो भी सकता है बूआजी!" और तब अपने काम करने का ढग बदल दिया, अपनी कमर में बँधा हुआ ऐयारी का बटुआ उन्होंने खोला और उसके अन्दरसे पतली पतली सीखों की तरह की कोई चीज निकाली जो वास्तव में एक तरह की धूपबत्ती थी जिसकी सुगन्ध का अद्भुत असर यह था कि वह हर तरह की बेहोशी को बात की बात में दूर कर सकतीथी। चकमक से बाल कर इसकी दो तीन बत्तियां शेरसिंह ने नौजवान के आस पास जमा दीं और तब बिन्दो की तरफ घूमे । बटुए से लखलखा निकाल कर सुंघाते ही बिन्दोने दो तीन छींकें मारी और तब उठ कर बैठ गई । शेरसिंह को अपने सामने देखते ही वह चौंकी और बोल उठी, "हैं,सरदार साहब आप?"साथही उसकी निगाह देवीरानी पर पड़ी और वह सकपका कर उठ खड़ी हुई । बूआजी हस कर बोलीं, "मैना, मैंने अपने को शेर पर प्रकट कर दिया क्योंकि गोपाल को अब तिलिस्मके काम में इसकी कुछ मदद की जरूरत पड़ेगी। तू उठ और मेरे पास आकर बताकि जरा-

निया महल में जाकर तैंने किन बातों का पता लगाया ?"

इसी समय वह नौजवान भी सगबगाया और तब दो एक छींकें मार कर उठ बैठा। ताज्जुबके साथ वह कभी देवीरानी कभी मैना और कभी शेरसिंहको देखने लगा। देवीरानी उसकी यह हालत देख कर हँसीं और बोलीं, "गोपाल, जिस तिलिस्मी भूत के बारेमें तुम बार बार मुझसे पूछा करतेथे वह तुम्हारे सामने है, देखो और पहिचानो।"

नौजवान शेरसिंह की तरफ देखता हुआ ताज्जुबसे बोला, "मगर मैंतो अपने सामने शेरसिंह ऐयार को देख रहा हूं जिनका बहुत बड़ा एहसान मेरी गर्दन पर है!" बूआजीने इसका जवाब दिया, "और ये ही उस तिलिस्मी भूत की सूरत बन कर तुम्हारे सामने आया करते थे। एक दूसरे को न पहिचानने की वजह से ही यह सब हुआ।"

शेरसिंह इसी समय बोल उठे, "मगर ताज्जुबकी बात है कि मैं राजा साहब को बिलकुल नहीं पहिचान पा रहा हूं! यद्यपि इनकी आवाज हूबहू वही है जो पहिलेभी कई बार मुझे शकमें डाल चुकी है पर सूरत बिलकुल दूसरी है, क्या इनकी सूरत ऐयारी ढंगसे बदल दी गई है?" बूआजी ने जवाब दिया, 'नहीं ऐयारी कुछ भी नहीं है और इसकी सूरत उस झिल्लीकी बदौलत इस तरह बदल गई है जो इसने अपने चेहरे पर लगाई हुई है। जिसमें इसके दुश्मन इसको पहिचान न सकें इसीलिये मैंने यह तर्कीब की थी। गोपाल, जरा झिल्ली हटा कर शेर का शक पूरी तरह से दूर तो कर दो।"

उस नौजवान ने खड़े होकर अपनी गर्दन के पीछे हाथ किया और तब एक पतली सी झिल्ली अपने चेहरे पर से उतार कर अलग कर दी जिसके साथ ही गोपालसिंह की असली सूरत निकल पड़ी। शेरसिंह के मुंह से निकला, "वाह, ये तो सचमुचही राजा गोपालसिंह हैं जिनके गायब हो जानेसे मैं इस कदर तरद्दुद में पड़ा हुआ था!" उन्होंने आगे बढ़कर गोपालसिंह को पुनः खूब गौर से देखा तब उन्हें सलामकरनेके बादकहा, "बेशक इनके गोपालसिंह होनेमें कोई शक नहीं, मगर बूआजी, मेरी तबीयत घबरा रही है और कुछ समझ में नहीं आ रहा है कि यह सब क्या भेद है। रोहतासगढ़ के तहखाने से ये कहां गायब हो गये थे, वह तिलिस्मी किताब कौन उठा लेगया था, राजमहल से आप और जमानिया से मैना कहां गायब हो गई थी?"

देवीरानी बोली, "मैं सब कुछ बताती हूं मगर पहिले हम लोग कहीं ठिकाने से बैठ जांयतो बेहतर हो।" आगे बढ़कर वे उस संगमर्मर की बारहदरी पर चढ़ गईं और उनके पीछे और लोग भी वहां पहुंच कर उनके आस पास बैठ गए। बूआजी बोलीं—

बूआ०। शेरसिंह, मैं इस समय बहुत ही थोड़े में सब हाल तुमको बताए देती हूं और खुलासा हाल फिर कभी कहूंगी क्योंकि तुमको अभी ही एक जरूरी काम से चले जाना पड़ेगा। देखो मामला यह है कि मुझको बहुत दिनों से यह शक हो रहा था कि दिग्विजय अपनी किसी घात में लगा है और कभी न कभी जरूर मुझको धोखा देगा। तुमको अच्छी तरह मालूम है—क्योंकि तुम्हारी ही यह कार्रवाई थी कि मैना बिन्दो बना कर जमानिया महल में भेजी गई थी, गोपालसिंह का पता लगाने के काममें तुम्हारी मदद करने के लिए। वही मैना जब एक दिन अपनी असली सूरतमें मेरे पास आई और बोलीकि महलमें कोई काम बन न सका और सरदारसाहबने उसको वापस लौटजानेको कहा हैतो मेरामाथा ठनका और मैं होशियार हो गई, जांच करने से पता लगाकि यह मैना नहीं कोई ऐयारा है और मेरे दुश्मनों से मिली हुई है, अस्तु मैंने अपनी कार्रवाई जारी कर दी। तुम मानकी लौंडी को तो जानते ही होगे?

शेर०। कौन, वह बुढ़िया मानकी?

बूआ०। हां वही, जो मेरे साथ लड़कपन से है और मेरा सब भेद जानती है। तुमको यह जान ताज्जुब होगा कि वह मेरे साथ कई दफे तिलिस्म के अन्दर भी जा चुकी है जिसके कई गुप्त भेदों और रास्तों का हाल भी उसको बखूबी मालूम है। उसी बुढ़िया मानकीको मैंने रंग रंगाकर ठीक अपनी सूरत का बनाया और उसको हर तरह की बातें समझा बुझा कर अपने कमरे के नीचे वाले तहखाने में टिका दिया। एक रात जब नकली मैना को कुछ शैतानी करते मैंने देखा तो आप तो मैं उस तहखाने में उतर गई और मानकी को अपनी जगह पर लेटा दिया और बड़ेही मौकेसे यह काम हुआ क्योंकि इसके थोड़ी ही देर बाद दिग्विजय वहां पहुंचा और मेरी खाट पर किसी और को लेटानेकेबाद मुझे समझ बूढ़ी मानकी को उठा ले गया जिसे उसने दारोगा के सुपुर्द कर दिया क्योंकि रोहतासगढ़ महल किले या तहखाने के अन्दर कहीं मुझको बन्द कर रखने की उसकी हिम्मत न पड़ी, जान से मार डालने की तो खैर वह सोच ही नहीं सकता था।

शेर०। ओह, तब तो मैं समझता हूं कि उस अजायबघर वाले तहखाने में से जिसको हम लोगों ने छुड़ाया वह आपकी सूरत बनी हुई वह मानकी ही रही होगी, क्योंकि उसकी बातें कुछ अजीब ढंग की होती थीं।

बूआ० । हां वह मानकी ही थी, खैर पूरी बात तो सुनो । मानकी को इस तरह गिरफ्तार होते और एक नई औरत को अपनी जगह बैठाए जाते देख मैं अपने बचाव का कुछ और उपाय करने तिलिस्मी तहखाने में घुसी और वहां मैंने गोपाल को देखा जो बहुत देर से अकेला बैठा घबरा गया था ।

शेर० : हां मैं उनको वहां छोड़ आपको खबर देने गया था और वहांका मामला एक दम बिगड़ा हुआ पा तरद्दुद में पड़ गया था ।

बूआ०। मुझे भी यही खयाल हुआ मगर साथही यह शक भी हुआकि शायद दिग्विजय ने कुछ औरभी जाल न रचा हो, नकली देवीरानी के धोखे में डाल कर तुमको भी न गिरफ्तार कर लिया हो, या मेरी ही तरह तुम्हारी जगह भी एक दूसरा शेरसिंह न बैठा दिया हो, अस्तु मैंने देर करना मुनासिब न समझा—गोपाल को अपने साथ लिया, ढूंढ़ कर वह तिलिस्मी किताब भी निकाल ली जो तुम उसी जगह छिपा गये थे, और तिलिस्म के अन्दर घुस गई । तुमको मालूम है या नहीं मैं नहीं जानती पर तहखाने में चांदी के चबूतरे पर काले पत्थर वाली जो बड़ी मूरत है वह तिलिस्म मे घुसने का रास्ता है और उसीके पेट में से होकर मैं गोपाल को सीधा इस तिलिस्म में ले आई ।

शेर०। (चौंक कर) जब मैं राजा साहब को ढूंढ़ता हुआ उस तहखाने में पहुंचा तो उस मूरत के मुँह से अजीब तरह की बातें निकलती हुई मैंने सुनीं...*

बूआ० । (हस कर) वह इस गोपाल की शैतानी थी जो तुमको छकाना चाहता था ! इसी ने मूरत की गर्दन में सिर डाल कर वे बातें कही थीं ।

शेर०। अच्छा, तो वह इन साहब की करतूत थी ! मगर सच तो यह है कि उन बातों ने मुझको बहुत बड़े धोखे में डाल दिया और मैं आज तक इसी शक में था कि उस मूरत में जरूर कोई करामात है ।

बूआ० । करामात तो उस मूरत में जरूर है, मगर उस तरह की नहीं जैसी तुम सोचते होगे । रोहतासमठ का तहखाना भी एक तिलिस्म है और उसका भेद उसी मूरत के पेट में है । खैर तुम पहिले मुझे अपना किस्सा समाप्त कर लेने दो। गोपाल को लिये मैं सीधी तिलिस्ममें पहुँची और तुरन्त ही तिलिस्म तोड़ने के काम में इसे लगा दिया । तिलिस्मी किताब तुम्हारी बदौलत इसे मिल ही चुकी थी अस्तु उसकी मदद से तथा कुछ मेरी सहायता से इसने बड़े सहज ही में इस तिलिस्म का पहिला भाग तोड़ डाला ।

शेर० । तो यह झिल्ली लगाने की क्या जरूरत पड़ी ? क्या मेरे...?

* देखिए रोहतासमठ चौथा भाग, पांचवां बयान ।

बूआ०। नहीं, जिसमें दारोगा कभी इसको देख ले तो पहिचानकर दुष्टता न करे इस विचार से मैंने ऐसा किया था :

शेर० । ठीक है ।

बूआ० । जब पहिला भाग टूट गया तो दूसरा भाग तोड़नेके लिए दूसरी किताब की जरूरत पड़ी क्योंकि इस तिलिस्म को तोड़ने के लिए दरअस्ल दो किताबों की जरूरत बारीबारीसे पड़ा करती है। यह दूसरी किताब भाग्यवश खुद इसी के पास थी मगर जमानिया राजमहल में ही कहीं छिपा कर रक्खी हुई थी । वहां जाना और उसको निकाल कर ले आना बहुत खतरे का काम था क्योंकि वहां मुन्दरकी हुकूमत थी और दारोगा की शैतानीका जालभी सब तरफ बिछा हुआ था अस्तु मैंने इसको यह तिलिस्मी कवच और नकाब निकाल कर दी जिसकी बदौलत न तो कोई हथियार इसको चोट पहुंचा सकता था और न कोई बेहोशी इस पर असर कर सकती थी ।

शेर० । मगर यह उस समय के बाद की बात होगी जब मैंने आपके बदले में बूढ़ी मानकी को अजायबघर से छुड़ाया और मैना के साथ तिलिस्म में ही छोड़ इन पर कब्जा करने निकला था ।

बूआ० । हां उस समय ये चीजें इसके पास न थीं, यदि तब यह कवच और नकाब इसके बदन पर होती तो तुम इसका कुछ भी बिगाड़ न सकते थे, यह तो उस घटना के बहुत दिन बाद मैंने तब इसे दिया जब कि यह तिलिस्म का पहला दर्जा तोड़चुका था, तुम तिलिस्म से बाहर निकलकर एक दूसरे ही चक्करमें पड़े हुए थे, और उस दूसरी किताब के बिना आगे का काम हो नहीं सकता था ।

शेर० । ठीक है, तो ये उस कवच और नकाब की मदद से जमानिया के महल में घुस गये और अपनी वह तिलिस्मी किताब निकाल ले आये ?

बूआ०। हां, भाग्यवश इस पर किसी की निगाह न पड़ी और तिलिस्मी चीजों के मदद की भी दरकार न हुई ।

शेर० । तो शायद यही वह तिलिस्मी किताब होगी जिसके लिए मुन्दर इन्हें पिंजरे में बन्द किये हुई थी ?

गोपाल० । जी हां यही बात है । उसे किताब के मेरे पास होने का पता लग चुका था ।

मैना०। तो क्या यह वही किताब है जो उस नाचने वाली पुतली के हाथ में थी जिसके लिए मुन्दर कई बार मुझे तिलिस्म में ले गई थी ?

गोपाल०। (हंस कर) नहीं, वह तो केवल एक तिलिस्मी तमाशा था। असल किताब को तो मैंने अपने निजी कमरे में ही एक बहुत ही गुप्त स्थान में छिपा कर रक्खा हुआ था जहां मुन्दर के फरिश्ते भी उसे पा न सकते थे। (शेरसिंह से) जिस समय मैं उसे लेने महलमें गया मैंने मुन्दर और दारोगाको देखा जो एकान्त में बैठे कुछ सलाह कर रहे थे और उनको देखते ही मुझको इतना क्रोध आ गया कि मन में हुआ दोनों को उसी समय तलवार के घाट उतार दूं, पर क्या करूं मन मसोस कर रह गया, बूआजी की आज्ञा न थी।

बूआ०। नहीं बेटा, अभी उसका मौका नहीं आया, अभी दारोगा को मार डालने से हम लोगों के काम में बहुत बड़ा हर्ज पड़ जायगा।

शेर०। वह क्या ?

बूआ०। क्या बता ही दूं? अच्छा सुनो, मगर सब कोई इसको बड़ा ही गुप्त रखना क्योंकि अभी इस भेद के प्रकट होने का वक्त नहीं आया है। दारोगा के पास एक बड़ा ही कीमती तावीज है। नहीं, वह असल में तिलिस्म की एक ताली है और उसकी तारीफ यह है कि जिसके पास वह हो वह आदमी जब जहां और जिस तिलिस्मके अन्दर चाहे जा सकता है,कोई ताली या कोई रास्ता उसके सामने बन्द नहीं रह सकता और वह किसी तिलिस्मी जाल में फंस नहीं सकता। तिलिस्म तोड़ने के काम में आगे चल कर गोपाल को उस तावीज की जरूरत पड़ेगी और जब तक वह अपने कब्जे में न आ जाय दारोगा को किसी तरह की तकलीफ नहीं पहुंचाई जा सकती।

शेर०। तो सब से पहिले वह तावीज ही उससे लेना चाहिये ?

बूआ०। जरूर, और यही वह काम है जिसमें अब मैं तुमको लगाना चाहती हूं क्योंकि गोपाल को अपना कर्तव्य पूरा करने में उस चीज की बहुत शीघ्र जरूरत पड़ जायगी। उसके बिना इस तिलिस्म का चौथा दर्जा टूट न सकेगा।

शेर०। जो कुछ आप हुक्म दीजिये मैं बजा लाने को पूरी तरह से तैयार हूं और वह तावीज अगर इतना ही जरूरी है तो उसे जैसे भी बन पड़े दारोगा से लेना ही पड़ेगा। मगर मेरी एक बात का जवाब आप और दीजिये। वह दूसरी तिलिस्मी किताब कौन सी थी जो इनके पास पहिले ही से मौजूद थी ?

बूआ०। यह वही असली तिलिस्मी किताबथी जिसे मेरे गुरु महाराज इसे देकर इसके हाथसे तिलिस्म तोड़नेकाकाम शुरू कराना चाहतेथे, वही किताब जो जड़ाऊडिब्बेकेअन्दर बन्द रहा करतीथी और जिसे उन्होंने इसको तथा कामेश्वर

को दिखाया था मगर इनके हाथमें पड़कर जो विचित्र ढंगसे गायब हो गई थी*।

शेर०। मगर उसे तो हमारे राजा दिग्विजयसिंह उड़ा लाये थे और उनसे दारोगा मार ले गया था !

बूआ०। हां, मगर गोपाल की ही जुबानी मुझे मालूम हुआकि इसका मरना मशहूर होने के पहिले इन्द्रदेव ने श्यामजी की मदद से उसको दारोगा के कब्जे से बाहर कर लिया और लाकर इसे दे दिया था*। सुभीते में बैठकर पढ़नेके इरादे से इसने उस समय किताब को किसी गुप्त जगह में छिपाकर रख दिया था, और यह भी बहुत ही अच्छा हो गया क्योंकि उसके दूसरे ही दिन यह दुश्मनों के कब्जे में पड़गया। इस किताब के चले जाने से दारोगा बौखला गया और उसकी तथा मुन्दर की कार्रवाई ने इसको लाचार कर दिया। यह कैद में डाल दिया गया मगर कुशल इतनी ही हुईकि वह किताब उस समय और उसके बादभी फिर कभी उन कम्बख्तोंके हाथ न लगी और सचतो यह है कि इसी कारण इसकी जान बची रह गई क्योंकि मुन्दर और दारोगा दोनोंही उस किताबपर अपना अपना कब्जा जमाया चाहते थे और कोई नहीं चाहता था कि वह किताब हाथमें आए बिना यह अपनी जान गवां बैठे,अस्तु अपने स्वार्थवश उन्होंने इसको यद्यपि तकलीफें हद से ज्यादा दीं मगर जान से मार डालने की इच्छा कभी न की। मेरे कहने से और मेरे दिये सामानों की बदौलत यह बेखटके अपने महल में घुस गया और वहां से उस किताब को निकाल लाया।

शेर०।(गोपालसिंह से) और वह किताब आपके पास इस समय मौजूद है?

गोपाल०। जी हां, इस समय वे दोनों ही किताबें मेरे पास मौजूद हैं, मगर थोड़ीदेरपहिलेतक ऐसा न था क्योंकि उनमेंसे पहिली,जिसकी बादमें पुनः दरकार पड़ने को थी और जो उस पोटली में बंधी हुई थी मेरे पास से गायब हो चुकी थी और अभीही (मैना की तरफ बता कर) इसकी बदौलत मुझको वापस मिली है।

शेर०। (देवीरानी से) यह क्या किस्सा है? मुझको कुछ मालूम नहीं !

देवी०। गोपाल आज सुबह नहा धोकर पूजा कर रहा था जब कोई इसकी वह गठरी उड़ा ले गया जिसमें वह तिलिस्मी किताब तथा दूसरी कई जरूरी चीजें बंधी हुई थीं ! मैंने उसका पीछा किया मगर वह जाने किधर निकल गया कि उसे पकड़ न सकी। थोड़ी देर की बात है कि मैंने उसे एक कोठरी के रास्ते

---

* देखिये रोहतासमठ पहिला भाग, पहिला बयान।

* देखिये भूतनाथ इक्कीसवां भाग, आठवां बयान।

तिलिस्म के बाहर जाने की कोशिश करते देखा और उसे पकड़ना चाहती थी मगर वह भागकर निकल गया और मेरे हाथ न पड़ा। अभी अभी इस मैना ने वह गठरी लाकर इसको दी और मैं अभी यह भी पूछ न सकी कि वह इसके हाथ कैसे लगी। (मैना से) तू बता कि यह पोटली तेरे हाथ कैसे लगी ?

शेर०। मैं यह भी जानना चाहता हूं कि यह मैना अब तक कहां थी या क्या कर रही थी ?

बूआ०। यह बहुत लम्बा चौड़ा किस्सा है मगर खैर मैं तुम्हें संक्षेप में वह भी सुनाये देती हूं विस्तार से फिर कभी सुनना। इस मैना को पहिले पहिल तो तुम्हीं दारोगा की कैद से छुड़ा कर लाए थे।

शेर०। जी हां, और यह मेरे साथ ही थी जब आपके बदले बूढ़ी मानकी को मैंने अजायबघर से छुड़ाया। जिस समय तिलिस्म में मैंने (गोपालसिंह की तरफ देखकर) कोई गैर समझ इन्हें पकड़ा और मानकी तथा मैना के पास लाया उसके बाद से फिर मैंने इसे न देखा और न फिर मानकी कहीं मुझे दिखी। मैं समझता हूं कि उस समय राजा साहब को मेरे कब्जे से उस विचित्र ढंग से छुड़ा लेना आप ही का काम रहा होगा* ?

बूआ०। हां, उस सफेद खोल की आड़में मैं ही काम कर रही थी और दा एक बारतो मेरी इच्छा हुई भीं कि तुम पर अपने को प्रकट कर दू मगर इस कारण से रह गईकि अकसर दारोगा भी बार बार तिलिस्म में घुस आया करता था और गोपाल की मदद में लगे रहने के कारण मुझको हमेशा इतनी फुरसत न रहा करती थी कि इस बात का निश्चय कर सकूं कि वह तुम हो या तुम्हारी सूरत बना हुआ दारोगा इसके सिवाय यह शक तो बनाही रहताथाकि दिग्विजय कोई चालाकी न खेल जाय, अस्तु मैंने तुमसे भी अपनेको और गोपाल को बचाये ही रखना मुनासिब समझा जब तक कि कोई ठीक मौका न आ जाय। आज भी मैं अपने को तुम पर प्रकट न करती पर बहुत देर से तुम्हारे साथ लगे रहने के कारण एकतो मुझको विश्वास हो गया कि तुम और कोई नहीं शेरसिंहही हो, दूसरे तिलिस्मके दोदर्जे टूट जानेके बाद अब ज्यादा डरने की भी जरूरत न रही।

शेर०। (आश्चर्य से) तो क्या आप बहुत देर से मेरे साथ हैं ? मगर मुझे तो इसकी कुछ खबर नहीं।

बूआ०। मैं तब से तुम्हारे पीछे पीछे हूं जब तुम नहर वाले रास्ते से इस

---

* रोहतासमठ चौथे भाग का अन्त देखिये।

तिलिस्म में घुसे। पहिले मुझे यही शक हुआ कि तुम दारोगा हो और तुम्हीं ने गोपाल की तिलिस्मी किताब चुराई है और इस लिए मैं तुम पर वार करने का मौका खोज रही थी, पर जब दारोगा को उस कोठरी की राह भागते देखा तो मेरा शक दूर हो गया।

शेर०। ठीक है, तो मैना.........?

बूआ०। शुरू शुरू में कुछ दिनों तक तो मैंने मानकी और मैना को अपने साथ रखखा पर ज्यों ज्यों तिलिस्मी कारवाई बढ़ती गई इन लोगों को साथ रखना मुश्किल होता गया, क्योंकि तुम जानतेही हो कि जब तिलिस्म टूटता रहे तो किसी गैर आदमी का उसके अन्दर रहना अनुचित है। इसलिये सबसे पहिले मैंने उस मानकी को यहाँ से बिदा किया। मैं चाहती थी कि मेरा कोई विश्वासी आदमी रोहतासगढ़ महल में रहे जो वहाँ के हाल चाल की सची सच्ची खबर मुझको देता रहे अस्तु मैना की मदद से उस ऐयारा को ही मैंने उड़वा दिया जो दिग्विजय की करतूत से रोहतासगढ़ महल में मेरी सूरत बन डटी हुई थी और उसकी जगह इसी मानकी को अपनी सूरत में वहाँ बैठा दिया।

शेर०। अच्छा ! हमारे राजा साहब......?

बूआ०। (हंस कर) उसने कुछ फूं फां जरूर की मगर मैंने उसकी ऐसी गोशमाली कर दी कि वह अब कभी मेरे महल में आने का नाम भी न लेगा और उसी के साथ साथ (गोपालसिंह की तरफ देखकर) इसके दारोगा कम्बख्त को भी जरा चटपटा तिलिस्मी हाथ दिखा दिया जिससे मुझको विश्वास है कि वह भी अब कभी उधर झांकने का नाम न लेगा।

मैना०। (हँस कर) मुझे तो जब जब दारोगा की उस वक्त की मुखभंगी का ख्याल आताहै हंसी रोके नहीं रुकतीहै, कम्बख्तका सब दारोगापना निकलगया।

शेर०। (कौतूहल से) यह क्या घटना है, मैं सुनना चाहता हूं ?

बूआ०। देर तो हो जायगी मगर खैर मैना, तू शेर को वह किस्सा सुना दे।

मैना ने यह सुनते ही बड़े विस्तार के साथ वह सब हाल कह सुनाया जो हम ऊपर लिख आये हैं और जिसे सुन कर शेरसिंह देर तक हसते रहे। इसके बाद बूआजी ने कहा—

बूआ०। जब यह काम हो गया तो मैंने मैना से कहा कि अब तू जमानिया राजमहल में जा और वहीं रह कर उस तरफ के हाल की खबर मुझको देती रहा कर। यह जब वहां गई तो इसने देखा कि वही बिन्दो, जिसका भेष इसने धारण किया था, अभी तक वहाँ जमी हुई है। इसको ताज्जुब हुआ और इसने उसको

तो कैद कर लिया और आप उसकी सूरत बन वहांपर डट गई और इस तरह पर कम्बख्त मनोरमा और दारोगाकीचालबाजियोंपरभी निगाह रखनेलायकबनगई।

शेर०। वाह,तारीफ करता हूं मैं आपके दिमाग की बूआजी! ऐसी चालाकी तो मुझे भी जो ऐयार बनने का दम भरता हूं, न सूझती। लेकिन अगर यही बात है तो मैनाको पुनः अपने ठिकाने पहुँच जाना चाहिये क्योंकि दारोगा जो यहां जक खा कर गयाहै मुमकिनहै कि महलमें पहुंचे और अपनी बिन्दो से कुछ पूछताछ करे।

बूआ०। हां, जरूर इसको वहां वापस जाना चाहिये यद्यपि दारोगा से खूब बचे रहना होगा।

गोपाल०। मगर यह पता अभी नहीं लगा कि मैना के हाथ मेरी वह तिलिस्मी किताब क्योंकर लगी ?

मैना०। धनपत को मुन्दर ने रिक्तगन्थ का पता लगाने के लिए भेजा था। आपको शायद न मालूम होगा कि उसको विश्वास हो गया है कि जमानिया का तिलिस्म टूटने वालाहैऔर राजा बीरेन्द्रसिंहके लड़के इन्द्रजीतसिंह और आनंद-सिंह ही रिक्तगन्थ की मदद से उसको तोड़ेंगे अस्तु वह इस फिराक में पड़ी हुई है कि किसी तरह वे दोनों लड़के उसकी कैद में आ जांय और रिक्तगन्थ पर भी उसका काबू होजावे ताकि तिलिस्म नटूटे और किसी तरहका डरभी न रह जाय।

शेर०। (चौंक कर) हैं, क्या ऐसी बात है ?

बूआ०। हां, यह बात सही है, यद्यपि मैं नहीं जानती कि मुन्दर को किस तरह से यह बात मालूम हो गई मगर इसमें कोई शक नहीं कि बहुत जल्द ही विक्रमी तिलिस्म के कुछ हिस्से इन्द्रजीत और आनन्द के हाथ से टूटेंगे और इस काम में रिक्तगन्थ की जरूरत पड़ेगी।

शेर०। आपकी इस बात ने मुझे बहुत बड़े अफसोस में डाल दिया। आपको शायद मालूम होगा कि रिक्तगन्थ एक काफी अरसे तक मेरे ही पास रहा।

बूआ०। हाँ मुझे मालूम है कि दलीपशाह के शागिर्द गिरिजाकुमारने उसे नागर के हाथ से छीन कर अपने गुरु को दिया था और इन्द्रदेव की सलाह से दलीपशाह ने उसे तुमको दे दिया *। खुद तुम्हीं ने मुझको यह हाल सुनाया था और मैंने उसी वक्त तुमसे कहा था कि इस किताब को बड़ी हिफाजत से रखना इसकी बहुत जल्द जरूरत पड़ेगी, मगर अफसोस तुमने मेरी बात की कद्र न की और वह ग्रन्थ तुम्हारे हाथ से निकल गया।

शेर०। (सिर झुका कर) मुझे इस बात का बहुत बड़ा अफसोस है और मैं

* देखिये भूतनाथ इक्कीसवां भाग, अन्तिम बयान।

अभी तक उसको वापस पाने की कोशिश कर रहा हूं, मगर उसका कहीं पता ही नहीं लग रहा है।

मैना०। अगर यह बात है तो मैं आपकी कुछ सहायता कर सकती हूं। धनपत यही खबर लेकर मुन्दर के पास लौटी थी और उसको चकमा देकर मैंने उससे सब किस्सा पूछ लिया, बल्कि वह हाल बूआजी को बता देना जरूरी समझ उसी समय इनसे मिलने के लिए चल पड़ी थी।

शेर०। अच्छा, तब तुम फौरन मुझे बताओ कि वह किताब अब कहां है ? मैं जैसे भी बनेगा उसको लाऊंगा और बूआजी के हाथ में दूंगा।

मैना०। इसमें मुझे कुछ सन्देह है। (बूआजी की तरफ देख कर) धनपत काशी जाकर भूतनाथ के लड़के नानक के घर में घुसी और वहां नानक के कागज पत्र की छानबीन करने पर उसको पता लगाकि मनोरमा के ऐयार साधोराम ने किसी तरह रिक्तगन्थ पर कब्जा किया और उसे मनोरमाको देना चाहा मगर खुद बीमार पड़ गया। इस पर जहाँ रिक्तगन्थ रक्खा था उस जगह की ताली उसने अपने एक दोस्त के हाथ मनोरमा के पास भेजी पर न जाने कैसे नानक ने वह ताली अपने कब्जे में कर ली और तब से अभी तक वह उसी के पास है।

बूआ०। ऐसी बात! तो क्या तुझे यह भी मालूम हुआ कि वह कौन सी जगह है जहाँ रिक्तगन्थ रक्खा गया है ?

मैना०। रोहतासगढ़ के तहखाने में चौबीस नम्बर की कोठरी में वह किताब बन्द कर दी गई थी।

बूआ०। ओह, तब वहाँ से उसको निकाल लेना कोई मुश्किल नहीं है, मैं सहज ही में उस पर कब्जा कर सकती हूं बल्कि (शेरसिंह से) मेरी बताई तर्कीब से तुम भी जाकर उसे निकाल ला सकते हो।

मैना०। बिना उस ताली की मदद के ?

बूआ०। हां बिना ताली के ही ! तू अपनी बात समाप्त कर ले और यह भी बता दे कि गोपाल वाली तिलिस्मी किताब कैसे तेरे हाथ लगी तो मैं वह तर्कीब बता शेर को अभी बिदा कर देती हूं बल्कि हो सका तो खुद इसके साथ चल कर वह काम कर डालती हूं। अगर वह ग्रन्थ अभी तक उस जगह पर ही है तो उसे जल्दी से जल्दी निकाल कर कब्जे में कर लेना ही मुनासिब होगा।

मैना ने यह सुन अपना पूरा हाल, धनप० का जमानिया महल में बिन्दो बनी सुभद्रा समझ कर उससे मिलना, उससे उसका सब हाल जान लेना, उसको नींद में गाफिल कर उससे सुनी बातों को बूआजी से कहने के लिए वहाँ से रवाना

होना, और रास्ते में दारोगा को गोपालसिंह की गठरी लिये भागते आते देख उस गठरी पर कब्जा जमाना, यह सब कुछ उसने पूरा पूरा कह सुनाया जिसे सब लोग बहुत गौर से सुनते रहे, इसके बाद शेरसिंह बोले—

शेर० । मैना की बातें सुन दो बातें तो तय हुई जाती हैं, एक तो यह कि अब यह बिन्दो बन कर वहाँ लौट नहीं सकती क्योंकि दारोगा को इसने बुरा धोखा दिया है और वह इससे बदला लिये बिना नहीं रहेगा, और दूसरी यह कि धनपत भी अपनी बातों को दारोगा से जरूर कहेगी और उन्हें सुनते ही वह भी उस ताली पर कब्जा करने की कोशिश शुरू कर देगा जिसको पानेके लिए मुन्दर इस कदर उतावली हो रही है, अस्तु हम लोगों को अपने काम मे पल भर की भी देरी न करनी चाहिये । बूआजी मुझे ढंग बता दें तो मैं अभी तैयार हूं और या वे खुद चली चलें तब तो कोई बात ही नहीं !

बूआ० । मैं खुद चलूंगी, केवल इसी काम के लिए नहीं बल्कि एक दूसरे मतलब से भी । यद्यपि मैंने दिग्विजय को बहुत डरा दिया है फिर भी मुझे सन्देह होता है कि कहीं वह मेरी शक्ल बनी हुई मानकी पर कोई वार न करे जिससे इधर बहुत समय से मैं मिल नहीं पाई हूं । यह भी मुमकिन है कि उसको भी रिक्तगन्थ की खबर लग जाय और वह यह समझ कर कि मुझसे इस काम में मदद मिल सकती है, मानकी को परेशान करे । अस्तु मैं पहिले ही से वहाँ पहुंच कर उसे सब तरह से पक्का कर देना चाहती हूं, ताकि दिग्विजय की कोई कलई मानकी पर न चले और वह सब तरफ से होशियार रहे ।

शेर० । अगर ऐसा हो सके तो अच्छा ही है, लेकिन मुझको......

यकायक शेरसिंह चौंक पड़े। किसी तरह के बहुतड़े व दन्नाटे की आवाज उनके कान में पड़ी जिसने इन सभों को ही चमका दिया । बूआजी ने अपने पीछे की तरफ देखा और जल्दी से बोल उठीं, "गोपाल, हम लोगों ने बातचीत में बहुत ज्यादा देर कर दी और तिलिस्मी कार्रवाई शुरू हो गई! वह देखो वायु-मंडप का गुम्बज जलना शुरू होगया। अब तुम्हारा एकपलभी यहाँ रहना मुनासिब नहीं है!"

सभों ने घूम कर उस तरफ देखा जिधर बूआजी बता रही थीं । शेरसिंह और मैना ने देखा कि दूर की एक ऊंची इमारत की चोटी में से आग के शोले निकल निकलकर आसमान की तरफ उठ रहे हैं। यह वायु-मंडप का वही गुम्बज था जिसकी चोटी में से थोड़ी देर पहिले मैना ने काला काला धूआं निकलते देखा था । बूआजी ने गोपालसिंह से कहा, "भाग्यवश दोनों ही तिलिस्मी किताबें इस समय तुम्हारे पास हैं । भगवान का नाम लेकर उठ खड़े हो और तिलिस्म का तीसरा दर्जा तोड़ने का काम शुरू कर दो । मैं शेर और मैना को लेकर रोहतास-

गढ़ जाती हूं मगर बहुत जल्दी लौट जाऊंगी और तुमसे मिलूंगी। तुम किसी तरह पर डरना या घबराना नहीं और मुझको हरदम अपने पास ही मौजूद समझना।"

गोपालसिंह ने 'बहुत खूब' कह कर बूआजी को प्रणाम किया और उनके दोनों पैर छूकर वायु-मंडप की तरफ चल पड़े जिसके गोल गुम्बज से आग के बड़े बड़े शोले थोड़ी थोड़ी देर पर निकल कर आसमान की तरफ उठ रहे थे।

सातवां बयान

जब गोपालसिंह आगे बढ़कर आँखों की ओट हो गए तो बूआजी भी उठ खड़ी हुईं और बोलीं, "हम लोगों को भी यहाँ से चले चलना चाहिए, देर करने से फिर बाहर निकलना मुश्किल हो जायगा।" शेरसिंह और मैना जो उनके साथ ही खड़े हो गये थे उनके पीछे हुए और वे तेजी के साथ एक तरफ को रवाना हुईं । थोड़ी दूर तक वे उस नहर के किनारे किनारे चलती रहीं और इसके बाद दाहिनी तरफ को घूम उस ओरको बढ़ीं जिधर बाग की दीवार के पीछे की तरफ से झाँकती हुई एक इमारत नजर आ रही थी ।

दीवार के पास पहुंचकर देवीरानी जरा देरको रुकीं और शेरसिंह की तरफ घूम कर बोलीं, "शेर, अब मैं जहाँ जा रही हूं वहाँ से कई तरफ को रास्ते गए हैं और दूर से दूर जाने की भी सहज तर्कीब है। मैं यही सोच रही हूं कि किधर जाऊं और किस रास्ते से जाऊं, क्योंकि आखिरी मर्तबे मैंने सुना था कि रोहतासगढ़ में कुछ लड़ाई झगड़े का सामान हो रहा है और तहखाने में भी अजीब अजीब बातें देखने सुनने में आ रही हैं, अस्तु तुम संक्षेप में मुझको उधर का कुछ हाल बता दो जिससे मैं अपने काम का ढग निश्चय कर सकूं !"

शेरसिंहको इसबातके जवाबमें हिचकिचाकर सिर नीचा कर लेते और कुछ बोलते न देख देवीरानी को आश्चर्य हुआ और वे पुनः बोलीं, 'जो कुछभी मामला हो साफ साफ बता दो, जराभी छिपाओ नहीं शेरसिंह!" लाचार शेरसिंहबोले—

शेर०। बूआजी, मुझे बहुत अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि आपको मिली हुई खबरें पुरानी हैं और इधर की घटनाएं बहुत तेजी से हुई हैं । राजा बीरेन्द्रसिंह के साथ लड़ाई कर के हमारे राजा साहब को हार जाना पड़ा और इस वक्त रोहतासगढ़ किले और शहर में राजा बीरेन्द्रसिंह की हुकूमत है ।

देवी०। (चौंक कर) हैं, हार गया! आखिरी खबर जो मैंने सुनी थी वह यह थी कि तहखाने में बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों की आमदरफ्त शुरू हो गई और उनकी फौज ने किले को सब तरफ से घेरा हुआ है मगर यह मुझे मालूम न हुआ था कि लड़ाई समाप्त हो गई और दिग्विजय हार गया । खैर तब क्या हुआ ?

वह अब है कहाँ ? क्या बीरेन्द्रसिंह ने उसको कैद कर लिया ?

शेर० । जी नहीं, हमारे राजा साहब ने उनकी ताबेदारी कबूल कर ली, रियासत भर में कुंअर आनन्दसिंह के नाम का डंका बजवा दिया गया, और अब रोहतासगढ़ में राजा बीरेन्द्रसिंह की अमलदारी है। राजा बीरेन्द्रसिंहने उनको कोई तकलीफ या सजा नहीं दी बल्कि अपनी तरफसे उनको ही पुनः गद्दी पर बैठा दिया और सिर्फ कुछ खिराज मुकर्रर करके छोड़ दिया।

देवी० । बड़ा लायक राजा है, दुश्मनों को दया दिखा के काबू में करता है, मगर मैं कहती हूं कि गलती करता है। इसी शिवदत्तको देखो, कैकैबार बीरेन्द्रसिंह से हार कर भागा मगर वे बराबर छोड़ते चले गये और अन्त तक ऐसा ही किया मगर मैंने सुना कि वह अब भी दुश्मनी का बर्ताव कर रहा है। इसी तरह देखना यह कम्बख्त दिग्विजय भी करेगा और उनके साथ दगाबाजी कर के आप दीन-दुनिया से बर्बाद हो जायगा। अच्छा तो फिर तुम अब क्या कहते हो और किस...

देवीरानी शेरसिंह से बातें करती जाती थीं और सामने की दीवार के पास खड़ी होकर कुछ करती भी जाती थीं। यकायक एक हलकीसी आवाज हुई और दीवार के बीचोबीच एक छोटा दर्वाजा नजर आने लगा। आगे आगे देवीरानी और उनके पीछे पीछे मैना उसके अन्दर घुस गये मगर जैसेही शेरसिंह जानेलगे एक ऐसे जोर के दन्नाटे की आवाज उनके कानों में पड़ी कि वे दहल कर रुक गए। आवाज ऐसी भयानक थीकि मालूम होता था सामने की समूची दीवार और इमारत काँप गईहो और पीछे बाग की जमीन तक हिलती और काँपती मालूम हो रही थी। शेरसिंह डर गए और बोले, "हैं यह क्या ?" मगर बूआजी कुछ हँस कर बोलीं, "कुछ डरो नही और जल्दी से दर्वाजे के अन्दर आ जाओ। गोपाल ने तिलिस्मी कार्रवाई शुरू कर दी और अब इस बाग का काया-पलट होना चाहता है, यहाँ रहने में बहुत खतरा है।"

बूआजीकी आज्ञानुसार शेरसिंह जल्दी से उस दर्वाजे के अन्दर घुस आये और उन्होंने दीवार से हाथ लगा कुछ किया जिसके साथ ही वह रास्ता बन्द हो गया। शेरसिंहने देखाकि उनके सामने एक बहुत ही लम्बी पतली सुरंग है जिसमें थोड़ी थोड़ी दूर पर अनगिनत दर्वाजे दिखाई पड़ रहे हैं। देवीरानी इसी सुरंग के अन्दर चल पड़ीं मगर साथ ही उन्होंने फिर पूछा, "हाँ शेरसिंह, यह तो कहो कि तुम्हारी आजकल क्या कैफियत है ! कहाँ रहते हो, क्या करते हो ?"

शेर०। राजा साहबकी नाराजगीसे डरकर मुझको रियासतसे निकल जाना ही सबसे बेहतर मालूम हुआथा और इसीलिए मैंने किला और शहरछोड़करसर-

हद वाले उस खण्डहरमें अपना डेरा जमायाथा जिसमें आपके साथ मैं एक बार...

बूआ० । हाँ तुमने यह बात मुझसे कही थी, पर बाद में मुझे यह भी खबर लगीकि तुमने वहाँ रहना भी छोड़ दिया और कहीं और चले गये। मुझे एक बार तुम्हारी कुछ जरूरत पड़ी थी और मैना को वहाँ भेजा था पर वह लौट कर बोली कि वहाँ कोई नहीं है।

शेर०। जीहाँ, उसी जगह वह घटना मेरे साथ हुई जिसकी बदौलत रिक्तगन्थ मेरे हाथ से निकल गया और उसके बाद ही वहाँ पर भूतनाथ का आना हुआ...

बूआ० । भूतनाथ ! तुम्हारा भाई ?

शेर० । जी हाँ, मैंने आपसे कहा था कि वह मरा नहीं बल्कि कहीं छिप कर बैठा है !

बूआ० । मुझे याद है, अच्छा तो ?

शेर० । भूतनाथ को देख कर मुझे शक हुआ कि मेरे कब्जेसे रिक्तगन्थ ले लेने में कहीं उसकी ही कोई चालाकी न हो। पूछने से वह कुछ बताने वाला था ही नहीं अस्तु सब से बेहतर मैंने यही समझा कि उस जगह को भी छोड़ दूं अस्तु मैं कहीं और जा रहा, मगर इसके कुछ समय बाद घटनावश मेरी मुलाकात राजा बीरेन्द्रसिंह के ऐयार देवीसिंह से हुई और उनके साथ काम करने का कुछ मौका मिला। उन्होंने मुझको दीवान तेजसिंह से मिलाया जिन्होंने राजा बीरेन्द्रसिंह के हुजूर में मुझे पेश किया, उस वक्त हमारे राजा दिग्विजयसिंह भी वहाँ मौजूद थे, राजा बीरेन्द्रसिंह ने मुझे उनसे माँग लिया और अब एक तरह से मैं राजा बीरेन्द्रसिंह की खिदमत में हूं*।

बूआ०। खैर यह भी एक तरह से अच्छा ही हुआ है। तो फिर अगर मैं सीधी रोहतासगढ़ के तहखाने में चली चलूं तो क्या कोई हर्ज है ? बीरेन्द्रसिंह के आदमी अगर मुझे देख भी लेंगे तो तुम्हारे सबब से कोई बेअदबी न करेंगे ऐसा मैं समझती हूं।

शेर०।कदापि नहीं, तेजसिंहने मुझे राजा बीरेन्द्रसिंहकी खास निशानीदीहुई है जिसके सबब मैं किले और महलमें जहाँ चाहूं बिना रोकटोकके आजासकताहूं।

बूआ०।ठीकहै, मगर हाँ मैंने तुमसे यहतो पूछा ही नहींकि आज तुम तिलिस्म के अन्दर कैसे आ पहुंचे ! (हंस कर) बहुत दिनों से तो मैंने यहाँ न देखा था।

शेर० । जब आप ही ने मुझे निकाल बाहर किया तो मैं कैसे रह सकता

* यह सब हाल बहुत खुलासा तौर पर चन्द्रकान्ता सन्तति में लिखा जा चुका है, देखिये चन्द्रकान्ता सन्तति चौथा भाग, दूसरा बयान।

था! पर बात यह हुई कि राजा बीरेन्द्रसिंह के बड़े लड़के इन्द्रजीतसिंह को कोई लश्कर से चुरा ले गया। उनकी खोज में देवीसिंह के साथ साथ मुझे भी लगना पड़ा और हमलोगों को पता लगा कि उन्हें वही औरत उठा ले गई है जो तालाब वाले तिलिस्मी मकान में रहती है।

बू आ०। कौन मकान ?

शेर०। वही जो उस खंडहर से डेढ़ दो कोस दक्खिन की तरफ पड़ता है। एक बड़ा सा तालाब है और उसके भीतर एक मकान बना हुआ है जिसकी छत पर बहुत सी पुतलियां खड़ी हैं।

बू आ०। ओ हाँ ठीक है, मैं समझ गई, तो क्या वहां आजकल कोई रहता भी है?

शेर०। एक बड़ी जालिम औरत उसमें रहती है जो बड़ी ही खूनी बल्कि एक दम पिशाची है। वही शायद इन्द्रजीतसिंह पर आशिक हो उन्हें अपने यहां उठा ले गई है। मैंने और देवीसिंह ने उस मकानके अन्दर जाने की बहुत कोशिश की मगर कामयाब न हो सके क्योंकि वह मकान कुछ अजब ढंग का बना हुआ है और उसमें जाने के रास्ते में अनेक तरह की रुकावट है। तब मेरे मन में यह ख्याल हुआ कि इन्द्रदेवसे मिलकर पूछना चाहिये, शायद उनको उस मकान और औरतका कुछ भेद मालूमहो। उनके घर पहुंचातो मालूम हुआवे तिलिस्ममें गए हुए हैं। ताज्जुब हुआ कि जहां मैं नहीं जा पाता वहां वे कैसे गए? कई रोज तक उन की राह देखता बैठारहा मगरवे नहींलौटे, लाचार उनकीखोज करतातिलिस्म में घुसा और इस बार न जाने क्यों मुझे कहीं कोई रुकावट न मिली। इन्द्रदेव से तो भेंट न हुई पर आपके दर्शन हो गए और इधरकी सब बातें मालूम हो गईं।

बू आ०। जिधर से तुम आए हो उधर का तिलिस्म बहुत रोज हुए टूट चुका अस्तु रास्ते भी मामूली तौर पर खुलते और बन्द होते हैं तथा जानकार लोग कुछ सावधानी बरतें तो आ जा भी सकते हैं। तुमकोतो मैंने बहुत पहिलेही देख लिया था मगर इन्द्रदेव को तो कहीं देखा नहीं, जान पड़ता है वह किसी दूसरी तरफ निकलगया, अगर दिखतातो मैं उससे भेंट करती क्योंकि उससे कई जरूरी बातें करनी थीं, खैर देखा जायगा।

कहते कहते देवीरानी रुक गईं। वह लम्बी सुरंग खातमे पर आ गई थी और जहां अब ये लोगथे उसके सामने एक बड़ा सा फाटकथा। बू आजी ने किसी तर्कीब से उस फाटक को खोला और सब लोग सुरंग के बाहर हुए। एक बहुत ही लम्बा चौड़ा दोहरा दालानसा नजर आया जिसके दूसरी तरफ पत्थरोंसे पटा कए भारी आंगन था। इस दालानमें जगह ब जगह बड़े बड़े सिंहासन बने हुए थे,

और जमीन में मोटी पतली तरह तरह की नालियां लगी हुई थीं जिनका कुछ मतलब समझ में न आता था। एक सिंहासन की तरफ देवीरानी बढ़ीं और शेरसिंह तथा मैना को उस पर बैठने के लिए कह उसके पावोंके साथ कुछ करने के बाद आप भी उस पर जा बैठीं। उनके बैठने के साथ ही वह सिंहासन हिला और तब धीरे धीरे एक तरफ को चलने लगा। इस समय संध्या हो गई थी और अंधेरी सब तरफ से झुकी आ रही थी।

एक नाली पर चलता हुआ वह सिंहासन जब दाहिनी तरफ की दीवार के पास पहुंचा तो उस जगह एक रास्ता पैदा हो गया जो सिंहासन के भीतर चले जाने पर बन्द भी हो गया और अब ये लोग एक दम अन्धकार में पड़ गये। बू आजीने पुकारकर कहा, "अपनीअपनी जगहपर आरामसे मगरसम्हले हुएबैठे रहो। हमारेसामने एकलम्बा सफरहै औरहमें देरतक इसीतरह बैठेरहनापड़ेगा।

सचमुच ऐसाही था और घण्टों तक वह सिंहासन चलता ही रहा। बू आजी और शेरसिंह तो आपसमें कभी कभी कुछ बात भी कर लेते थे पर मैना चुपचाप बैठी बैठी बीच बीच में झपकियां लेने लगीं और अन्त में एक दम गाफिल नींद में पड़ कर दीन दुनिया की सुध बुध भूल बैठीं।

मगर यकायक मैना जाग गई और चमक कर सम्हल बैठी। उसके कान में कोई बड़ी ही भयानक आवाज पड़ी थी। उसे वह आवाज ख्याल आ गई जो तिलिस्म से रवाना होते समय सुनी थी और वह बोल बैठी, "क्या हमलोग पुनः तिलिस्म में आ पहुंचे! यह भयानक आवाज कैसी थी?" जवाब मे देवीरानी ने कहा, "वह तिलिस्म जहां से हमलोग चले थे पचीसों कोस पीछे छूट गया। यह तो कोई दूसरीबात मालूम होती है। इससमय हमलोग रोहतास पहाड़ीके नीचे हैं बल्कि उसके अन्दर घुस रहेहैं, मगर यह भयानक आवाज शक पैदा करती है। जरा रुक कर समझ लेना चाहिए।" बू आजी ने कोई तर्कीब की और उस सिंहासन की चाल कम होने लगी। धीरे धीरे वह एकदमही रुक गया और इसी समय एकपहिलेसे भी भयानक दन्नाटासुनाई पड़ा। मालूमहुआ जैसेसमूची धरतीकाप उठीहो और ऊपरका पूरा पहाड़ दहल गयाहो। शेरसिंह बोल उठे, "जरूर कोई भयानक दुर्घटना हुई है, मुझेतो ऐसा जान पड़ताहै कि किलेकी मेगजीन में किसी तरहआगलगगई है। ऐसीभयानक आवाजऔरकिसीतरहपरपैदानहींहोसकती!"

देवीरानी ने गौर करके कहा, "मुझे भी कुछ ऐसा ही मालूम होता है और अगर सचमुच यही बात है तो मुमकिन है कि किले का काफी भाग भी मैगजीन के साथ उड़ गयाहो और तिलिस्मी तहखाने को भी जरर पहुंचा हो।" शेरसिंह

बोले, "ऐसी हालत में क्या आगे बढ़ना मुनासिब है ?" बूआजी ने जवाब दिया, "कम से कम कुछ देर तो यहां रुके ही रहना चाहिये।"

देरतक छोटे मोटे धम्माकोंकी आवाजेंआती रहीं, तब धीरे धीरे कम होकर ये धम्माके तो बन्द हो गये मगर अब कुछ दूसरी तरह की आवाजें आने लगीं जिन्हें सुन शेरसिंह ने कहा, "जरूर लडाई हो रही है और यह तोपों की आवाज है।" बूआजीने जवाब दिया, "बेशक ऐसाही है।" शेरसिंह बोले, "क्या यहांसे कोई तर्कीब बाहर निकल जाने की नहीं हो सकती ? मैं जाकर खबर लेता कि क्या बात है !" बूआजी बोलीं, "वह भी हो सकता है मगर मैं उससे अच्छी यह बात सोचती हूं कि सिंहासन छोड़ दूं और पैदल चल पड़ूं, अगर तिलिस्मी तहखानेको जरर नहीं पहुंचा है तो मैं भीतर ही भीतर अपने महल तक पहुंच सकती हूं जहां मानकी से मिलते ही सब बात पूरी पूरी मालूम हो जायगी, और अगर तहखाना तहस नहस हो गया होगा तो इसी सिंहासन पर वापस लौट चलूंगी। तुम्हारे पास जरूरकोई तिलिस्मी हथियार होगा, निकालो और रोशनी करो।"

हुक्म पाते ही शेरसिंह ने अपना तिलिस्मी खंजर निकालकर उसका कब्जा दबाया और रोशनी पैदा की। इतनी देर तक बराबर अंधेरे ही में चले आनेके कारण सभी की आंखों में एक दफे चकाचौंध हो आई पर धीरे धीरे जब निगाह काबू में हुई तो शेरसिंह और मैना ने देखा कि वे एक ऐसी सुरंग में हैं जिसके ऊपर नीचे अगल बगल चारो तरफ पत्थर ही पत्थर है और साफ जान पड़ता है कि पहाड़ काट कर यह रास्ता बनाया गया है। सुरंग में वह सिंहासन खड़ा था जिस पर सवार होकर ये लोग आये थे, जमीन पर निगाह पड़ी तो उसमें पतली पतली नालियें नजर आईं जिन पर ही शायद वह सिंहासन चलता होगा।

बूआजी आगे बढ़ीं और शेरसिंह साथ साथ रोशनी करते हुए जाने लगे। पीछे पीछे मैना चल पड़ी। कुछ दूर जाने बाद शेरसिंह बोले, "यह सिंहासन उधो जगह रह जायगा क्या ?" बूआजी बोलीं, "अगर दो पहरके अन्दर लौटकर कोई तर्कीब न की जायगी तो वह आपसे आप वहीं लौट जायगा जहां से आया था। (अपनेचारो तरफ देखकर) मगर रंग ढगसे जानपडता है कि उन धम्माकोंने चाहे वे किसी कारणसे भी हुएहों, कमसे कम यहांतो कोई नुकसान नहीं पहुंचायाहै।"

कुछ दूर आगे जाने बाद सुरग ऊपर की तरफ उठने लगी और उसका ढंग बदल गया। अब उसमें जगह जगह घुमाव और मोड़ आने और कहीं कहीं कुछ दर्वाजे आलमारियां और ताक आदि भी दीख पड़ने लगे। शेरसिंह का ख्याल हुआ कि यहां से जरूर कई तरफ जाने के रास्ते होंगे, पर वे कुछ पूछ न सके

क्योंकि बूआजी किसी तरफ देखे बिना बड़ी तेजी के साथ बढ़ी जा रही थीं।

काफी देर तक ये लोग चलते रहे और अब पहिलेकी बनिस्बत काफी ऊंचाई पर भी उठ आये। अन्दाज से शेरसिंह ने समझा कि अब तहखाने के आस पास ही कहीं पहुंच रहे होंगे और वास्तव में बात भी ऐसी ही थी। एक जगह पहुंच कर वह सुरग समाप्त हो गई और ऐसा जान पड़ा कि अब आगे का रास्ता नहीं है मगर देवीरानी ने सामने की दीवार पर हाथ रक्खा और शेरसिंह से कहा, "होशियार होजाओ, अब हमलोग तहखानेमें पहुंच रहेहैं। और वहांकी क्या कैफियत होगी कुछ कहा नहीं जा सकता।" तब मैना की तरफ देखकर बोलीं, "तू भी होशियार हो जा और कोई हथियार अगर पास में हो तो उसे हाथ में ले ले। इस दर्वाजेके दूसरी तरफ, जिसे अब मैं खोलने जा रही हूं, न जाने क्या होगा।"

बूआजी ने एक जगह अपने अंगूठे से दबाया और तब उस स्थान के ठीक नीचे पैरसे ठोकर मारी। दो ही चार ठोकरोंके बाद पत्थरका एक टुकड़ा हटता हुआ सा मालूम हुआ और कुछही देरबाद वहां पर एक रास्ता नजर आने लगा, बूआजी के इशारे से पहिले शेरसिंह उस रास्ते से दूसरी तरफ चले गये, उनके पीछे बूआजी गईं, और तब मैनाने उस तरफ कदम रक्खा। एक बहुत ही छोटी कोठरी में इन लोगों ने अपने को पाया जिसकी दीवार पर हर तरफ कई छेद बने नजर आ रहे थे, मगर सिवाय उस रास्ते के जिधर से ये लोग यहां पहुंचे थे और कोई रास्ता कहीं दिखाई न पड़ता था। बूआजी ने शेरसिंह से कहा, "अपने हाथ की रोशनी बन्द कर दो और इन छेदों की राह अपने चारों तरफ अच्छी तरह देख भाल लो, तब मैं आगे बढ़ूंगी।" शेरसिंह ने ऐसा ही किया, खंजर की रोशनी गुल करने बाद एक छेद में आंख लगाई और साथ ही एक विचित्र तमाशा देखा।

एकबड़ी जगह उनके सामनेथी जिसको देखतेही वे जान गयेकि रोहतासगढ़ तहखानेका वह स्थान है जहां कैदी लोग रक्खे जाते हैं। उनके सामने एक दालान था और उसके दोनों तरफ कितनीही कोठरियां मगर अंधकार वह सब कुछ भी देखने की इजाजत न देता अगर सामनेवाले दालानमें एक बहुत ही तेज रोशनी न हो रही होती। यह रोशनी एक नेजे में से निकल रही थी, जिसे हाथ में लिए एक बड़ीही भयानक सूरत की पिशाची इनके ठीक सामनेही खड़ी थी। शेरसिंह ने एक निगाह पड़तेही उधरसे सिर हटाया और बूआजीसे कहा, "देखिये देखिये बूआजी, यही वह पिशाची है जो उस तालाब वाले मकान में रहती है ! देखिये यहां भी यह कुछ गजब करना चाहती है। कहीं वे धम्माके जो हम लोगों ने सुने

ये कुछ इसी की करतूत तो न थे?"

बूआजी और मैंना भी दो छेदों में आंख लगाए उधर का दृश्य देख रही थीं। मैंना ने देखा कि उसके सामने एक दालान है जिसमें कई आदमी कैदियों की तरह हथकड़ी बेड़ी से मजबूर मौजूद हैं और सामने एक भयंकर पिशाची हाथ में बड़ा सा नेजा लिए खड़ी थी जिसमें से बेहिसाब चमक निकल रही थी। वह इन लोगों के बारे में कुछ पूछना ही चाहती थी कि इतने ही में शेरसिंह पुनः बोल उठे, "बूआजी, जल्दी से उस तरफ जाने की तरकीब मुझको बताइए। वे कैदी राजा बीरेन्द्रसिंह और उनके लड़के तथा ऐयार लोग हैं और जरूर यह पिशाची उनका खून करने ही यहां आई है।" मगर बूआजी ने यह सुन कुछ जवाब न दिया बल्कि शेरसिंह का हाथ पकड़कर दबाया, मानों चुप रहने का इशारा किया। लाचार वे रह गये और पुनः उसी तरफ देखने लगे और इसबार उनकी निगाह भूतनाथ पर पड़ी जो पिशाची के पास आकर उससे कुछ कह रहा था। वे बड़े ही ताज्जुब में पड़ गए और सोचने लगे कि 'हैं, क्या भूतनाथ इस पिशाची को जानता है?'

मगर उसी समय शेरसिंह के विचारों का रुख पुनः बदला क्योंकि उन्होंने देखा कि भूतनाथ ने आगे बढ़कर राजा बीरेन्द्रसिंह, कुंअर आनन्दसिंह, तेजसिंह तथा बाकी के ऐयारों की हथकड़ी बेड़ी खोल दी और वे अब स्वतंत्र हो गये। उस राक्षसी और भूतनाथ में पुन कुछ बातें हुईं, और तब आगे आगे वह राक्षसी, उसके पीछे राजा बीरेन्द्रसिंह और उनके साथी, तथा सबके पीछे भूतनाथ उस दालान के बगल वाली एक कोठरी के अन्दर घुस कर गायब हो गये। थोड़ी देर तक कोठरी के खुले दर्वाजे की राह उस नेजे की अद्भुत रोशनी की कुछ झलक आती रही, इसके बाद कोठरी का दर्वाजा बन्द हो गया और सामने घनघोर अन्धकार के साथ गहरा सन्नाटा छा गया।

पाठक इस जगह शायद ताज्जुब करें कि यह क्या घटना हमने बयान की इसीलिए हम बता देना चाहते हैं कि यह उस समय का हाल है जब कम्बख्त दारोगा की बातों में पड़कर राजा दिग्विजयसिंह ने धोखा दे के राजा बीरेन्द्रसिंह उनके लड़के और ऐयारों को तिलिस्मी तहखाना में कैद कर दिया था और भूतनाथ ने उनसे अपने कसूरों की माफी पाकर कमलिनी की मदद से उनको उस कैद से छुड़ाया था*। घटनाक्रम हमें इस मौके पर इस जगह ले आया और इसी कारण हम इस घटना को पुनः लिखने पर मजबूर हुए।

कुछ देर तक सन्नाटा रहा और तब बूआजी ने कहा, "क्यों शेरसिंह यह

*देखिये चन्द्रकान्ता सन्तति पांचवे भाग के ग्यारहवें बयान का अन्त।

क्या हुआ तुमने कुछ समझा?" शेरसिंह बोले, "ठीक ठीक तो मेरी समझ में नहीं आ रहा है पर अन्दाज यही होता है कि हमारे राजा साहब दगा दे गये, राजा बीरेन्द्रसिंह और उनके लड़के तथा ऐयारों को उन्होंने कैद कर डाला, और भूतनाथ उस भयानक राक्षसी की मदद से उन सभों को छुड़ा ले गया।" बूआजी ने जवाब दिया, "बेशक ऐसा ही है, और इससे यह भी पता लगता है कि वह राक्षसी, चाहे वह जो कोई भी हो, इन लोगों की दोस्त है दुश्मन नहीं।" शेरसिंह बोले, "इस समय तो ऐसी ही बात देखने में आई मगर मेरी कुछ समझ में नहीं आया, मैंने इस राक्षसी के बारे में तरह तरह की बातें सुनी हैं और खुद अपनी आंखों से देखा है कि यह राजा बीरेन्द्रसिंह के बड़े लड़के को फसाकर अपने घर ले गई और वहां बन्द किये हुए है, खैर इतना तो मालूम हो गया कि भूतनाथ इसको जानता है। उससे दरियाफ्त करने से जरूर कुछ न कुछ भेद मालूम होगा।"

इसी समय यकायक मैंना बोल उठी, "मगर देखिये तो, जान पड़ता है कोई और आदमी यहां आ रहा है। कुछ रोशनी मालूम होती है!" बूआजी और शेरसिंह ने पुनः छेदों में आंखें लगाईं और उसी समय एक बूढ़ी औरत को हाथ में मोमबत्ती लिए एक कोठरी के अन्दर से निकलते पाया जिसे देखते ही बूआजी बोल उठीं, "हैं, यह तो मानकी है जिसे मैं अपनी सूरत में यहां छोड़े हुई हूं। यह यहां क्यों आ गई!! पर जो कुछ भी हो इसका आना अच्छा ही हुआ, इससे हम लोगों को सब कुछ ठीक मालूम हो जायगा।"

बूआजी ने न जाने क्या तर्कीब की कि फौरन ही उनके सामने की दीवार में एक छोटा रास्ता पैदा हो गया जिसकी राह बाहर सिर निकाल कर उन्होंने एक अजब ढंग की सीटी बजाई। सीटी की आवाज सुनते ही वह बूढ़ी औरत जो मोमबत्ती लिए वहां आई थी चौंक गई और ताज्जुब से इधर उधर देखने लगी। बूआजी ने पुनः सीटी बजाई और कुछ अन्य इशारा भी किया जिसके साथ ही वह इनकी तरफ बढ़ी और मोमबत्ती की रोशनी में इनकी सूरत देखते ही झपटकर यह कहती हुई इनके पैरों पर गिर पड़ी, "आह मेरी रानी, तुम आगईं! ओह यहां तो गजब हो गया और राजा प्रजा किसी की जान बचती नजर नहीं आ रही है!"

बूआजी उसे उठाती हुई बोलीं, "मैं सब कुछ देख समझ रही हूं, मगर तू वहां न रह, इस तरफ आ जा और मुझे बता कि क्या मामला है। वे धम्माके और आवाजें कैसी थीं जो कुछ देर हुई हम लोगों ने सुनीं? वे तोपों की आवाजें कैसी हैं, राजा बीरेन्द्रसिंह वगैरह यहां क्यों दिखाई पड़े, और तू यहां क्यों नजर आ रही है? सब हाल साफ साफ और पूरा पूरा मुझको बता मगर इस तरफ

आकर।" बूआजी ने बूढ़ी मानकी को भी उस कोठरी के अन्दर कर लिया जिसमें आप थीं और तब उस रास्ते को पुनः बन्द कर दिया जो खोला था।

हाथ वाली मोमबत्तीकी रोशनीमें बूआजी के साथ शेरसिंह और मैनाको देख बूढ़ी मानकी सम्हली और बोली, "रानी मैं क्या बताऊंकि यहां क्याक्या हुआ! तुमको क्या मालूम है और क्या नहीं यह मैं नहीं जानती पर थोड़ेमें किस्सा यह है कि हमारे राजा साहब अपने दोस्त राजा शिवदत्त की लड़की किशोरीको कहीं से उठा लाए और कुंअर कल्याणसिंह से उसके ब्याह की तैयारी करने लगे मगर उस लड़की का ब्याह राजाबीरेन्द्रसिंह अपने लड़केसे करना चाहतेथे अस्तु दोनों राजाओंमें लड़ाई होगई जिसमें हमारे राजा साहब हार गए। इसपर धोखा दे उन्होने राजा बीरेन्द्रसिंह वगैरह को कैद कर लिया और इसी तहखाने में बन्द किया जिस पर उनके ऐयार बिगड़खड़े हुए, उन्होंने किले और शहरमें आग लगा दी, मेगजीन उड़ा दी, और दीवान रामानन्द को जान से मार डाला, अब उनकी फौज ने हमला कर दिया है और किले के चारो तरफ गहरी लड़ाई हो रही है।"

बूआ०। और तू इस वक्त यहां क्यों आई है?

मानकी०। लाली नामकी एक लड़की कुछ दिनोंसे यहां आई हुई है जो समय समय पर मुझसे कुछ सलाह लिया करती है। उसको मैंने इस तहखानेके बारेमें कई बातें बताईं थीं और उसकी मददके लिए यहां पर उसकी एक तस्वीर बना कर टांग दी थी यह बताने के लिए कि इस तस्वीर के फलां तरफ फलां बात है*। इस समय मैं उसी तस्वीर को यहांसे हटाने के लिए उतरी थी कि कहीं वह गैरों के हाथ न लग जाय और उसके सबब से उस लड़की पर कोई आंच न आ जाय। वह तस्वीर इसी दालानके बगल वाली कोठरियोंमें से एकमें टंगी हुई है।

बूआ०। खैर तू अब उसकी फिक्र छोड़ दे और जो मैं पूछती हूं सो बता।

मानकीने कहा, "जोहुक्म" और तब बूआजी तरह तरहकी बातें पूछनेलगीं।

मगर इनकी बातोंमें पुनः विघ्न पड़ा और शेरसिंह ने कहा, "मालूम होताहै फिर कोई आता है।" सभों ने अपनी आंखें पुनः छेदों में लगाईं और तुरन्त ही राजा दिग्विजयसिंह को देखा जो एक हाथ में नंगी तलवार और दूसरेमें मशाल लिए वहां आ मौजूद हुए थे। वे सीधे कैदियों वाले दालान की तरफ बढ़े मगर उसको खाली पा उनकी अजब हालत हो गई। वे पागलों की तरह न जाने क्या क्या बकने लगे और देर तक इधर उधर की कोठरियों में खोज ढूंढ़ करने और

* इस तस्वीर और लाली का हाल चन्द्रकान्ता सन्तति में पाठक पढ़ चुके हैं। देखिए चन्द्रकान्ता सन्तति चौथा भाग, दसवां बयान।

किसीको न पाने के बाद लाचार हो एक जगह खड़े हो कुछ सोचने लगे। इस समय उनकी आकृति देखनेसे साफ मालूम होता था कि वे बीरेन्द्रसिंह वगैरह को मार डालने की नीयत से यहां आएथे और उनको गायब पा बदहवास हो गये हैं। आखिर उन्होंने हाथ की मशाल एक तरफ फेंक दी और न जाने क्या क्या बकते हुए पुनः उधर ही को चले गये जिधर से आए थे।

बूआजी बोलीं, "जरूर यह कैदियों का खून करने आया था!!" शेरसिंह बोले, "मगर उनको छूट गया हुआ पा अपनी जिन्दगी से नाउम्मीद हो गये हैं, मुझे तो डर है कि कहीं अपनी जान न दे बैठें।" बूआजी बोलीं, "अच्छा ही होगा, एक दुष्ट के भार से पृथ्वी हलकी हो जायगी!" मगर शेरसिंहने गिड़गिड़ा कर कहा, "नहीं बूआजी ऐसा मत कहिए, ये चाहे जितने ही खराब हों मगरफिर भी अपने हैं।" बूआजी बोलीं, "तब तुम क्या करना चाहते हो?" शेरसिंह ने जवाब दिया, "इस समय दोनों तरहसे इनकी जान पर मुसीबत है। राजाबीरेन्द्र सिंह छूट गए हैं और जरूर इस किले पर कब्जा करेंगे, उस समय इनको जीता छोड़ देंगे यह उम्मीद मुझको नहीं है क्योंकि वे जितने दयालु और क्षमाशील हैं, दुष्टों और दगाबाजों के उतने ही बड़े दुश्मन भी हैं और अगर इन्होने ही लाचार हो अपनी जान पर वार कर लियातो भी कोई ताज्जुब नहीं।" बूआजीने जवाब दिया, "सो सब तो मैं समझी मगर आखिर तुम किया क्या चाहते हो?" शेरसिंह बोले, "मैं आपकी इजाजत चाहता हूं कि एकबार जाऊं और समझाबुझा इनको कायदे पर लाने की कोशिश करूं।" बूआजी ने जवाब दिया, "क्या तुम्हें अब भी उम्मीद है कि वह कायदे में आयेगा?" शेरसिंह बोले, "कोशिश करने में हर्ज ही क्या है?" बूआजी कुछ देर चुप रहीं, तब बोलीं, "अच्छा तुम जाओ, कोशिश कर देखो मगर बहुत देर न लगाना, इसी बीच में मैं भी एक काम कर डालती हूं और तब इसी जगह रुकी तुम्हारे लौटनेकीराहदेखूंगी।"

वही रास्ता जो बूआजी ने पहिले खोला था पुनः खोल दिया और शेरसिंह उस राह से बाहर निकल गए तथा उन्हीं के पीछे पीछे बूआजी भी निकल कर कहीं चली गईं।

बहुत देर बीत गई, बूआजी लौटकर आ भी गईं और मानकी से बातें करने लगीं मगर शेरसिंह वापस न आए। ऊपर से आनेवाली आवाजोंसे जाहिर हुआ कि लड़ाई और भी तेजी पर आ गई है। बूआजी के मुंह से निकला, "शेर को गये बहुत देर हो गई और वह अभी तक न लौटा, कहीं किसी मुसीबत में न पड़गया हो।" और मानो इसके जवाब में ही शेरसिंह की आवाज सुनाई पड़ी–

"मैं आ गया बूआजी !" उसी समय एक बड़ा गट्ठर पीठ पर उठाये शेरसिंह उस जगह आ मौजूद हुए। बूआजी ने पूछा, "इस गठरी में क्या ले आए तुम शेरसिंह ?" शेरसिंह ने जवाब दिया, "राजा साहब को बेहोश करके उठा लाया हूं। समझाने बुझाने से वे किसी भी तरह न माने और मरने मारने पर मुस्तैद हो गए इससे लाचार यही करना पड़ा।" बूआजी बोलीं, "तो इनको क्या करोगे अब?" शेरसिंह ने जवाब दिया, "आपसे अर्ज करूंगा कि इनको किसी हिफाजत की जगह बन्द कर दीजिए जहां कुछ दिन शान्तिसे रहने से शायद इनको अक्ल आ जाय और दिमाग ठिकाने हो !"

बूआजी के मुंह से निकला, "मगर ऊपर किले में...?" शेरसिंह बोले, "एक लाश इन्हीं की सूरत और पोशाक में छोड़ आया हूं। राजा बीरेन्द्रसिंह वगैरह जब महल में पहुंचेंगे तो यही समझेंगे कि इन्होंने आत्महत्या कर ली।" बूआजी कुछ देर तक चुप रहीं तब धीरे धीरे बोलीं, "यह बड़ा भारी दुष्ट है शेरसिंह !" शेरसिंह हाथ जोड़कर बोले, "बूआजी, नमक खा चुका हूं! अब इतनीही प्रार्थना है कि इनकी जान बख्श दी जावे !" बूआजी ने एक लम्बी सांस खींचीऔरकहा, "अच्छातोलेचलो इसे फिर उसी सिंहासन पर, मैं समझती हूं वह अभी तक वापस नहीं लौटा होगा, तिलिस्मके अन्दरही कोई ठिकाना इसके लिए खोजा जायगा।"

बूआजी उठ खड़ी हुईं और उस तरफ रवाना हुईं जिधर से यहां आई थीं और उनके पीछे पीछे बाकी के सब लोग भी चल पड़े। उस समय मैना ने धीरे से कहा, "मगर एक काम रहा जाता है।" बूआजी ने पूछा, "क्या काम ?" मैना बोली, "चौबीस नम्बर वाली कोठरी जिसमें रिक्तगन्थथा...!" बूआजीलम्बी सांस लेकर बोलीं, "मैं उस कोठरी में देख आई, वहां कुछ नहीं है, मालूम होता है कोई उस किताब को मार ले गया !"

सब कोई कुछ देर चुप रहे, इसके बाद बूआजी आगे बढ़ीं और सब लोग उनके पीछे पीछे रवाना हुए।

॥ पांचवां भाग समाप्त ॥

१४ वां संस्करण } १९८५ ई० { २२०० प्रति

लहरी प्रेस, बाराणसी।